ओ३म्

यथेमां वांच कल्याणीमावदानि जनेभ्य :।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।
(यजुर्वेद)

हे मनुष्यो ! जिस प्रकार मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने , पराये, सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण करने वाली वेदवाणी का उपदेश करता हूँ, उसी प्रकार तुम सब भी इसका ज्ञान प्राप्त करके अन्यों को उपदेश करो।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्मारिका

नांगलराया

ग्राम के 100 वर्ष 1912-2012

आर्यसमाज के 72 वर्ष 1940-2012

4 नवम्बर, 2012

मुख्य सम्पादक

भगवानदास

सम्पादक
डॉ० जयदेव वर्मा

मूल्य
100 रुपये

सम्पादक
पृतिपाल सिंह

प्रकाशक

आर्यसमाज नांगलराया

आर्यसमाज मार्ग, नांगलराया
नई दिल्ली — 110046

मुद्रक : ग्रेट प्रिन्टर्स
डब्लू जैड–82 ए, मोहन नगर, पंखा रोड़, नई दिल्ली – 110046 दूरभाष : 28520140

With Best Compliments From :-

Dr. V.K. Kataria

M.B.B.S., M.S. (Ortho)

Clinic : -

WZ-1247, Nangal Raya,
New Delhi- 110046
Ph. : 28525387

Residence:-

RZ-103, Gali No.1,
Main Sagar Pur, New Delhi- 110046
Ph. : 28526832

ॐ नमः शिवाय

With Best Compliments From :-

Rajeev Kaushik
Rajesh Kaushik

Tel/Fax : 91-11-28520198
Mob. : 9868920021

KMS

KAUSHIK MEDICAL STORE

Hospital & Institutional Supplier

Dealers of : Allopathic & Ayurvedic Medicines

Life Saving, Anti Cancer,
Indian Imported Medicines

Shop : WZ-11C, Lajwanti Garden, New Delhi-110046
Resi.: WZ-157, Lajwanti Garden, New Delhi- 110046
e-mail : kaushiklajwanti@yahoo.com
kaushikmedicalstores@yahoo.com

With Best Compliments From :-

MSM

Mittal
Super Market

Ajay Mittal, Vijay Mittal

General Goods • Confectionery • Cosmetics • Kirana Goods
Dry Fruit • Bakery Products • Juices & Soft Drinks • Gift Pack

Ph. :8505932681, 9312832793, 9811479622

Free Home Delivery

WZ- 1671/A, Jail Road, Nangal Raya
New Delhi-110046 (Near Goel Sons)

दिपावली
ऋषि निर्वाण उत्सव
एवं
नववर्ष 2013
की शुभ कामनायें

आर्यसमाज नांगलराया के सभी
सदस्यों की ओर से

ओ३म्

दो शब्द

दिन शुक्रवार दिनांक 20.1.2012 को आदरणीय भगवानदास जी ने अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया जिसके ब्रह्मा आचार्य भद्रकाम जी वर्णी थे। भगवानदास जी ने अपने कुछ संस्मरण सुनाए जिनको सुनकर आचार्य जी बहुत प्रभावित हुए और सुझाव दिया कि एक समारिका निकालनी चाहिए। भाग्यवश आर्यसमाज के लगभग सभी सदस्य विद्यमान थे और सभी ने इस सुझाव का स्वागत किया। इस विषय पर अंतरंग में चर्चा हुई और यह निर्णय हुआ कि नांगल ग्राम को पुरानी नांगल से वर्तमान नांगल में आए भी 100 वर्ष हो गए हैं और आर्यसमाज की स्थापना के भी 72 वर्ष से अधिक हो गए हैं। विचार विमर्श के बाद निश्चय हुआ कि नांगलराय ग्राम का इतिहास और आर्यसमाज की विभूतियों का परिचय भी इस स्मारिका में दिया जाए। ग्राम की विभूतियों का – जिनका ग्राम के विकास, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक साहित्यिक और अन्य क्षेत्रों में योगदान है उन सब का इस में जीवन परिचय और उपलब्धियों का विवरण हो।

लेखन का कार्य श्री भगवानदास जी को मुख्य सम्पादक के तौर पर सौंपा गया। आप विद्वान के अतिरिक्त सम्पादन कार्य के महारथी हैं। आप को नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका ''पालिका समाचार'' (हिन्दी, उर्दू, पंजाबी) के सहायक एवं सम्पादक का कार्य लगभग 20 वर्ष से अधिक कार्य का विशाल अनुभव है। श्री भगवानदास जी का विवाह 18.06.1953 को नांगलराय के सामाजिक एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था तब ही से उनका नांगलराय ग्राम एवं आर्यसमाज से सम्बन्ध रहा है। लगभग 20 वर्ष भगवानदास जी का आर्यसमाज परिसर में ही निवास रहा। मुझे नहीं लगता कि उनसे अधिक जानकारी किसी और के पास हो सकती है। वह ग्राम के बारे में हो या आर्यसमाज नांगलराय के बारे में। इस स्मारिका के अधिकांश लेखों के लिखने, शोधन व प्रूफ रीडिंग के गुरूतर कार्य का निर्वहन भी इन्होंने किया है।

आर्यसमाज नांगलराय का सबसे पुराना दस्तावेज दिनांक 3.6.1943 आर्यसमाज की भूमि खरीदने की रसीद है जो मूलतः उर्दू में है जिसका हिन्दी अनुवाद करा दिया गया है। यह रसीद सौभाग्य से मेरे पूज्य पिताजी स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा जी ने मुझे दी थी। इसमें उस समय के संस्थापक सदस्यों के नाम दिए हुए हैं जो निम्नलिखित हैं :–

चौ० मीर सिंह, छज्जू सिंह, गंगा सहाय, रामजी दास, युधिष्ठिर वर्मा।

रसीद में संस्थापक सदस्यों में से श्री विधिचन्द, युधिष्ठिर वर्मा, देव दत्त वर्मा, हरजस नम्बरदार, चौ० सीसराम के हस्ताक्षर या अंगूठे के निशान हैं।

स्मारिका में अधिक से अधिक जानकारी व्यक्तिगत रूप से जाकर बहुत से ग्राम वासियों से एकत्र करने का पूरा प्रयास किया गया है। इसमें किसी प्रकार भेद भाव किसी भी वर्ग, जाति, क्षेत्र का न करने का पूरा प्रयास किया गया है।

मैं अपनी ओर से और सभी सदस्यों की ओर से सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने किसी भी प्रकार का योगदान इस कठिन कार्य को पूरा करने में दिया है। मैं व्यक्तिगत रूप से डॉ० अजय आर्य का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने आर्यवीर दल का पुनरूद्धार करने और सुचारू रूप से उसे चलाने और प्रगति के राह पर लाने का कार्य किया। इसी कड़ी में उन्होंने आर्यसमाज के परिसर में रहते हुए वर्ष 2004 में ''सर्वोत्कर्ष'' नाम से एक निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ किया। इस सब की जानकारी विस्तृत से डॉ० अजय आर्य के लेख में दी गई है।

विशेष आभार श्री नरेश राणा सी.ए. का भी करता हूँ जो आर्यसमाज का लेखा जोखा का ब्योरा वर्ष 1997 से निःशुल्क लगातार करते आ रहे हैं। आप समाज के कार्यक्रमों में रूचि भी लेते हैं एवं योगदान एवं मार्गदर्शन भी करते हैं। धार्मिक कार्यों में आपकी गहरी रूचि है।

यह भी हमारा सौभाग्य रहा और हमारे लिये गर्व की बात है कि इस आर्यसमाज से संस्कार प्राप्त कर इस समाज की आर्यकुमार सभा को 1956 में स्थापित कर उसका संचालन करने वाले आर्ययुवक श्री पृथ्वी राज साहनी दिल्ली के महापौर पद पर पहुँचे और उन्होंने अपने संस्मरण रूप में हमें एक लेख भी भेजा है जिसे स्मारिका में शामिल किया गया है। मैं श्री साहनी जी का भी आभार प्रकट करता हूँ।

मैं एक बार फिर सभी सहयोगियों, विज्ञापनदाताओं और इसके प्रकाशन में आर्थिक योगदान देने वाले दानी महानुभाव और सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करता हूँ और त्रुटियों के लिए क्षमा मांगता हूँ।

— डॉ० जयदेव वर्मा
प्रधान

4.11.2012

प्राक्कथन

प्रस्तुत स्मारिका का बीजारोपण वास्तव में आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के उन प्रेरणास्पद विचारों से हुआ जो उन्होंने आर्यसमाज नांगलराय के अधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति में मेरे जीवन के 75 वर्ष पूर्व होने के उपलक्ष में मेरे निवास स्थान पर यज्ञ के उपरान्त किये गये प्रवचन में कहे। पुरानी नांगल के गाँव और उसकी कृषिभूमि (रिवाड़ी लाइन के पूर्व की ओर) का अंग्रेज सरकार द्वारा अधिग्रहण करने के बाद रेलवे लाइन के पश्चिम में अपनी कृषिभूमि में अस्थायी निवास बनाकर बसे नांगलराय के 100 वर्ष 1912 में पूरे होने की तथा नांगलराया आर्यसमाज के 72 वर्ष पूरे होने की चर्चा के साथ जब मैंने अपने जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग सुनाये तो उनके परिप्रेक्ष्य में आचार्य जी ने आर्यसमाज की एक स्मारिका प्रकाशित करने का सुझाव दिया जिसे आर्यसमाज नांगलराय के यशस्वी प्रधान डॉ० जयदेव वर्मा और उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों ने स्वीकार कर इस स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया। उसी विचार को कार्यान्वित करने के लिये इस स्मारिका का प्रकाशन सम्भव हो पाया है। इस पुरूषार्थ में आर्यसमाज नांगलराय के प्रधान डॉ जयदेव वर्मा का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। आर्यसमाज के सभी अधिकारी, सदस्य, नांगलराय के निवासियों, अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं, नांगल राया व्यापार मण्डल, विज्ञापनों द्वारा सहयोग देने वाले तथा दान देने वाले महानुभाव के योगदान के बिना यह कार्य सम्भव ने हो पाता। स्मारिका का प्रकाशन कितना उपयोगी व सफल होगा यह तो इसके पाठकों द्वारा ही तय हो पायेगा। इसकी सफलता का श्रेय सभी सहयोगियों को जायेगा।

— भगवान दास
मुख्य सम्पादक

4.11.2012

सम्पादक समिति

1.	भगवान दास	मुख्य सम्पादक	
2.	डा० जयदेव वर्मा	प्रधान	सम्पादक
3.	पृतिपाल सिंह	मंत्री	सम्पादक
4.	राजपाल सिंह	कोषाध्यक्ष	
5.	राजेश प्रसाद शर्मा	उप मंत्री	
6.	रामदास आर्य	अधिष्ठाता आर्यवीर दल	
7.	जगमाल सिंह यादव	अंतरंग सभासद	
8.	प्रभाष गुप्ता	अंतरंग सभासद	
9.	आजाद सिंह	अंतरंग सभासद	

आर्यसमाज नांगलराया

अधिकारी व कार्यकारिणी सदस्यों की सूची वर्ष 2012-13

क्रमांक	नाम	पदनाम	दूरभाष / चलभाष
1.	डा. जयदेव वर्मा	प्रधान	28111030 9350904627
2.	श्री देवदत्त शर्मा	उपप्रधान	28112079
3.	श्री पृतिपाल सिंह	मन्त्री	28526440 9810035394
4.	श्री राजपाल सिंह	कोषाध्यक्ष	28520592 9868905704
5.	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	उप मन्त्री	25031043 9811583131
6.	श्री ओम प्रकाश प्रेमी	उप मन्त्री	28520321 9871569219
7.	श्री रामदास आर्य	अधिष्ठाता आर्यवीर दल	9911696645
8.	श्री जगमाल सिंह यादव	अन्तरंग सभासद	28520861
9.	श्री भगवान दास	अन्तरंग सभासद	28524068 9213494923
11.	श्री सन्दीप	अन्तरंग सभासद	
12.	श्री रमेश तँवर	अन्तरंग सभासद	9811466010
13.	श्री प्रभाष गुप्ता	अन्तरंग सभासद	9810963933
14.	श्री मेधावी तँवर	अन्तरंग सभासद	9811102393
15.	श्रीमती कमलेश	अन्तरंग सभासद	9873370981

गायत्री मन्त्र व अर्थ

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

तूने हमें उत्पन्न किया,
पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम,
दुखियों के कष्ट हरता है तू।।

तेरा महान् तेज है,
छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु–वस्तु में,
तू हो रहा है विद्यमान्।।

तेरा ही धरते ध्यान हम,
माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को,
श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

महर्षि दयानन्द का दर्शन

23.12.1902-29.05-1987

चौधरी चरण सिंह

भूतपूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार

चौधरी साहेब महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, सरदार बल्लभ भाई पटेल तथा रविन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित थे लेकिन महर्षि दयानन्द उनके चिन्तन में सर्वोपरि थे। चौधरी साहेब पाखण्ड, अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता के घोर विरोधी थे। वे युवास्था में आर्यसमाज के सिद्धान्तों से परिचित हुए तथा ऋषि दयानन्द के पक्के भक्त बन गये। सन् 1925 में चौधरी साहेब का विवाह गायत्री देवी के साथ सम्पन्न हुआ। ये दोनों परिवार इसलिए मिले कि दोनों प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे। चौधरी साहेब स्वामीजी के विचारों को अपने जीवन में उतारने का पूरा प्रयत्न करते थे। अपनी तीनों पुत्रियों का उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह किया। उनका रसोइया भी एक हरिजन था।

मेरठ तथा गाजियाबाद में वकालत करते समय ही वे इस नगर की आर्यसमाज में मंत्री बने तथा साप्ताहिक सत्संगों में निरन्तर उपस्थित रहते थे। ये महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गांधी के राष्ट्रवादी विचार ही थे जिन्होंने चौधरी साहेब को राजनीति में भाग लेने के लिये प्रेरित किया।

"स्वामी जी की अनेक उपलब्धियों में से एक प्रमुख उपलब्धि हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप सांस्कृतिक तथा संगठनात्मक आधार प्रस्तुत करना था। यह इसलिए संभव हो सका था कि उनकी सीमातीत शक्ति एवं कुशाग्र बुद्धि केवल वैयक्तिक मोक्ष की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील नहीं थी, वरन वह अपने समाज के शारीरिक, नैतिक, भौतिक, तथा धार्मिक उत्थान की दिशा में संलग्न थी"।

चौधरी साहब सन् 1949 से 1952 तक अखिल भारतीय आर्यकुमार परिषद के प्रधान रहे। सन् 1979 में परोपकारी सभा के प्रधान रहे। अक्टूबर 1979 में पानीपत में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी में पधारे। उन्होंने कहा मैं निष्ठावान आर्यसमाजी हूँ तथा रहूँगा। मैं दयानन्द तथा आर्यसमाज की प्रशंसा करने में अपने आप मैं गौरव का अनुभव करता हूँ। उन्होंने तर्कपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक विवेचन करते हुए सत्यार्थप्रकाश सम्मत व्याख्यान करते हुए हिन्दु धर्म के पतन के कारण गिनाते हुए कहा कि जातिप्रथा के कारण विदेशी शक्तियों के सामने बलहीन होकर भारत को पराजय का सामना करना पड़ा।

जब वे गृहमंत्री थे उन्होंने दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा गुजरात के दर्शन किये तथा महर्षि दयानन्द संग्रहालय तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित स्थानों को देखकर भावविभोर हो गये तथा महर्षि स्मारक को 5 हजार रूपये भेंट स्वरूप दिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म शताब्दी वर्ष 1983 में चौधरी चरण सिंह ने स्वामी जी के जीवन दर्शन और चिन्तन पर आधारित लेख लिखा जिसमें उन्होंने

जातिवादी व्यवस्था, नारी वर्ग के समान अधिकार, सामाजिक अन्याय, समान शिक्षा का जन्मसिद्ध अधिकार तथा राष्ट्रभाषा की समस्या पर करारे सवाल उठाए जिन पर स्वामी जी ने स्पष्ट विचार व्यक्त किये थे। चौधरी साहेब ने संकेत दिया कि आज हम स्वामी जी के बताये मार्ग से भटक गये। इन अन्धकारमयी परिस्थितियों में स्वामी जी का उदाहरण एक सुदृढ़ प्रकाश स्तंभ के समान मौजूद है और वह उनका मार्ग दर्शन कर रहा है जिनमें उस मार्ग पर चलने का साहस तथा विश्वास है।

तेजपाल सिंह, एम. एस सी (फीजिक्स)
डी2ए/95ए, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058
दूरभाष : 9968309443

मामचन्द रिवारिया

आर्यसमाज के नेता का लेख

''घटना उस समय की है जब भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति स्वनामधन्य श्री घनश्याम दास बिड़ला का देहावसान हो गया था और दिल्ली नागरिक परिषद ने उनकी स्मृति में एक शोकसभा का आयोजन फिक्की हाल, नई दिल्ली में किया था। इस अवसर पर वक्ता थे सर्वश्री चौधरी चरणसिंह, अटल बिहारी वाजपेयी, डा० कर्णसिंह, हेमवती नन्दन बहुगुणा तथा बलराज मधोक। संचालक महोदय ने एक–एक करके सभी वक्ताओं से कहा कि वे स्वर्गीय बिड़ला जी की मूर्ति पर माल्यार्पण करें, सभी ने एक–एक करके उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण किया। जब चौधरी चरण सिंह से माल्यार्पण हेतु कहा गया तो उन्होंने मूर्ति पर माल्यार्पण नहीं किया। हाल में बैठे हुए कुछ श्रोतागण ने कहा कि देखो ये चौधरी भी कितना घमण्डी है। मैं भी इन्हीं श्रोताओं के बीच में बैठा हुआ था और मैं चौधरी साहब के प्रति ऐसे विचार नहीं सुन सका। मैंने उन व्यक्तियों से कहा कि चौधरी साहब ने घमण्ड के कारण नहीं, बल्कि आर्य विचारधारा से सम्बन्धित होने के कारण बिड़ला जी की मूर्ति पर माल्यार्पण नहीं किया। आर्यसमाज इसे वेद विरूद्ध मानता है। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ और सभी नेतागण हाल से बाहर आ गये तब मैंने चुपचाप एक स्लिप पर यह लिखा ''आदरणीय चौधरी साहब, मैं समस्त आर्य जनों की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूँ क्योंकि आपने आर्यसमाज के सिद्धान्त की रक्षा की है।'' यह लिख कर वह चिट मैंने चुपचाप चौधरी साहब को देकर एक किनारे खड़ा हो गया। चौधरी साहब ने उस चिट को पढ़कर खड़े हुए लोगों से पूछा कि मामचन्द रिवारिया कौन से हैं? मेरा नाम सुन कर श्री बलराज मधोक ने कहा कि मामचन्द रिवारिया तो ये खड़े हैं। तब चौधरी साहब ने कहा कि इतनी बड़ी भीड़ में एक ने तो मेरे आर्य होने की प्रशंसा की। उन्होंने मेरा धन्यवाद किया और उस चिट को अपनी जेब में रख लिया। आज भी मैं उस घटना को याद कर रोमांचित हो उठता हूँ।

स्वामी दयानन्द का सच्चा भक्त वही है जो किसी भी कीमत पर सिद्धान्तों से समझौता नहीं करता है। संसार में उन्हीं महापुरूषों की परमगाथा को गाया जाता है जो सिद्धान्तों पर चट्टान की तरह अडिग रहते हैं। •

– मामचन्द रिवारिया

P. R. Sawhney
EX-MAYOR OF DELHI

शुभकामना संदेश

आदरणीय वर्मा जी

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि "आर्यसमाज नांगलराया" द्वारा गॉव व आर्य समाज, नांगल राया के इतिहास के बारे में स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है । नांगलराया गॉव का 100 वर्ष का इतिहास एंव आर्य समाज के 75 वर्ष की जानकारी इस स्मारिका के माध्यम से लोगों तक पहुँचेगी !

नांगलराया गांव एवं आर्य समाज का अपना गौरवमयी इतिहास है जिसकी जानकारी नई पीढ़ी को मिलनी चाहिए । मैं स्वंय 1948 से नांगलराया गांव एवं आर्यसमाज से जुड़ा हुआ हुँ ।

मेरी ओर से इस स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

पृथ्वी राज साहनी

डा० जयदेव वर्मा
प्रधान, आर्य समाज नांगल राया

C-3/337, Janak Puri, New Delhi-110058
Phone Res.: 25593865 Mob. : 9818170318

Karan Singh Tanwar
MLA & Member, NDMC

सत्यमेव जयते

NEW DELHI MUNICIPAL COUNCIL
3rd Floor, Palika Kendra, Sansad Marg,
New Delhi-110001
Tel. : (O) 23361937, 41501353-60 / 2511
Mobile : 9810996000
E-mail : tanwar_ks@yahoo.in

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि **"आर्य समाज नांगलराया"** द्वारा **"स्मारिका"** का प्रकाशन किया जा रहा है। चूंकि नांगलराया गॉव को बसे लगभग 100 वर्ष एवं आर्यसमाज की स्थापना को 75 वर्ष होने वाले हैं, यह अपने आप में हर्ष का विषय बना हुआ है। स्मारिका के प्रकाशन से उपरोक्त गॉव एवं आर्यसमाज के बारे में लोग अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर सकेंगे एवं इसके विकास/उत्थान के लिये सदैव प्रयत्नरत रहेंगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका जनहित में जारी होकर समाज के उत्थान एवं विकास में एक अहम् भूमिका अदा करेगी। इसके सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(करण सिंह तंवर)

डा0 जयदेव वर्मा,
प्रधान,
आर्यसमाज नांगलराया - पंजी0
आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली- 110046

Res. : CB-77A, Ring Road, Naraina, New Delhi-110028 Ph. : 011-25778787 Fax : 25778484

प्रद्युम्न राजपूत
सदस्य, दिल्ली विधान सभा

Parduymn Rajput

MEMBER

Delhi Legislative Assembly

सत्यमेव जयते

आर.जैड–16ए / 15बी, गली नं0–2,
मेन सागरपुर, पालम रोड़, नई दिल्ली–46
दूरभाष: 011-28526838, 28522116

RZ-16A/15B, GALI N0. 2,
MAIN SAGARPUR,
PALAM ROAD, NEW DELHI-110046
Phone: 011-28526838, 28522116

Mobile: 9810295952
E-Mail : parduymnrajput@ymail.com

Ref. No.....

Date .....

शुभकामना संदेश

डा. जयदेव वर्मा जी,

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आर्य समाज – नांगलराया द्वारा आर्यसमाज और नागंलराया गांव के विषय में एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है । जैसा कि ज्ञातव्य है कि पुराना नांगलराया गाँव की भूमि का अधिग्रहण वर्ष 1912 में हुआ और यहाँ के निवासी रेलवे लाईन के पश्चिम में अपनी कृषिभूमि पर पुनर्वासित हुए ओर वर्तमान नांगलराया में निवास कर रहे है। नांगलराया आर्यसमाज की स्थापना वर्ष 1939–40 में हुई । आर्य समाज की स्थापना के बाद गांव के लोगों के सांस्कुतिक आचरण में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है । आर्य समाज से सम्बद्व महानुभवों के विचारों के प्रसार के कारण विभिन्न सामाजिक कुरितियों और आडम्बरों से लोगों का मोहभंग हुआ है । घर–घर में हवन होते रहे हैं । 3 जून 1943 में चौ0 तुलसीराम जी (जो बाद में तेड़ा गाँव में रहने लगे) का खेत जिसका क्षेत्रफल लगभग 2000 गज है, 1050 रू. में खरीदा गया और उसमें भवन बनाकर भवन का शुभारम्भ सन 1945 में किया गया ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य समाज द्वारा प्रकाशित होने वाली इस स्मारिका से नागंल राया गांव के गौरवशाली इतिहास एवं आर्य समाज से जूडे महानुभवों के प्रेरणादायी आदर्श उदबोधनों से आज की पीढी अवगत होगी और अपने जीवन को भी एक आदर्श जीवन बनाने की दिशा की ओर अग्रसर होगी ।

अत्यन्त शुभकामनाओं सहित,

डा0 जयदेव वर्मा,
प्रधान–आर्यसमाज, नांगलराया

प्रद्युम्न राजपूत

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

✡ ओ३म् ✡

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक :..... दिनांक : .....

ब्र.राजसिंह आर्य

संदेश

सदियों के घोर अन्धकार के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आकर 'वेदों की ओर लौटो 'का नारा देकर एक नई राह दिखाई ताकि यह मानव भटकाव से बचकर अपने मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिये बढ़ सके तथा यह कार्य निरन्तर चलता रहे,इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य समाज ने स्थापना काल से ही स्थापित अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध एक शंखनाद किया। फलस्वरूप जहां एक ओर आर्य समाज के संगठन का विस्तार हुआ वहीं अवैदिक परम्परा,कुरीतियों तथा अंधविश्वासों का स्थान तर्कपूर्ण आचरण ने ले लिया। भारत की आजादी तथा शिक्षा में आर्य समाज ने क्रान्तिकारी मार्गदर्शन दिया।

इसी प्रकार आर्य समाज नांगलराया ने निरन्तर राष्ट्र तथा समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थापना से अब तक विश्व के परिदृश्य में अनेक परिवर्तन आ चुके हैं, तथा वे निरन्तर जारी हैं। हमें इन परिवर्तनों के अनुरूप अपने आपको मोड़ना होगा ताकि हम आने वाली चुनौतियों का सामना संगठित होकर कर सकें। किसी भी संगठन की शक्ति उसके मार्गदर्शक एवं कार्यकर्ता होते हैं और उनका आदेश पाकर ही हम तद्नुरूप कार्य कर सकते हैं। ताकि हम आने वाली पीढ़ी के समक्ष आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य को रख सकें जिससे स्वस्थ मार्ग प्रशस्त हो सके और यह नारा हमारे कार्यो में निरन्तर गूंजता रहे **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**।

आर्य समाज नांगलराया द्वारा प्रकाशित होने वाली स्मारिका हेतु मेरी बहुत बहुत शुभमामनाओं सहित,

(ब्र.राजसिंह आर्य)
प्रधान, मो० : 9350077858

सेवा में,

प्रधान जी / मन्त्री जी
आर्य समाज नांगलराया
नई दिल्ली - 110046

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

✡ ओ३म् ✡

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५—हनुमान् रोड, नई दिल्ली — ११०००१

क्रमांक :..... दिनांक : .....

विनय आर्य

संदेश

यह जानकर मुझें अति प्रसन्नता हुई की, आर्य समाज नांगलराया को स्थापित हुये लगभग 75 वर्ष एवं नांगलराया गॉव को बसे 100 वर्ष पूरे हो चुके हैं। तथा इस शुभअवसर पर आप एक स्मारिका प्रकाशित कर रहें हैं। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आर्य समाज नांगलराया अपने स्थापना के समय से ही महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरुप कार्य करते हुये निरन्तर प्रचार-प्रसार में लगा हुआ हैं।यहॉ पर आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल की नियमित शाखाएँ लगती रही हैं, तथा अनेक आर्यवीर एवं आर्यवीरागनाएँ तैयार होकर समाज के सामाजिक कार्यो में समर्पित रूप से कार्य कर रहे हैं।

मैं आशा करता हूँ की आर्य समाज नांगलराया पूरे उत्साह पूर्वक इसी प्रकार महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलते हुए समाज में फैली हुई कुरीतियों,पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को दूर कर कृण्वन्तो विश्वमार्यम के नारे की सफलता की ओर अग्रसर होगा।

पुनः शुभमामनाओं सहित,

(विनय आर्य)
महामन्त्री, मो० : 9958174441

सेवा में,

प्रधान जी / मन्त्री जी
आर्य समाज नांगलराया
नई दिल्ली - 110046

सार्वदेशिक आर्यवीर दल

सन्देश

सनातन वैदिक धर्म के मूल स्वरूप के दिग्दर्शन के सतत प्रचार में संलिप्त रहने वाले आर्यसमाज का मूल उद्देश्य जन जन में फैले रूढीवादी पाखण्ड और कुरीतिओं को समूल नष्ट करने का रहा है। अपने इस उद्देश्य के साथ-साथ भारतीय पर्वों, देश और समाज के भीतर विभिन्न काल में घटित घटनाओं के महत्त्व से सम्बन्धित जयन्ती, वर्षगांठ और शताब्दिओं को भी सदैव मनाकर भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करने में आर्यसमाज की महती भूमिका रही है। आर्यसमाज, नांगल राया द्वारा भी इसी मास में अपने स्थानीय आर्यसमाज की स्थापना की ७५वी वर्षगांठ के साथ-साथ नांगल राया गाँव के बसाए जाने की शताब्दी का आयोजन किया जा रहा है। हमारे संज्ञान में यह भी लाया गया कि इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन भी करवाया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल इस कृत्य के लिए आर्यसमाज नांगल राया के समस्त अधिकारीयों एवं सदस्यों के प्रति मंगलकामनाओं सहित दल की ओर से हार्दिक साधुवाद एवं बधाई का यह सन्देश प्रेषित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि आर्यसमाज नांगल राया भावी वर्षों में भी नई ऊर्जा के साथ उत्साहपूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन इसी प्रकार करता रहे।

[आजादसिंह]

उप प्रधान संचालक

चलभाष: ९६५०८९७५४४

ईमेल:sarvdeshikavd@gmail.com

मान्य प्रधान जी

आर्यसमाज नांगल राया,

नई दिल्ली-110046

राधिका सेतिया

अध्यक्षा :

शिकायत निवारण समिति

सदस्या :

1. विशेष (निर्माण) समिति
2. विशेष (विधि एवं सामान्य प्रयोजन) समिति
3. तदर्थ (सामुदायिक सेवाएं) समिति
4. तदर्थ (महिला कल्याण एवं बाल विकास) समिति

दक्षिणी दिल्ली नगर निगम

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (दिल्ली सरकार)

मो. : 8130892110
9958784709
ई–मेल : setiaradhika@gmail.com

कार्यालय : कमरा नं. 103
डॉ. एस.पी.एम. सिविक सेन्टर
जे.एल.एन. मार्ग, नई दिल्ली–110002

निवास : डी–1/2, जनकपुरी
नई दिल्ली–110058

क्रमांक : .....

दिनांक : .....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि 'आर्यसमाज नांगल राया' एक भव्य एवं वृहद स्मारिका का विमोचन करने जा रहा है जिसमें क्षेत्र की स्थिति आर्यसमाज की भूमिका, इतिहास की जानकारी उपलब्ध रहेगी।

सर्वजनहिताय यह प्रयत्न प्रशंसा के योग्य है।

इस पावन अवसर पर मैं आर्यसमाज नांगल राया के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को बधाई देती हूँ जिनके सद्प्रयास से यह अनूठा व उपयोगी कार्य सम्मान हो सका।

Radhika

राधिका सेतिया
निगम पार्षद

विषय सूची

	विषय		पृष्ट सं०
1.	**नांगलराया गाँव-अतीत एवं वर्तमान**		1–7
	नांगलराया गाँव की पृष्ठभूमि		1
	नांगलराया गाँव में ब्राह्मण समाज का योगदान	शिव कुमार शर्मा	6
	जयति वेद अनुपम (कविता)	भगवानदास	7
2.	**नांगलराया गाँव की विभूतियाँ-दिवंगत एवं वर्तमान**		8–36
	स्व० चौ० माड़े सिंह	डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा	8
	स्व० चौ० भूप सिंह तँवर		9
	स्व० श्री लोकवीर सिंह तँवर		11
	स्व० पं० विष्णुदत्त शर्मा		13
	स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तँवर	भगवानदास	14
	स्व० पं० रामस्वरूप		17
	स्व० श्री सदाराम		18
	पाकिस्तान से निर्वासित हिन्दुओं का नांगलराया में पुनर्वास	पृथ्वीराज साहनी	19
	श्री महेशचन्द	परिचय	21
	निर्भीक योद्धा स्व० भंवर सिंह राजपूत	डॉ० मालती वर्मा	22
	द्वारका क्षेत्र के विधायक–श्री प्रद्युम्न राजपूत	डॉ० मालती वर्मा	26
	आदर्श शिक्षक–स्व० पं० शिवदत्त शर्मा		30
	मेजर जनरल–श्री श्रीदत्त शर्मा		30
	स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा, श्रीमती शुभा वर्मा		31
	मेजर जनरल श्री अनिल वर्मा		32
	ए.सी.पी स्व० श्री बाल किशन तँवर		33
	कर्नल स्व० श्री सुरेन्द्रसिंह तँवर		34
	श्री नरेश कुमार राणा, श्री राम नारायण		35
	स्वतन्त्रता सेनानी श्री के. के. भाटिया		36
3.	**नांगलराया गाँव के प्रबुद्ध साहित्यकार**		37–45
	पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन		37
	स्त्री गौरव–डॉ० मालती	भगवानदास	38
	आर्यसमाज जिनका प्रेरणास्रोत–श्री भगवानदास	डॉ० जयदेव वर्मा	40
	स्व० श्री रोहताश तँवर		43
	श्री तेजपाल सिंह		45
4.	**आर्यसमाज नांगलराया के 72 वर्ष**		46–65
	आर्यसमाज नांगलराया : एक संक्षिप्त परिचय		46
	नांगलराया के विकास में आर्यसमाज का योगदान	प्रभाषचन्द्र गुप्ता	51
	गुजरात भूकम्प और आर्यसमाज नांगलराया	ओमप्रकाश प्रेमी	52
	यज्ञ के साकार रूप–महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ	आजाद सिंह	55
	एक संस्मरण – श्री सुरेन्द्र कपूर		59
	खोजता फिरा (गीत)	भगवानदास	60
	मैं और आर्यसमाज नांगलराया	डॉ० अजय आर्य	61

5.	**आर्यसमाज नांगलराया के दिवंगत एवं वर्तमान सदस्य**		66–101
	आर्यसमाज के संस्थापक सदस्य–स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	डॉ० जयदेव वर्मा	67
	स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	श्रीमती कमलेश	69
	संस्थापक सदस्य–स्व० श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार	भगवानदास	71
	संस्कार धुरन्धर : स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री	भगवानदास	72
	स्व० श्री सूरजभान गुप्ता–स्व० सूबेदार चन्नीलाल वाही		73
	स्व० श्री तोखराम, स्व० श्री गुरदयाल, स्व० श्रीमती सुरजो		74
	मेरे पिता स्व० श्री बाबू रूपचन्द	रामकिशन सिंह	75
	मेरे पिता स्व० श्री कन्हैया लाल साँवरे	ओमप्रकाश प्रेमी	76
	स्व० श्री जयप्रकाश वर्मा		77
	दयानन्द भक्त स्व० श्री चौथूराम डुडेजा	श्रीमती प्रभा	78
	स्व० श्री शिवनारायण सिंह	राजपाल सिंह	80
	स्व० महाशय देवी सिंह आर्य		81
	स्व० साधुराम नारंग		82
	स्व० श्री पृथ्वीराज वर्मा, स्व० चौ० रामचन्द्र		83
	स्व० श्री लेखराज, स्व० डॉ० भागमल शर्मा, स्व० मा० ईश्वर सिंह		84
	स्व० श्री विष्णुस्वरूप वर्मा		85
	श्री जगमाल सिंह यादव, श्री देवदत्त शर्मा		86
	श्री आजाद सिंह		87
	श्री राजपाल सिंह		88
	श्री पृतिपाल सिंह		90
	डॉ० जयदेव वर्मा		91
	श्री अशोक कुमार तँवर		92
	श्री राजपाल सिंह डुडेजा		93
	श्री ओमप्रकाश प्रेमी		94
	श्री राजेश प्रशाद शर्मा, श्री प्रभाष चन्द्र गुप्ता		96
	श्री लोकेश कुमार, श्री रामकिशन सिंह		97
	श्री रामदास आर्य		98
	पूर्व सांख्यिकीय निदेशक – श्री सेवानन्द		99
	श्री कृष्णपाल, मेजर जनरल श्री राजेन्द्र सिंह तँवर		100
	श्री विनोद कुमार, चौ० अमर सिंह		101

ओ३म्

नांगलराया गाँव
अतीत और वर्तमान
100 वर्ष

नांगल राया गाँव की पृष्ठभूमि

दिल्ली छावनी क्षेत्र के पश्चिमी छोर पर दिल्ली छावनी रेलवे स्टेशन के समीप दिल्ली–रेवाड़ी रेलवे लाइन के समानान्तर सटे हुए गाँव नांगल राया का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इस गाँव के निवासी पुरानी नांगल गाँव से पुनर्वासित होकर यहाँ बसे थे। पुराना नांगल गाँव दिल्ली–रेवाडी लाइन के पूर्व में स्थित था। भारत सरकार के आदेशानुसार पुराने नांगल गाँव तथा इसकी कृषिभूमि का दिसम्बर 1911 में अधिग्रहण कर लिया गया था। जिसका उद्देश्य निम्नांकित था।

'9 अगस्त 1911 को भारत सरकार के सचिव ए. इर्ले ने गृहविभाग के द्वारा शिमला से एक प्रस्ताव का हवाला देते हुए कहा कि 11 मार्च, 1911 को महामहिम सम्राट ने एक शाही फरमान जारी करके अपनी इच्छा व्यक्त की है कि दिल्ली में राज्याभिषेक के लिये दरबार लगाया जाए।'

'25 अगस्त 1911 को राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने के लिये गवर्नर ने भारत के लिये अपने साम्राज्य के सचिवों की एक परिषद में कहा– 'भौगोलिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक आधारों पर भारतीय साम्राज्य की राजधानी दिल्ली में होनी चाहिए और दिल्ली में अगले शाही दरबार या महामहिम सम्राट द्वारा स्वयं ही होनी चाहिए।'

कोंसिल में गर्वनर जनरल ने कहा कि महामहिम सम्राट 7 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में प्रवेश करेंगे तथा मंगलवार 12 दिसम्बर 1911 को राज्याभिषेक होगा, इस दिन पूरे देश में छुट्टी घोषित होगी। आखिर 12 दिसम्बर 1911 को राजधानी का स्थानान्तरण कलकत्ता से दिल्ली हो गया। तब दिल्ली पंजाब प्रान्त की एक तहसील थी। पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल ने सार्वजनिक निर्माण कार्यों तथा दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने के लिये भूमि अधिग्रहण की घोषणा भूमि अधिग्रहण एक्ट 1894 की धारा 6 और 7 के अन्तर्गत दिल्ली तहसील के कलैक्टर को कई गांवों की भूमि अधिग्रहण करने के लिये कहा गया।

15 दिसम्बर, 1911 को सम्राट एवं सम्राज्ञी ने दो साधारण आधारशिलायें रखकर नई राजधानी का शिलान्यास किया। इस तरह दिल्ली के हाथ में समस्त भारत के शासन की बागडोर आ गयी। 1912 में पुराने सिविल स्टेशन में ब्रिटिश शासन का कार्यालय खोला गया। आज का पुराना सचिवालय ही तब राजधानी का अस्थायी कार्यालय था। इस अस्थायी राजधानी के निर्माण पर चार लाख रूपये खर्च हुए। नई राजधानी के निर्माण के लिये नई दिल्ली नगर योजना समिति बनाई गई जिसमें जाने माने वास्तुविद सर एडविस लुटियंस भी सदस्य थे। रायसीना पहाड़ी नई राजधानी के निर्माण के लिये चुनी गई।

नई राजधानी बनाने के लिये पंजाब के उपराज्यपाल से दिल्ली तथा बल्लभगढ़ जिले के 128 गाँवों की एक लाख 15 हजार एकड़ भूमि अधिग्रहित करने के लिये कहा। भूमि अधिग्रहण की धारा 9 के अधीन लगभग 85 हजार भू–स्वामियों को नोटिस भेजे गए। पंजाब प्रान्त के राजस्व एवं कृषि जनरल ने लाहौर से 21 दिसम्बर 1911 को एक अधिसूचना में जिन गाँवों की भूमि अधिग्रहण के लिये 1894 के एक्ट 1 की

धारा 7 और 7 ए के तहत लिखा, वे हैं :— (क्षेत्र प्रत्येक गाँव के साथ एकड़ में दिखाया गया है) दिल्ली जिले के 84 गाँव निम्न प्रकार हैं :—

दिल्ली जिला

जगतपुर (907), बुरारी (2787), कमालपुर (334), मुकुन्दपुर (626), भलस्वा जहाँगीर पुर (16082), शोभापुर (1333), लिबास पुर (568), सिरसपुर (1068), बादली (2342), हैदरपुर (1108), शीहीपुर (443), पीपलथला (422), भरोला (463), आजादपुर (639), राजपुर शहोनी (1209), मलकपुर छावनी (771), ढका (516), दाहिरपुर (1114), सिंहजार पुर (174), झड़ौदा (663), वज़ीराबाद (792), तिमारपुर (663), सढ़ोराकला (789), वजीरपुर (835), याकुटपुर (483), पीतमपुरा (694), सलेमपुर, माजरा मादीपुर (538), मादीपुर (1414), शकूरपुर (334), चौकडी मुबारकबाद (1352), नीमड़ी (255), सढ़ोरा खुर्द (1188), बसई दारापुर (2994), तीतारपुर (440), तिहाड़ (2179), नंगली जालिब (261), डाबड़ी (587), मीरपुर (812), सागरपुर (302), पालम (2570), पहलादपुर (478), मंगलापुरी (831), मेहरम नगर (946), महिपालपुर (1367), मलकपुर कोही (1833), कुसुमपुर (1914), मुरादाबाद पहाड़ी (587), मुहम्मदपुर मुनीरका (1771), नानकपुर बसंत नगर (866), शहाजहाँपुर कोटला (751), झरेड़ा (911), अमदलपुर (827), बाकरनगर उर्फ नवादा (316), नांगलराया (907), सादीपुर (292), नारायणा (2897), टोडापुर (663), दसघरा (922), बन्द शिकार खटन (809), जवाहर पुर (363), अरकपुर बाग मोची (795), अलीपुर पिलंजी उर्फ हसनपुर (1558), बीबी पुर (299), जोरबाग (560), बहलोलपुर (131), सिकंदरपुर (261), बबरपुर (838), खैरपुर (451), सरबन सराय (399), कुशक (975), मालचा (1792), रायसीना (949), नारहौला (1355), शादीपुर (991), खानपुर राय (1354), दिल्ली मौजा (8535), नांगल माची (274), इन्द्रपत (866), निजामपुर (1279), शमशपुर जागीर (135), राजापुर (531)।

बल्लभगढ़ तहसील

बहलोलपुर खादर (184), बहलोपुर बॉगर (82), किलोकड़ी (1522), बाहापुर (2348), कोटला महीग्राम (268), सादाबाद (561), बदरपुर (558), पुल पहलाद (545), तुगलकाबाद (3556), तिखैंड (1579), देवली (2476), खानपुर (556), टिगरी (265), मदनगीर (435), खिरकी (1116), चिरागदिल्ली (550), फकतपुर (338), मादीपुर गढ़ी झरिया मारिया (317), जगरूदपुर (355), रामपुर खुर्द (518), मुबारकपुर कोटला (833), गट्टु सराय (81), मस्जिद मोट (357), मजहदपुर (329), खरेड़ा (363), यूसुफ सराय (94), शाहपुर जट (394), सराय शाहजी (85), शेख सराय (219), हौज़रानी (444), टूट सराय (लाडो सराय) (604), सैदुल अजैब (299), नेबसराय (577), लाडौ सराय (531), बेगमपुर (247), कालू सराय (190), अधचीनी (265), कटवारिया सराय (357), जिया सराय (177), हुमाँयू पुर (356), हौजखास (405), बेर सराय (348), मसूदपुर (1371), महरोली (1445)। कुल 44 गाँव।

भूमि अधिग्रहण के लिये मुआवजा की दर 150 रु० प्रति एकड़ आँकी गई। परन्तु साथ ही कहा गया कि दिल्ली शहर के आस पास के 2—3 मील के क्षेत्र की मुआवजा राशि दुगुनी होगी। मुआवजा की कुल राशि

सार्वदेशिक आर्यवीर दल

सन्देश

सनातन वैदिक धर्म के मूल स्वरूप के दिग्दर्शन के सतत प्रचार में संलिप्त रहने वाले आर्यसमाज का मूल उद्देश्य जन जन में फैले रूढीवादी पाखण्ड और कुरीतिओं को समूल नष्ट करने का रहा है। अपने इस उद्देश्य के साथ-साथ भारतीय पर्वों, देश और समाज के भीतर विभिन्न काल में घटित घटनाओं के महत्त्व से सम्बन्धित जयन्ती, वर्षगांठ और शताब्दिओं को भी सदैव मनाकर भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करने में आर्यसमाज की महती भूमिका रही है। आर्यसमाज, नांगल राया द्वारा भी इसी मास में अपने स्थानीय आर्यसमाज की स्थापना की ७५वी वर्षगांठ के साथ-साथ नांगल राया गाँव के बसाए जाने की शताब्दी का आयोजन किया जा रहा है। हमारे संज्ञान में यह भी लाया गया कि इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन भी करवाया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल इस कृत्य के लिए आर्यसमाज नांगल राया के समस्त अधिकारीयों एवं सदस्यों के प्रति मंगलकामनाओं सहित दल की ओर से हार्दिक साधुवाद एवं बधाई का यह सन्देश प्रेषित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि आर्यसमाज नांगल राया भावी वर्षों में भी नई ऊर्जा के साथ उत्साहपूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन इसी प्रकार करता रहे।

[आजादसिंह]

उप प्रधान संचालक

चलभाष: ९६५०८९७५४४

ईमेल:sarvdeshikavd@gmail.com

मान्य प्रधान जी

आर्यसमाज नांगल राया,

नई दिल्ली-110046

राधिका सेतिया

अध्यक्षा :
शिकायत निवारण समिति
सदस्या :
1. विशेष (निर्माण) समिति
2. विशेष (विधि एवं सामान्य प्रयोजन) समिति
3. तदर्थ (सामुदायिक सेवाएं) समिति
4. तदर्थ (महिला कल्याण एवं बाल विकास) समिति

दक्षिणी दिल्ली नगर निगम
दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (दिल्ली सरकार)

मो. : 8130892110
9958784709
ई–मेल : setiaradhika@gmail.com

कार्यालय : कमरा नं. 103
डॉ. एस.पी.एम. सिविक सेन्टर
जे.एल.एन. मार्ग, नई दिल्ली–110002

निवास : डी–1/2, जनकपुरी
नई दिल्ली–110058

क्रमांक : .....

दिनांक : .....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि 'आर्यसमाज नांगल राया' एक भव्य एवं वृहद स्मारिका का विमोचन करने जा रहा है जिसमें क्षेत्र की स्थिति आर्यसमाज की भूमिका, इतिहास की जानकारी उपलब्ध रहेगी।

सर्वजनहिताय यह प्रयत्न प्रशंसा के योग्य है।

इस पावन अवसर पर मैं आर्यसमाज नांगल राया के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को बधाई देती हूँ जिनके सद्प्रयास से यह अनूठा व उपयोगी कार्य सम्मान हो सका।

Radhika

राधिका सेतिया
निगम पार्षद

विषय सूची

	विषय		पृष्ट सं०
1.	**नांगलराया गाँव-अतीत एवं वर्त्तमान**		1–7
	नांगलराया गाँव की पृष्ठभूमि		1
	नांगलराया गाँव में ब्राह्मण समाज का योगदान	शिव कुमार शर्मा	6
	जयति वेद अनुपम (कविता)	भगवानदास	7
2.	**नांगलराया गाँव की विभूतियाँ-दिवंगत एवं वर्तमान**		8–36
	स्व० चौ० माड़े सिंह	डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा	8
	स्व० चौ० भूप सिंह तँवर		9
	स्व० श्री लोकवीर सिंह तँवर		11
	स्व० पं० विष्णुदत्त शर्मा		13
	स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तँवर	भगवानदास	14
	स्व० पं० रामस्वरूप		17
	स्व० श्री सदाराम		18
	पाकिस्तान से निर्वासित हिन्दुओं का नांगलराया में पुनर्वास	पृथ्वीराज साहनी	19
	श्री महेशचन्द	परिचय	21
	निर्भीक योद्धा स्व० भंवर सिंह राजपूत	डॉ० मालती वर्मा	22
	द्वारका क्षेत्र के विधायक–श्री प्रद्युम्न राजपूत	डॉ० मालती वर्मा	26
	आदर्श शिक्षक–स्व० पं० शिवदत्त शर्मा		30
	मेजर जनरल–श्री श्रीदत्त शर्मा		30
	स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा, श्रीमती शुभा वर्मा		31
	मेजर जनरल श्री अनिल वर्मा		32
	ए.सी.पी स्व० श्री बाल किशन तँवर		33
	कर्नल स्व० श्री सुरेन्द्रसिंह तँवर		34
	श्री नरेश कुमार राणा, श्री राम नारायण		35
	स्वतन्त्रता सेनानी श्री के. के. भाटिया		36
3.	**नांगलराया गाँव के प्रबुद्ध साहित्यकार**		37–45
	पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन		37
	स्त्री गौरव–डॉ० मालती	भगवानदास	38
	आर्यसमाज जिनका प्रेरणास्रोत–श्री भगवानदास	डॉ० जयदेव वर्मा	40
	स्व० श्री रोहताश तँवर		43
	श्री तेजपाल सिंह		45
4.	**आर्यसमाज नांगलराया के 72 वर्ष**		46–65
	आर्यसमाज नांगलराया : एक संक्षिप्त परिचय		46
	नांगलराया के विकास में आर्यसमाज का योगदान	प्रभाषचन्द्र गुप्ता	51
	गुजरात भूकम्प और आर्यसमाज नांगलराया	ओमप्रकाश प्रेमी	52
	यज्ञ के साकार रूप–महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ	आजाद सिंह	55
	एक संस्मरण – श्री सुरेन्द्र कपूर		59
	खोजता फिरा (गीत)	भगवानदास	60
	मैं और आर्यसमाज नांगलराया	डॉ० अजय आर्य	61

5.	**आर्यसमाज नांगलराया के दिवंगत एवं वर्तमान सदस्य**		66–101
	आर्यसमाज के संस्थापक सदस्य–स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	डॉ० जयदेव वर्मा	67
	स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	श्रीमती कमलेश	69
	संस्थापक सदस्य–स्व० श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार	भगवानदास	71
	संस्कार धुरन्धर : स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री	भगवानदास	72
	स्व० श्री सूरजभान गुप्ता–स्व० सूबेदार चन्नीलाल वाही		73
	स्व० श्री तोखराम, स्व० श्री गुरदयाल, स्व० श्रीमती सुरजो		74
	मेरे पिता स्व० श्री बाबू रूपचन्द	रामकिशन सिंह	75
	मेरे पिता स्व० श्री कन्हैया लाल साँवरे	ओमप्रकाश प्रेमी	76
	स्व० श्री जयप्रकाश वर्मा		77
	दयानन्द भक्त स्व० श्री चौथूराम डुडेजा	श्रीमती प्रभा	78
	स्व० श्री शिवनारायण सिंह	राजपाल सिंह	80
	स्व० महाशय देवी सिंह आर्य		81
	स्व० साधुराम नारंग		82
	स्व० श्री पृथ्वीराज वर्मा, स्व० चौ० रामचन्द्र		83
	स्व० श्री लेखराज, स्व० डॉ० भागमल शर्मा, स्व० मा० ईश्वर सिंह		84
	स्व० श्री विष्णुस्वरूप वर्मा		85
	श्री जगमाल सिंह यादव, श्री देवदत्त शर्मा		86
	श्री आजाद सिंह		87
	श्री राजपाल सिंह		88
	श्री पृतिपाल सिंह		90
	डॉ० जयदेव वर्मा		91
	श्री अशोक कुमार तँवर		92
	श्री राजपाल सिंह डुडेजा		93
	श्री ओमप्रकाश प्रेमी		94
	श्री राजेश प्रशाद शर्मा, श्री प्रभाष चन्द्र गुप्ता		96
	श्री लोकेश कुमार, श्री रामकिशन सिंह		97
	श्री रामदास आर्य		98
	पूर्व सांख्यिकीय निदेशक – श्री सेवानन्द		99
	श्री कृष्णपाल, मेजर जनरल श्री राजेन्द्र सिंह तँवर		100
	श्री विनोद कुमार, चौ० अमर सिंह		101

ओ३म्

नांगलराया गाँव
अतीत और वर्तमान
100 वर्ष

नांगल राया गाँव की पृष्ठभूमि

दिल्ली छावनी क्षेत्र के पश्चिमी छोर पर दिल्ली छावनी रेलवे स्टेशन के समीप दिल्ली–रेवाड़ी रेलवे लाइन के समानान्तर सटे हुए गाँव नांगल राया का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इस गाँव के निवासी पुरानी नांगल गाँव से पुनर्वासित होकर यहाँ बसे थे। पुराना नांगल गाँव दिल्ली–रेवाडी लाइन के पूर्व में स्थित था। भारत सरकार के आदेशानुसार पुराने नांगल गाँव तथा इसकी कृषिभूमि का दिसम्बर 1911 में अधिग्रहण कर लिया गया था। जिसका उद्देश्य निम्नांकित था।

'9 अगस्त 1911 को भारत सरकार के सचिव ए. इर्ले ने गृहविभाग के द्वारा शिमला से एक प्रस्ताव का हवाला देते हुए कहा कि 11 मार्च, 1911 को महामहिम सम्राट ने एक शाही फरमान जारी करके अपनी इच्छा व्यक्त की है कि दिल्ली में राज्याभिषेक के लिये दरबार लगाया जाए।'

'25 अगस्त 1911 को राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने के लिये गवर्नर ने भारत के लिये अपने साम्राज्य के सचिवों की एक परिषद में कहा– 'भौगोलिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक आधारों पर भारतीय साम्राज्य की राजधानी दिल्ली में होनी चाहिए और दिल्ली में अगले शाही दरबार या महामहिम सम्राट द्वारा स्वयं ही होनी चाहिए।'

कोंसिल में गर्वनर जनरल ने कहा कि महामहिम सम्राट 7 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में प्रवेश करेंगे तथा मंगलवार 12 दिसम्बर 1911 को राज्याभिषेक होगा, इस दिन पूरे देश में छुट्टी घोषित होगी। आखिर 12 दिसम्बर 1911 को राजधानी का स्थानान्तरण कलकत्ता से दिल्ली हो गया। तब दिल्ली पंजाब प्रान्त की एक तहसील थी। पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल ने सार्वजनिक निर्माण कार्यों तथा दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने के लिये भूमि अधिग्रहण की घोषणा भूमि अधिग्रहण एक्ट 1894 की धारा 6 और 7 के अन्तर्गत दिल्ली तहसील के कलैक्टर को कई गांवों की भूमि अधिग्रहण करने के लिये कहा गया।

15 दिसम्बर, 1911 को सम्राट एवं सम्राज्ञी ने दो साधारण आधारशिलायें रखकर नई राजधानी का शिलान्यास किया। इस तरह दिल्ली के हाथ में समस्त भारत के शासन की बागडोर आ गयी। 1912 में पुराने सिविल स्टेशन में ब्रिटिश शासन का कार्यालय खोला गया। आज का पुराना सचिवालय ही तब राजधानी का अस्थायी कार्यालय था। इस अस्थायी राजधानी के निर्माण पर चार लाख रूपये खर्च हुए। नई राजधानी के निर्माण के लिये नई दिल्ली नगर योजना समिति बनाई गई जिसमें जाने माने वास्तुविद सर एडविस लुटियंस भी सदस्य थे। रायसीना पहाड़ी नई राजधानी के निर्माण के लिये चुनी गई।

नई राजधानी बनाने के लिये पंजाब के उपराज्यपाल से दिल्ली तथा बल्लभगढ़ जिले के 128 गाँवों की एक लाख 15 हजार एकड़ भूमि अधिग्रहित करने के लिये कहा। भूमि अधिग्रहण की धारा 9 के अधीन लगभग 85 हजार भू–स्वामियों को नोटिस भेजे गए। पंजाब प्रान्त के राजस्व एवं कृषि जनरल ने लाहौर से 21 दिसम्बर 1911 को एक अधिसूचना में जिन गाँवों की भूमि अधिग्रहण के लिये 1894 के एक्ट 1 की

धारा 7 और 7 ए के तहत लिखा, वे हैं :— (क्षेत्र प्रत्येक गाँव के साथ एकड़ में दिखाया गया है) दिल्ली जिले के 84 गाँव निम्न प्रकार हैं :—

दिल्ली जिला

जगतपुर (907), बुरारी (2787), कमालपुर (334), मुकुन्दपुर (626), भलस्वा जहाँगीर पुर (16082), शोभापुर (1333), लिबास पुर (568), सिरसपुर (1068), बादली (2342), हैदरपुर (1108), शीहीपुर (443), पीपलथला (422), भरोला (463), आजादपुर (639), राजपुर शहोनी (1209), मलकपुर छावनी (771), ढका (516), दाहिरपुर (1114), सिंहजार पुर (174), झड़ौदा (663), वज़ीराबाद (792), तिमारपुर (663), सढ़ोराकला (789), वजीरपुर (835), याकुटपुर (483), पीतमपुरा (694), सलेमपुर, माजरा मादीपुर (538), मादीपुर (1414), शकूरपुर (334), चौकडी मुबारकबाद (1352), नीमड़ी (255), सढ़ोरा खुर्द (1188), बसई दारापुर (2994), तीतारपुर (440), तिहाड़ (2179), नंगली जालिब (261), डाबड़ी (587), मीरपुर (812), सागरपुर (302), पालम (2570), पहलादपुर (478), मंगलापुरी (831), मेहरम नगर (946), महिपालपुर (1367), मलकपुर कोही (1833), कुसुमपुर (1914), मुरादाबाद पहाड़ी (587), मुहम्मदपुर मुनीरका (1771), नानकपुर बसंत नगर (866), शहाजहाँपुर कोटला (751), झरेड़ा (911), अमदलपुर (827), बाकरनगर उर्फ नवादा (316), नांगलराया (907), सादीपुर (292), नारायणा (2897), टोडापुर (663), दसघरा (922), बन्द शिकार खटन (809), जवाहर पुर (363), अरकपुर बाग मोची (795), अलीपुर पिलंजी उर्फ हसनपुर (1558), बीबी पुर (299), जोरबाग (560), बहलोलपुर (131), सिकंदरपुर (261), बबरपुर (838), खैरपुर (451), सरबन सराय (399), कुशक (975), मालचा (1792), रायसीना (949), नारहौला (1355), शादीपुर (991), खानपुर राय (1354), दिल्ली मौजा (8535), नांगल माची (274), इन्द्रपत (866), निजामपुर (1279), शमशपुर जागीर (135), राजापुर (531)।

बल्लभगढ़ तहसील

बहलोलपुर खादर (184), बहलोपुर बॉगर (82), किलोकड़ी (1522), बाहापुर (2348), कोटला महीग्राम (268), सादाबाद (561), बदरपुर (558), पुल पहलाद (545), तुगलकाबाद (3556), तिखैंड (1579), देवली (2476), खानपुर (556), टिगरी (265), मदनगीर (435), खिरकी (1116), चिरागदिल्ली (550), फकतपुर (338), मादीपुर गढ़ी झरिया मारिया (317), जगरूदपुर (355), रामपुर खुर्द (518), मुबारकपुर कोटला (833), गट्टु सराय (81), मस्जिद मोट (357), मजहदपुर (329), खरेड़ा (363), यूसुफ सराय (94), शाहपुर जट (394), सराय शाहजी (85), शेख सराय (219), हौज़रानी (444), टूट सराय (लाडो सराय) (604), सैदुल अजैब (299), नेबसराय (577), लाडौ सराय (531), बेगमपुर (247), कालू सराय (190), अधचीनी (265), कटवारिया सराय (357), जिया सराय (177), हुमाँयू पुर (356), हौजखास (405), बेर सराय (348), मसूदपुर (1371), महरोली (1445)। कुल 44 गाँव।

भूमि अधिग्रहण के लिये मुआवजा की दर 150 रु० प्रति एकड़ आँकी गई। परन्तु साथ ही कहा गया कि दिल्ली शहर के आस पास के 2—3 मील के क्षेत्र की मुआवजा राशि दुगुनी होगी। मुआवजा की कुल राशि

अनुमानतः दो करोड़ थी। ब्रिटिश सरकार के पास मुआवजा देने के लिये धन न होने के कारण यह निर्णय लिया गया कि फिलहाल उसी क्षेत्र का अधिग्रहण किया जाये जिसकी आवश्यकता राजधानी के निर्माण के लिये है।

छावनी क्षेत्र मिलिट्री प्राधिकरण को छावनी के निर्माण के लिये लगभग 15 वर्ग मील क्षेत्र चाहिए, परन्तु भूमि अधिग्रहण के तुरन्त बाद इस पर निर्माण कार्य नहीं किया जाएगा। क्षेत्र के एक चौथाई भाग को 2 वर्ष के लिये रखा जाये। राजस्व के लिये इस भाग को कृषि कार्य के लिये किराये पर दिया जाये। ('पालिका समाचार' के अतीत के झरोखें से साभार)

झोंपड़ियो में पुर्नवास

इस प्रकार ब्रिटिश सरकार द्वारा पुरानी नांगल के अपने मकान आदि तथा दिल्ली छावनी से लेकर किर्बी प्लेस तक स्टेशन रोड के दक्षिणी भाग तथा किर्बी प्लेस दिल्ली छावनी सदर बाजार के पश्चिमी भाग की दिल्ली रेवाडी रेलवे लाईन के पूर्वी भाग की अपनी कृषिभूमि का क्षेत्र के मुआवजे का अधिग्रहण के बाद घर विहीन नांगल राया वासियों ने दिल्ली रेवाड़ी रेलवे लाईन के पश्चिमी भाग की अपनी कृषि भूमि में झोपड़ियाँ बनाकर रहना आरम्भ किया। बहुत से किसान उत्तर प्रदेश के मेरठ के गाँव तेड़ा व रामनगर में तथा कुछ मुजफ्फर नगर जिले के गाँव हाजीपुर तथा कुछ अन्य गाँवों में जा बसे। अधिकांश ग्रामीण किसानों ने रेलवे लाईन के पश्चिम भाग में कुछ कृषि भूमि रखकर झोपड़ियों में अस्थायी निवास बना लिया। उस समय इसका स्वरुप पूर्णतः गाँव था और बाजार आदि की सुविधाओं का भी अभाव था।

1953 का नांगल

सन् 1953 से जबसे इन पंक्तियों के लेखक का आना–जाना प्रारम्भ हुआ तब इस गाँव का स्वरुप निम्न प्रकार था–

दिल्ली छावनी रेलवे स्टेशन के फाटक से जो सड़क तिलक नगर की ओर जाती है इस सड़क के दक्षिण भाग में फाटक के साथ लगती हुई चौ० सिब्बू सिंह हलवाई की दुकान थी और यहां से दुकानों का सिलसिला डा० रामानन्द की क्लीनिक तक था। उसके साथ ही थोड़े अन्तर पर बस स्टैण्ड था जिससे केवल एक बस 16 बी तिलक नगर होते हुए कश्मीरी गेट तक जाती थी। बस स्टैण्ड के पीछे एक साईकिल की दुकान थी। उससे काफी आगे चलकर चौ० सिब्बू सिंह का बागीचा था। उसके पश्चिम में तथा पीछे सब खेती होती थी। स्टेशन रोड के उत्तरी भाग में भी सड़क के साथ–साथ पच्चीस तीस दुकानें थी। इन दुकानों के दोनों किनारों पर ही सड़क के साथ–साथ सब्जी व फलों की दुकानें लगती थी। चौ० सिब्बूसिंह की हलवाई की दुकान के कुछ पीछे रेलवे की चारदीवारी के कोने पर लाला बिरधी चंद की दुकान थी जो अभी भी अपनी प्रसिद्धी के साथ चल रही है। इस दुकान के साथ–साथ पश्चिम की ओर बढ़ते हुए मकान तो थे पर दुकान कोई नहीं थी। इसके किनारे पर एक हलवाई की दुकान थी जो अब भी विद्यमान है। इसके सामने जहाँ लाला सूरज भान की जूतों व सोने की दुकान के पीछे सब खेती होती थी। गाँव की ओर जाते हुए जो मार्ग पंखा रोड की ओर जाता है। उसके पश्चिमी भाग में ही बसावट थी। पूर्व के भाग में राज की दुकान तक कोई मकान न था, सब खेती होती थी। स्टेशन से गाँव आने के लिये शोर्टकट

था और ला० बिरधी चंद की दुकान के पास से ही खेतों के बीच में से तिरछी सी बटिया थी जिससे हो कर राज की वर्तमान दुकान के पास कच्ची सड़क पर आते थे। साथ में शिव मन्दिर, आर्यसमाज भवन, चौ० सिब्बू सिंह (तेड़ा) के मकान (जिनमें प्रायः किरायेदार ही रहते थे), साथ चौ० जगराम के मकान (किरायेदारों के लिये)। इसके आगे कोई मकान न था। इनके पीछे सब खेत थे। आगे पंखा रोड का स्कूल था। बीच में सब खेत थे। स्कूल से आगे पंखा रोड तक खेत थे। पंखा रोड टूटी फूटी थी उस पर यदा–कदा मिलेट्री के ट्रक चलते दिखाई दे जाते थे। आर्यसमाज रोड के अन्तिम छोर पर तीन–चार दुकानें थी। शेष सब बियाबान खेत थे। आर्यसमाज रोड पर वर्तमान सहयोगी पार्क (जहाँ पहले खेत था) के सामने चौ० पदमसिंह का मकान व घेर अन्तिम भवन था। इसके आगे केवल चौ० अमरसिंह का मकान था। शेष सब खेत थे। उनके पीछे जहाँ डी ब्लाक जनकपुरी है (जो 62 के बाद बनी) तथा जहाँ ब्रह्मपुरी नांगल है, भूप सिंह बस्ती, लाजवन्ती आदि अस्तित्व में न थे वहाँ सब खेती होती थी। पंखा रोड के दक्षिण भाग में कोई भी मकान नहीं था। सब खेत थे। सन् 64 के लगभग केवल डा० ताराचन्द ने एक मकान बनाया था। पंखा रोड के उत्तरी किनारे पर केपीटल स्टोर के सामने 4–5 मकान एक पंक्ति में थे जहाँ पर किरायेदार रहते थे। इससे आगे चलकर जहाँ सबका बाजार है यहाँ पर सड़क किनारे पाँच सात कमरे थे। जहाँ सब किरायेदार ही रहते थे।

बाजार की ओर से जब गाँव में प्रवेश करते हैं तो सामने वाले भाग में जिस पंक्ति में मुल्तानी स्टोर व चौ० भूपसिंह (पूर्व निगम पार्षद) का मकान है। इसके आगे जो गली उत्तर की ओर जाती है उसके पश्चिमी भाग में कोई मकान नहीं था सब खेत थे।

आर्यसमाज रोड पर चौ० पदमसिंह व ठेकेदार चरण सिंह के मकान के बीच से जो गली पश्चिम की ओर जा रही है उसके बायें अन्तिम छोर पर चौ० भीम सिंह का मकान अन्तिम था आगे खेत प्रारम्भ हो जाते थे। इसी गली के अन्तिम छोर पर दायीं ओर बाबू रूपचन्द जी का मकान था। उसके बगल से पश्चिम की ओर से जो गली उत्तर की ओर जा रही है उसके पूर्व में तो बसावट थी लेकिन पश्चिम में केवल चौ० रामजी लाल का मकान था शेष सब खेत। आर्यसमाज के भवन के सामने से जो गली पश्चिम की ओर जा रही है उसमें दो गली छोड़कर उसके बाई ओर कोई मकान नहीं था। दायीं ओर नम्बरदार मेहरचन्द के मकान के साथ 4–5 मकान छोड़कर उसके तीनों ओर खेत ही खेत थे।

2012 शतवर्षीय नांगलराया

उत्तर में जेल रोड, दक्षिण में पंखा रोड, पूर्व में दिल्ली–रेवाड़ी रेलवे लाईन व पश्चिम में पं० विष्णुदत्त मार्ग की सीमाओं में घिरा नांगल राया गाँव सन् 2012 तक काफी विस्तार पा चुका है। नांगल राया का बाजार अब तक विस्तार पाकर जेल रोड के साथ–साथ मायापुरी रोड चौराहे तक फैल चुका है। जेल रोड पर 1982 में चन्द्रभान होटल तक बन चुका है। इसके समाप्त होते ही दूसरा पुल मायापुरी रोड पर सेन्ट्रल जेल तक बन चुका है। साल्वेज पार्क जो जेल रोड के उसी भाग की दुकानों के पिछवाड़े दिल्ली छावनी रेलवे स्टेशन के

सामने से मायापुरी रोड तक फैला है और जो सेना के लिये था अब जनता के लिये सुन्दर वृहत पार्क में परिवर्तित हो गया है। इसके पूर्वी छोर पर सब्जी मण्डी, मध्य में शवदाह गृह और पश्चिमी भाग में जनक सेतु के छोर पर नांगल राया का विस्तार है। जेल रोड से जेल के पूर्वी छोर के साथ–साथ पंखा रोड को मिलाने वाली सड़क अस्तित्व में है जिसके पश्चिमी छोर पर जेल थी पूर्वी दीवार के साथ–साथ इन्स्टीट्यूशनल एरिया है। इस रोड के पूर्वी छोर पर नांगल राया बाजार के पीछे की ओर लाजवन्ती गार्डन बस्ती है तथा साथ–साथ जनकपुरी डी ब्लॉक पंखा रोड़ तक स्थित है। लाजवन्ती गार्डन के पूर्वी किनारे के साथ डी–1/सी तथा इसके दक्षिण में चंचल पार्क, फिर पंखा रोड तक डी ब्लाक, जनकपुरी है। इनका पूर्वी छोर जनक सेतु से पंखा रोड को मिलाने वाला पं० विष्णु दत्त मार्ग है। पं० विष्णु दत्त मार्ग के पूर्व में पंखा रोड़ फलाई ओवर के साथ–साथ जनकपुरी डी–ब्लाक, भगत हॉस्पीटल, शिव मन्दिर तथा गुरूद्वारा है। गुरूद्वारे के साथ–साथ एक छोटा मार्ग पूर्व की ओर नांगल राय के सहयोगी पार्क तक जाता है। इस मार्ग के साथ–साथ उत्तर में भी नांगल राया गाँव है। पं० विष्णुदत्त मार्ग के उत्तरी छोर के साथ–साथ डी–1/सी के सामने चौ० लोकबीर सिंह वाणिज्य काम्प्लैक्स है जिसके पूर्वी भाग में नांगल राया की भूप सिंह कालोनी है। जिसके पूर्वी भाग में चौ० भूपसिंह पार्क अपना सुन्दर रूप संजोए है। पंखा रोड पर फलाई ओवर अस्तित्व में है। इसके दक्षिण भाग में रेलवे लाइन के साथ नजफगढ़ नाले के आर–पार ब्रह्मपुरी है जिसके पश्चिमी छोर पर पंखा रोड़ पुल के साथ–साथ तथा नजफगढ़ नाले के मध्य मोहन नगर है। नाले के दक्षिणी भाग में सागरपुर विद्यमान है।

नांगल राया यद्यपि एक गाँव का स्वरूप संजोए हुए है। लेकिन गाँव की कृषिभूमि जिसमें से भूपसिंह बस्ती, लाजवन्ती गार्डन, डी–1/सी, डी ब्लॉक जनकपुरी, मोहन नगर, वशिष्ठ पार्क तथा सागरपुर अस्तित्व में आये हैं अब एक शहरी गाँव बनकर रह गया है। जिनका पेशा अब कृषि के बजाय नौकरी या व्यवसाय रह गया है।

गाँव के गौरव

अपने सौ साल के जीवन में इस गाँव ने संकट के अनेक थपेड़े खाकर भी अपने परिश्रम व पुरूषार्थ के बल पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति की है।

राजनैतिक क्षेत्र

इसी गाँव के कर्मठ व जागरूक व्यक्तित्व चौ० माड़ेसिंह थे जिन्होंने स्वाधीनता से पूर्व दिल्ली छावनी परिषद के पार्षद हेतु चुनाव लड़ा था। आप आर्यसमाज नांगलराया के संस्थापकों में से थे। बाद में इनके पौत्र स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तँवर कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे और पाँच वर्ष तक दिल्ली प्रशासन में महानगर पार्षद रहे। आप आर्य समाज नांगल राया के वरिष्ठ सदस्य भी रहे और आपने अपने पुरूषार्थ व दान से तथा इधर–उधर से दान इकट्ठा करवाकर वर्तमान भवन की दूसरी मंजिल का निर्माण पूर्ण करवाया।•

नांगलराया गाँव में ब्राह्मण समाज का योगदान

शिवकुमार शर्मा

नांगलराया में गौड़ ब्राह्मण परिवार रहते हैं। जिन का गौत्र वत्स है। कई सौ साल पहले नांगलराया में पं० मनीराम जी रहते थे। उनके एक पुत्र पं० केसराम जी हुए। पं० केसराम के 2 पुत्र हुए, एक पं० सदाराम व दूसरे पं० भोलाराम। इन दो भाईयों के वारिसों की बदोलत यहाँ 2 कुनबों में ब्राह्मण परिवारों का विस्तार हुआ।

एक समय एक परिवार में पं० गोपाल सहाय, पं० मोती राम, पं० नेतराम, पं० चतुरभुज, पं० उदयराम 5 भाई थे। इन में से पं० नेतराम अपने समय के जाने माने सस्कृत व ज्योतिष शास्त्र के विद्वान थे। वह अपने जीवनकाल में संस्कृत के अध्यापक रहे। जब अंग्रेजों ने नांगलराया गाँव वालों को कहा कि वह लोग कैन्ट जगह को खाली करदें व अपनी खेती की जगह पर अपना गाँव बसा लें, तो उस समय पं० नेतराम जी ने अपनी एक बहुत बड़ी हवेली बनवाई। उस हवेली में उन्होंने कुआँ व पीपल का पेड़ भी लगवाया। यह हवेली आज के आर्यसमाज मन्दिर के सामने थी। उस समय ही पं० जी ने नांगलराया शिव मन्दिर में एक बड़ी धर्मशाला बनवाई। शिव मन्दिर में ही उस समय हनुमान मन्दिर बनवाया, जिसकी देख रेख उनके भतीजे पं० जुगल किशोर करते थे। पं० नेतराम जी ने पोसंगीपुर गाँव में जोकि जनकपुरी के बीच में है, एक मन्दिर बनवाकर उस गाँव को दिया।

पं० नेतराम के बड़े भाई गोपाल सहाय जी थे। उनके एक पुत्र पं० पृथ्वी सिंह हुए। पं० पृथ्वी सिंह जी के एक कन्या थी। सो उन्होंने अपनी कन्या के ज्येष्ठ पुत्र पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा को गोद ले लिया जोकि बड़े होने पर डाकतार विभाग (पी एण्ड टी) में अधिकारी हुए। पं० लक्ष्मी नारायण जी के 3 पुत्र हैं। इनमें से बड़े शिव कुमार शर्मा पहले भारत सरकार के सीएजी आफिस में अधिकारी थे। बाद मे उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ कर अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। आज वह एक वैल्वेट कपड़े की फैक्टरी सफलता पूर्वक चला रहे हैं। साथ में वह कुछ सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। वह नांगलराया में प्राचीन शिव मन्दिर में पिछले 22–23 साल से कोषाध्यक्ष के तौर पर अपनी सेवा दे रहे हैं। वह नांगलराया आवासीय कल्याण संघ (आर. डब्ल्यू. ए.) में भी महासचिव के पद पर रह कर गाँव को अपना योगदान दे रहे हैं। पं० लक्ष्मी नारायण जी के दूसरे पुत्र नरेन्द्र कुमार शर्मा भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय में हैं। और तीसरे पुत्र श्री मनोज कुमार शर्मा दिल्ली सरकार की दानिक्स सेवा में उच्च अधिकारी हैं। वह आजकल उपनिदेशक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

इसी परिवार की एक शाखा में पं० गंगाराम जी भी हुए। वह देश आजाद होने से पहले के समय में शास्त्री की उपाधि लेकर बड़े विद्वान हुए। उनके एक पुत्र डाक्टर हुए व एक पुत्र दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर रहे।

इसी परिवार में पं० मोतीराम जी थे। आज उनके वारिस शिवकुमार जी भारत सरकार में अधिकारी हैं व दूसरे पुत्र श्री सतीश कुमार एक बैंक में प्रबन्धक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

इसी प्रकार दूसरे परिवार की शाखाओं में भी उनके वारिस अच्छे व उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं।

उसी परिवार में श्री अशोक शर्मा बहुत बड़े व्यवसायी के तोर पर स्थापित हो चुके हैं। उस परिवार का अलग से परिचय इसी पुस्तक में दिया हुआ है।

ब्राह्मण लोग मूलतः पढ़े–लिखे व नौकरी में होते थे। यही परपंरा इन दोनों परिवार की शाखाओं ने आगे भी कायम रखी है अब आगे देश की सभ्यता, संस्कृति व आरक्षण की वजह से बदल रही है। अब आगे से योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी पाना मुशकिल हो रहा है। आगे देखिये क्या होता है?

– शिवकुमार शर्मा
9312409492

जयति वेद अनुपम

जयति वेद अनुपम। जन विकास उद्‌गम।।

अर्थ ज्ञान बिन वेदपाठ करना बिलकुल बेकार है।
मनन और आचरण नहीं तो पढ़ने में क्या सार है।।

अक्षर–अजर–अमर–सर्वोत्तम अन्तर्यामी ईश्वर है।
अर्थ सहित चारों वेदों का करे प्रकाश मही पर है।।
जिसमें सब विद्वान बसें–इन्द्रियाँ–मनुष्य–दिवाकर हैं।
ऐसी अनुपम वस्तु सृष्टि में, मात्र एक परमेश्वर है।।
वेद पढ़े, प्रभु ना जाना तो पढ़ना क्या फलदार है।।१।।

रस्म–मात्र जो पढ़ लेता, उसको उत्तम सुख ना होता।
अर्थ बिना पशु–वृक्ष–तुल्य सब भार व्यर्थ तन पर ढोता।।
भाव–अर्थ–ज्ञाता, अधर्म तज, धर्म–शरण में लय होता।
जन्म–मरण–दुःख त्याग, प्राप्त करता सुख का अजस्र सोता।।
वास मोक्ष में हो जाता जहाँ सुक्खों की भरमार है।।२।।

पाठमात्र पढ़ने वाला जन, अन्धकार में वास करे।
जैसे सूखा ईधन बिन ज्वाला ना दाह–प्रकाश करे।।
ज्ञान–प्रकाश–रहित क्योंकर अज्ञान–तिमिर का नाश करे।
शब्द–अर्थ–सम्बन्ध–ज्ञान बिन कैसे ज्ञान–उजास करे।।
अर्थ सहित पढ़ मनन करें तो सुखी बने संसार है।।३।।

परमानन्द परम फल मिलता वेद–ज्ञान परचार से।
पतिव्रता नारी सुख पाती ज्यों निज पति अभिसार से।।
विद्वानों का रूप–ज्योति दिखलाती, विद्या प्यार से।
धर्म, अर्थ अरू काम–मोक्ष मिलते हैं वेदाचार से।।
सब जग का कल्याण, विज्ञ–जन का जीवन–आधार है।।४।।

– भगवान दास

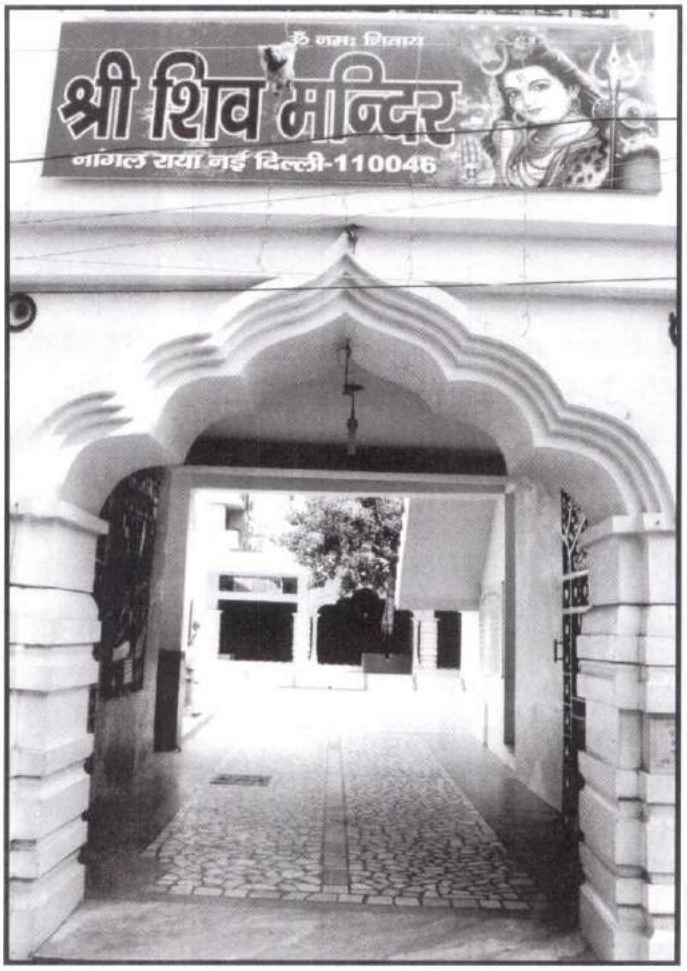

शिव मन्दिर नांगलराया

सेवानिवृत्त मेजर जनरल श्रीदत्त शर्मा ने वार्त्तालाप के अवसर पर बताया कि नांगलराया गाँव के शिव मन्दिर की स्थापना अब से लगभग 80 वर्ष पूर्व शिवालय के रूप में हुई। उस समय जनरल साहब के दादाजी स्व० पं० नवलकिशोर जी ने मूर्ति लगाकर गाँव वालों के सहयोग से इसकी विधिवत स्थापना की थी जिसमें पं० नवलकिशोर जी और उनके पुत्र स्व० श्री रामस्वरूप जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पं० नवलकिशोर जी इसके अध्यक्ष भी रहे। इनके पुत्र स्व० पं० रामस्वरूप जी ने इसकी कमेटी का गठन कराया और इसके प्रचार सचिव भी रहे तथा इसको रजिस्टर्ड कराया फिर स्व० पं० रामस्वरूप जी ने इसका कार्यभार स्व० बाबू रामस्वरूप जी (स्व० प्यारेलाल वर्मा के पिताजी) को सम्भाला। बाबू रामस्वरूप जी मन्दिर कमेटी के लम्बे समय तक प्रधान रहे और इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। श्रद्धालुओं दानदाताओं के सहयोग से यह शिव मन्दिर वर्तमान स्वरूप में विद्यमान है।

ओ३म्

नांगलराया गाँव की विभूतियाँ, दिवंगत् एवम् वर्तमान

चौ० माड़े सिंह

चौ० माड़े सिंह नांगलराय के एक सम्मानित व्यक्ति थे। आप नहर के महकमे से सेवा निवृत्त अधिकारी थे। चौ० माड़े सिंह जी उन इनगिने सौभाग्यशाली व्यक्तियों में से थे। परन्तु गाँव नांगलराय में उनकी पहचान एक जागरूक, समाजसेवी, हमदर्द, आर्यसमाज विचारधारा वाले सुलझे हुए चौधरी की थी। ग्राम के सभी कार्यों, शादी–विवाह, उत्सव, सभा में उनकी उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। अवकाश प्राप्ति के बाद दिल्ली छावनी बोर्ड का चुनाव लड़ा परन्तु केवल एक मत से पराजित हो गये। चौ० माड़े सिंह के तीन पुत्र थे। सबसे बड़े पुत्र का नाम था चौ० भरत सिंह। यह सौभाग्य की बात थी कि जब चौ० माड़े सिंह के नेतृत्व में नांगलराय गाँव आर्यसमाज की स्थापना की चर्चा जोरशोर से चल रही थी उसी दौरान उनके बड़े पुत्र चौ० भरत सिंह व पुत्रवधू श्रीमती गेन्दो देवी को एक पुत्ररत्न 12 अगस्त 1939 को प्राप्त हुआ जिसका नाम था राजेन्द्र कुमार तँवर। जिसने दादा चौ० माड़े सिंह की छत्रछाया में पल बढ़कर उनके पद चिन्हों पर चलते हुए आर्यसमाज नांगलराय के वर्तमान विशाल भवन के निर्माण और इसकी गतिविधियों को चरम शिखर पर पहुँचाने में महती भूमिका निभायी। पर दुर्भाग्य का विषय यह रहा कि स्व० राजेन्द्र कुमार तँवर के राजनीति में प्रवेश के पूर्व ही उनके आदर्श दादा चौ० माड़ेसिंह जी का निधन हो चुका था।

चौ० माड़े सिंह का जन्म सन् 1879 में दिल्ली के पुरानी नांगल गाँव में हुआ। आपका बचपन का नाम छतीराम था क्योंकि आपका जन्म अपने घर की छत पर हुआ था। बाद में आप बहुत बीमार पड़ गये और ठीक हो जाने के बाद भी बहुत कमजोर थे इस कारण आपका नाम माड़े सिंह पड़ गया। आपने रूड़की से ओवरसियर का कोर्स किया। इस से पहले अपनी पढ़ाई नजफ़गढ़ स्कूल में की। आपने सिंचाई विभाग में ओवरसियर के पद पर उत्तरप्रदेश के देहरादून, चक्रोता, हरिद्वार में काम किया। पुनः एस. डी. ओ. के रूप में पदोन्नति हुई। बाद में अंग्रेज सरकार ने अधिशाषी अभियन्ता के पद पर पदोन्नति देकर आपका स्थानान्तरण बिलोचिस्तान में कर दिया। परन्तु श्री माड़े सिंह ने यह तर्क देकर कि वहाँ का खान–पान विशेषकर मांसाहार है और मैं आर्यसमाजी होने के कारण सात्विक भोजन ही करता हूँ। अतः मैं पदोन्नति लेकर बिलोचिस्तान नहीं जाना चाहता। अंग्रेज सरकार को हुकम अदूली कतई पसन्द नहीं थी। अतः उनके इस कथन से अप्रसन्न होकर इन्हें नौकरी से बरखास्त कर दिया। बाद में उच्च अधिकारियों ने, जो इनके कार्य से बहुत प्रसन्न और प्रभावित थे, इनके नाम की पुनः संस्तुति की और तब जाकर इन्हें नौकरी में बहाल किया गया। आपके भाई श्री हुकम सिंह भी सिंचाई विभाग में जिलेदार के पद पर सेवारत थे। चौ० माड़े सिंह का निधन 80 वर्ष की आयु में 8 जून 1959 को हो गया।

डॉ० वीरेन्द्र कुमार वर्मा

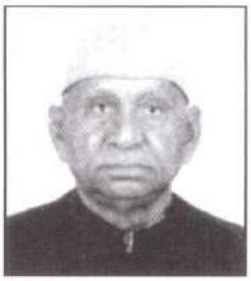

स्व० चौ० भूप सिंह तँवर
निगम पार्षद

चौ० भूप सिंह तँवर उन प्रख्यात व्यक्तियों में है जिन्होंने अपनी कर्मठता, दक्षता, कार्यकुशलता और संगठन शक्ति के बल पर अपनी ख्याति अपने क्षेत्र में ही नहीं अपितु पूरी दिल्ली की सीमाओं में व्याप्त की है। भारतीय जनसंघ व रा० स्व० से० संघ के राष्ट्रीय नेताओं यहाँ तक कि पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी व पूर्व गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण अडवानी तक सीधे और निकट सम्बन्ध थे। आपका जन्म 8 जनवरी 1921 को नांगल राया गाँव के एक साधारण परिवार में चौ० गिरधारी लाल जी के घर में हुआ। आपने प्राथमिक शिक्षा नांगल राया प्राथमिक विद्यालय में उर्दू माध्यम से प्राप्त की तथा पालम गाँव के उर्दू माध्यमिक विद्यालय से आठंवी प्रथम श्रेणी में पास की। अन्त्याक्षरी अथवा उर्दू की शेरो–शायरी की स्पर्धा में आपका कोई सानी नहीं था।

दिल्ली छावनी स्थित सी.ओ.डी. में आप वर्षों तक सरकारी कर्मचारी के रूप में सेवारत रहे। 1941 में श्री धर्म सिंह जी ने रा.स्व.से. संघ की शाखा गाँव की गाँव सभा की भूमि (सागरपुर) में शुरू की और चौ० भूपसिंह जी 1944 में संघ के स्वयं सेवक बने। 1947 में भारत विभाजन के समय पुनर्वासित होकर आये शरणार्थियों की भरपूर सहायता की। 1948 में महात्मा गाँधी के दुखद निधन पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा और उस समय पूरे देश में 1,12,000 स्वयंसेवकों को बन्दी बना लिया जिनमें चौ० भूप सिंह अग्रिम पंक्ति में थे। बन्दियों को अस्वास्थ्य कर भोजन दिये जाने के विरोध में चौ० भूपसिंह जी व श्री धर्मसिंह जी के साथ 125 परिवारों के छोटे से गाँव की शाखा नांगल राया से 28 स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया था। देश की विभिन्न जेलों में नांगल राया शाखा के निम्न स्वयंसेवक बन्द थे – स्व० श्री धनीराम, महाशय नत्थूसिंह, चौ० पदम सिंह, भागमल, राम नारायण, रवि, रमेश, राम नारायण, सदाराम, रिछपाल सिंह, कलीराम, हंसराम, जसवन्त, जय सिंह, अभयराम, भुल्लन सिंह, चेतराम, सीताराम, श्री कृष्ण, पं० श्री किशन (पालम), लाल सिंह (नारायणा), जय सिंह (फजलपुर), राम नारायण, चौ० प्रभुदयाल, डा० रामस्वरूप लांबा, अमी लाल, शिवदत्त व मदन मोहन। संघ से प्रतिबन्ध उठने पर सभी सरकारी कर्मचारियों की सेवा समाप्त कर दी गई और चौ० भूपसिंह जी को कृषि कार्य कर गुजारा करना पड़ा।

1953 में भारतीय जनसंघ द्वारा चलाये गये कश्मीर बचाओ आन्दोलन में डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के शहीद होने पर चौ० भूप सिंह तीन मास तक जेल में रहे। आप 1952 से 1962 तक नांगल राया ग्राम सभा के प्रधान रहे। 1966 में 6 नवम्बर को गोरक्षा आन्दोलन में नांगल राया के 150 से अधिक महिलाओं व पुरूषों के साथ लोक सभा के समक्ष प्रदर्शन में शामिल हुए। पुलिस द्वारा गोलीबारी व अश्रुगैस की बौछार के बावजूद साहस के साथ डटे रहे।

1967 में दिल्ली नगर निगम व महानगर परिषद के चुनाव में चौ० भूपसिंह जी निगम पार्षद व चौ० लोकवीर सिंह महानगर पार्षद चुने गये। 1971 में हुए दिल्ली नगर निगम के चुनाव में भारतीय जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में पुनः निर्वाचित हुए। आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आप समय के बड़े पाबन्द थे।

आपातकाल

25 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने श्रीमति इन्दिरा गाँधी (तत्कालीन प्रधान मंत्री) के लोकसभा सदस्य के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया और उसी दिन देश में आपातकाल घोषित करा दिया तथा सभी विरोधी दलों के नेताओं को जेल में बन्द कर दिया जिसमें नांगल राया से भी 20 लोगों के साथ चौ० भूपसिंह, चौ० लोकवीर सिंह, पं० विष्णुदत्त शर्मा 19 महीनों तक जेल की यातनाओं को सहन करते रहे। इन बन्दियों में चौ० भूपसिंह के भाई भँवर सिंह, पुत्र प्रहलाद सिंह तथा चौ० लोकवीर व उनके परिवार के सदस्य क्रमशः सुरेन्द्रसिंह, राजेन्द्र सिंह, तेजेन्द्र सिंह, हरबिन्द्र सिंह, जितेन्द्र सिंह, देवेन्द्र सिंह, नरेन्द्र सिंह व दयाल सिंह भी शामिल थे।

1984 में चौथी बार चौ० भूपसिंह तँवर ने भा.ज.पा. के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और विजयी हुए। इस प्रकार आप निरन्तर 23 वर्ष तक दिल्ली नगर निगम के पार्षद रहे। अनेक बार नगर निगम की स्थायी समिति के सदस्य तथा दो बार क्षेत्रीय समिति पश्चिमी क्षेत्र राजौरी गार्डन के अध्यक्ष रहे। मार्किट कमेटी तथा विधि समिति के भी अध्यक्ष रहे।

आपने अपने कार्यालय में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा विविध विकास व सुधार संबंधी कार्य करके नांगल राया गाँव को एक भव्य रूप प्रदान करने का भरपूर प्रयास किया। 1959 में नांगल राया का माध्यमिक विद्यालय चौ० भूपसिंह तँवर के प्रयास से ही अस्तित्व में आया।

आर्यसमाज में योगदान

आप 1956 से आर्यसमाज नांगल राया के सदस्य बने तथा इसके प्रचार प्रसार में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। सन् 1967 में प्रथम बार निगम पार्षद बनते ही पहला काम आपने वर्तमान जनक सेतु से (डा० रामानन्द की दुकान के पास) पंखारोड़ मार्ग का नामान्तरण आर्यसमाज मार्ग करवाया। जहाँ–जहाँ आर्यसमाज को आवश्यकता पड़ी आपने नेतृत्व करते हुए आपने इसे प्रगति पथ पर अग्रसर करने का भरसक प्रयास किया। अंतरंग सभाओं में आपकी उपस्थिति 90 प्रतिशत रहती थी। वर्तमान भवन के निर्माण में आपने अपनी ओर से भी दान दिया तथा अपने सम्पर्कों से महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.), चौ० श्रवण कुमार, श्री सुभाष कपूर आदि अनेक दानियों से मोटी धनराशि जुटायी।•

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।

कठ० उ० 1.27

धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती।

नर पुंगव

स्व० श्री लोकवीर सिंह

वीरता, साहस, शौर्य, पराक्रम, स्पष्टता व वाक्पटुता जैसे शब्द जिसके गुणों के सामने फीके पड़ जाते हैं ऐसे व्यक्तित्व का नाम है श्री लोकवीर सिंह तँवर। आपका जन्म नांगल राया गाँव में 1 जुलाई 1928 को हुआ। आपके पिता श्री कुन्दन सिंह और माता का नाम श्रीमती सुखदेवी था। आपने हायर सैकेण्ड्री तक शिक्षा रामजस हायर सैकेण्ड्री स्कूल नं०2 गोल मार्केट से 1943 में प्राप्त की। बचपन से देश के लिये मर मिटने का जज्बा आपके हृदय में था। गाँव के खेतों में कुछ कच्चे बने मकानों की एक छोटी सी बस्ती सागरपुर के समीप कल्लर में श्री धर्मसिंह जी द्वारा 1942 में प्रारम्भ की गई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में जाना प्रारम्भ किया। बाद में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचार हेतु उत्तर भारत का भ्रमण किया और गाँव–गाँव जाकर आर.एस.एस. की शाखाओं का गठन किया।

साहसी व वीर लोकवीर

1946 में हरियाणा के फतहाबाद के आस–पास 40 कि०मी० के क्षेत्र में 15 ग्रामों में शाखायें शुरू की जिनमें दैनिक व्यायाम के साथ आत्म रक्षा हेतु, भाला, तलवार चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। 1947 में देश विभाजन के समय पाकिस्तान से देश में लौटे लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास में दिन रात एक करके योगदान दिया।

महात्मा गांधी की हत्या के बाद रा० स्वयं सेवक संघ पर प्रतिबंध लगने के फलस्वरूप 2.2.1948 को एक लाख स्वयं सेवक बन्दी बनाये गए जिनमें श्री लोकवीर सिंह भी शामिल थे। 1952 में आपको भटिण्डा जिले का जन संघ मंत्री बनाकर भेजा तो वहाँ रामा मण्डी में काम किया और वहीं के हिन्दू हाई स्कूल में अध्यापक के रूप में 8वीं कक्षा तक के बच्चों को पढ़ाते रहे। गौ रक्षा हेतु हस्ताक्षर अभियान में 4 करोड़ से अधिक हस्ताक्षर युक्त पत्र तत्कालीन राष्ट्रपति को भेजा। इसी अभियान के दौरान हस्ताक्षर कराने हेतु गाँव–गाँव जाना पड़ा। एक दिन 6 डाकुओं ने चार ऊँटों पर जा रहे चार व्यापारियों को लूट लिया। उसी समय श्री लोकवीर सिंह अपने कुछ साथियों के साथ जा रहे थे। इनके हाथ में लाठी थी। डाकुओं के पास आधुनिक हथियार थे। लोकवीर जी तथा उनके साथियों को भी डाकुओं ने रोक कर वहीं बिठा लिया। लोकवीर जी ने उन्हें कहा कि हमारे पास कुछ भी नहीं है हमें जाने दो। हम तो गौ हत्या बन्दी के लिये गाँव–गाँव जाकर हस्ताक्षर करवाने जा रहे हैं। जिन्हें बाद में राष्ट्रपति के पास भिजवाना है। डाकुओं ने कहा कि फिर तुम सारे लाठियाँ क्यों लिये हुए हो। लोकवीर सिंह ने कहा कि ये लाठियाँ आत्मरक्षा के लिये हैं और बच्चों को भी आत्मरक्षा के लिये लाठी चलाना सिखाते हैं। डाकुओं ने कहा कि तुम लाठियों से आत्मरक्षा कैसे कर सकते हो? लोकवीर जी ने कहा कि तुम में जो चार व्यक्ति भाले से लैस हों मेरे साथ 5 मिनट तक मुकाबला करो। मैं अकेला लाठी

से तुम्हारा सामना करूँगा। डाकू परीक्षण के तौर पर तैयार हो गये। वे चारों भालों सहित लोकवीर सिंह पर कोई प्रहार न कर सके जबकि लोकवीर सिंह जी ने अपनी लाठी कला का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए चारों पर लाठी से एक एक प्रहार किया। अन्त में डाकू बहुत प्रसन्न हुए। व्यापारियों का सामान भी लौटा दिया और लोकवीर सिंह जी को आशीर्वाद देकर गये। रामा मण्डी में इससे लोकवीर सिंह जी का यश दूर–दूर तक फैल गया और भारी संख्या में लोग इनके दर्शनार्थ आए।

सत्याग्रह में भाग

1953 में जब डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी धारा 370 तोड़ने काशमीर में प्रविष्ट हुए तो शेख अब्दुल्ला ने षडयंत्र पूर्वक उनकी हत्या करादी जिसके विरोध में जनसंघ ने सत्याग्रह किया और पठानकोट से काशमीर क्षेत्र में प्रवेश किया। लोकवीर सिंह जी अपने जत्थे के साथ भाषण के दौरान गिरफ्तार किये गए और उन्हें गुरदासपुर जेल भेजा। वहाँ घटिया भोजन मिलने पर जेल में 11 दिन तक भूख हड़ताल की और ठीक भोजन मिलना प्रारंभ हुआ। पुनः अम्बाला जेल भेजा।

हिन्दी आन्दोलन

1955 में लोकवीर सिंह जी को दिल्ली बुलाया गया। हिन्दी आन्दोलन आर्यसमाज ने पंजाब सरकार की हिन्दी विरोधी नीतियों के विरूद्ध छेड़ा तो नांगल राया से पहला जत्था आर्यसमाज नांगलराय के प्रधान सूबेदार चुन्नी लाल वाही जी के नेतृत्व में गया। दूसरे जत्थों में टेलर मास्टर श्याम सिंह, अशोक नगर से राजाराम आर्य व श्री धर्मवीर हलवाई भी गये। अम्बाला में लेकवीर सिंह जी ने पंजाब की हिन्दी विरोधी नीति के संबंध में भाषण दिया और चण्डीगढ़ जाने के लिए रेल में सवार होते ही साथियों सहित गिरफ्तार कर अम्बाला जेल भेज दिया। इसी वर्ष नांगल राया में स्वयं सेवक संघ की शाखा को विस्तार दिया जिसमें आठवीं कक्षा के विद्यार्थी पृथ्वीराज साहनी जिन्होंने बाद में दिल्ली के महापौर के प्रतिष्ठित पद को भी सुशोभित किया व स० सोहन सिंह, श्री भँवर सिंह व श्री परमानंद सेतिया उस समय बाल स्वयं सेवक थे। 1967 में आप दिल्ली प्रशासन के महानगर पार्षद चुने गये।

आपातकाल

25 जून 1975 को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने श्रीमती इन्दिरा गांधी (प्रधानमंत्री) के संसद के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया और 26 जून 1975 से देश में आपातकाल घोषित हुआ। जनता के सब मौलिक अधिकार छीन लिये तथा सभी विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी प्रारम्भ हो गई। नांगल राया के ही 26 सत्याग्रही तिहाड़ जेल में बन्दी बनाये गए जिनमें श्री लोकवीर सिंह उनके 8 भतीजों सहित 9 व्यक्ति बन्दी थे। 29.1.1976 तक सारे देश की जेलों में 1,40,000 सत्याग्रही बन्दी थे। जनवरी 1977 में आपातकाल समाप्त करने की घोषणा के साथ–साथ फरवरी 1977 में आम चुनाव हुए। श्रीमती इन्दिरा गाँधी अपने पुत्र संजय गाँधी सहित लोकसभा का चुनाव हार गई। कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई और जनता पार्टी शासन में आई। दिनांक 30.5.2010 को भारत माता का सच्चा सपूत अपने शौर्य, वीरता और साहस के इतिहास का अन्तिम पृष्ठ सम्पूर्ण करते हुए इस संसार से विदा हो गया।•

स्वाधीनता सैनानी

स्व० पं० विष्णुदत्त शर्मा

पं० विष्णुदत्त शर्मा ने नांगल राया की भूमि को चार चाँद लगाये हैं। आप केवल नांगल के ही नहीं अपितु समग्र दिल्ली के प्रकाश पुंज हैं। आपका जन्म 10 दिसम्बर 1919 को दिल्ली के नांगल राया गाँव में हुआ। आपके पिता स्व० पं० रामस्वरूप जी व माता श्रीमती भगवान देई थी। आपने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। अपनी सेवायें पुलीस विभाग से प्रारम्भ की परन्तु भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान आपने सेवा से त्यागपत्र दे दिया और महात्मा गाँधी के सेवा ग्राम आश्रम वरधा में प्रविष्ठ हो गये। उन्हीं दिनों डा० राजकुमारी और डा० सुशीला नैयर के साथ समाज सेवा का कार्य प्रारम्भ किया। आपको दिल्ली में पुनर्वास सलाहकार नियुक्त किया गया। आपने देश विभाजन के फलस्वरूप पाकिस्तान से पुनर्वासित शरणार्थियों की समस्याओं के निपटाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। पंजाब के तत्कालीन मुख्य मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने आपको उक्त कार्य के लिए जन सम्पर्क अधिकारी नियुक्त किया। आपने शासकीय प्रकाशन योजना में भी शैक्षिक कार्य को निष्ठापूर्वक सम्भाला। आपको भारत सरकार ने पंजाब के नांगल टाउनशिप में भाखड़ा डेम परियोजना में सहायक सूचना अधिकारी नियुक्त किया और वहाँ की सबसे बड़ी टंकी के पास रहने को बड़ा बंगला दिया गया। वहाँ आप कई वर्ष तक रहे। इस स्मारिका के मुख्य संम्पादक श्री भगवानदास भी वहाँ पर नियुक्त थे। और कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कांग्रेस में प्रवेश

पं० विष्णुदत्त जी ने 1967 में कांग्रेसी के रूप में राजनीति में प्रवेश किया। 1975 में इन्दिरा गाँधी द्वारा की गई आपातकाल घोषणा में आपने सरकार और कांग्रेस का घोर विरोध किया। आपातकाल का विरोध करने के कारण आपको डा० सच्चर के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और 19 महीनों तक जेल यातनायें सही। 1977 में आपने जनता पार्टी के झण्डे तले चुनाव लड़ा और महानगर परिषद सदस्य चुने गये।

आपकी स्मृति में दिल्ली सरकार द्वारा जनक सेतु के पश्चिमी छोर से पंखा रोड़ को मिलाने वाली सड़क का नाम 'पं० विष्णुदत्त मार्ग' रखा गया।•

स्वामीजी की विशेषताएं

1. स्वामीजी वेदो के बड़े भक्त थे। शंकर स्वामी के पश्चात् वेदों का पुनरुद्धार स्वामीजी ने ही किया था।
2. स्वामीजी बालब्रह्मचारी थे। उन्होंने विद्या, बुद्धि और बल से संसार को ब्रह्मचर्य का महत्त्व दिखला दिया।
3. स्वामीजी हठी न थे।
4. स्वामी जी अपनी बात के बड़े पक्के थे। एक दिन किसी हिन्दू ने उनको अपने यहाँ न ठहराया तो मुसलमान लोग अपने यहाँ ले गए। वहाँ उनका भी खण्डन किया।

एक प्रेरक व्यक्तित्व

स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तँवर

नांगल राया जनकपुरी क्षेत्र के पूर्व महानगर पार्षद श्री राजेन्द्र कुमार तँवर न केवल अपने क्षेत्र की अपितु समग्र दिल्ली की प्रमुख विभूतियों में से थे। आपका जन्म ग्राम नांगल राया में दिनांक 12 अगस्त, 1939 को हुआ था। आपके पिता स्व० श्री भरतसिंह और माता स्व० श्रीमति गेंदो देवी धार्मिक विचारों से ओत–प्रोत थे। वैदिक विचारधारा आपको कुल–परम्परा से मिली थी। आपके दादाजी स्वर्गीय माड़े सिंह आर्यसमाज नांगल राया के संस्थापकों में से थे तथा क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिक, सजग राजनीतिज्ञ, प्रसिद्ध समाज सेवी और श्रेष्ठ धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपकी माता स्व० श्रीमति गेंदो देवी एक सरल, विनम्र, सौम्य, शालीन और हंसमुख स्वभाव की आर्य विचारधारा से सांगोपांग रची हुई थी। आपके मामा श्री हर किशोर वर्मा प्रसिद्ध समाजसेवी व बिरादरी के ख्यात व्यक्ति थे। यदि आप अर्जुन थे तो आपके ममेरे भाई श्री वेद प्रकाश जी कृष्ण के समान हमेशा आपके सुख–दुख में साथ रहे और आपका मार्गदर्शन भी करते रहे।

श्री राजेन्द्र जी रेलवे डाक सेवा (R.M.S.) कार्यालय में सेवारत थे। राजनीति और धर्म में आपकी प्रारम्भ से ही एक समान रुचि थी। वहां की कर्मचारी यूनियन में आप वर्षों तक पदाधिकारी रहे और वहीं से आपने राजनीति में प्रवेश किया। वर्ष 1971 में आपने कांग्रेस टिकट पर नांगल राया–जनकपुरी क्षेत्र से दिल्ली महानगर परिषद् का चुनाव लड़ा और भारी बहुमत से विजयी हुए थे।

व्यक्तित्व व साहसिकता –

आपके विचार पर्वत से उच्च और भाव समुद्र–सम गम्भीर व शान्त थे। छःफुटा शरीर, चौड़ा सीना, तीखे नयन–नक्श, 100 किलो वजन और बड़ी–बड़ी बलखाती राजपूती मूँछें – प्रथम दृष्टि में ही हर कोई आपके शारीरिक व्यक्तित्व से सहसा ही प्रभावित हुए बिना न रहता। जिस पर विचारों की ऊँचाई, भाव–गाम्भीर्य, निष्कपटता, निश्छलता, स्पष्टता, सरलता, साहस, सत्यता, धर्मप्रियता, राष्ट्रप्रेम, विनम्रता, सौम्यता, वाकपटुता जैसे गुण आपके व्यक्तित्व को चार चाँद लगा देते थे। वेद, धर्म, ईश्वर, आर्यसमाज, के प्रति निष्ठा आप में कूट–कूट कर भरी हुई थी। 1970 से पहले की बात है जब आर्यसमाज के किन्हीं अज्ञात आलोचकों ने आर्यसमाज नांगल राया की छतपर लगे ओ म् ध्वज को चोरी–छुपे जला दिया। जैसे ही तँवर साहब को पता चला तो उनके तन–बदन में आग लग गई। उन्होंने परशुराम जैसे ओज, लक्ष्मण जैसी कोप मुद्रा में आर्यसमाज मन्दिर के सामने सड़क पर खड़े होकर चुनौती और चेतावनी भरे लहजे में कहा था कि किसी माई के लाल में यदि हिम्मत हो और अपनी माँ का दूध पिया हो तो साहस करके हमारे सामने आये और पुनः ओ म् ध्वज की ओर टेढ़ी नज़रें करके तो देखे – हम उसकी आँखें निकाल लेंगे। उस समय उनका कोप, तेज, साहस और वीर–रस की भावना से रंजित चेहरा

देखते ही बनता था। उसके बाद पुनः ऐसी घटना की पुनरावृत्ति कभी नहीं हुई।

अहंकार से कोसों दूर –

'प्रभुता पाय काहु मद नाही' – बड़ा पद पाकर प्रायः अहंकार का नशा छा ही जाता है। परन्तु महानगर पार्षद का पद पाकर अहंकार के बजाय आप फल से लदे वृक्ष की भांति और भी अधिक विनम्र हो गये। प्रायः देखने में आता है कि परिवार के किसी सदस्य को बड़ा पद मिलने पर उसके परिवार के व्यक्ति उसके पद का दुरुपयोग करते हैं और मर्यादा की सभी सीमाओं का उल्लंघन कर समाज पर बोझ बन कर एक प्रकार का आतंक खड़ा कर देते हैं परन्तु राजेन्द्र जी की पत्नी श्रीमति मायादेवी, पुत्र मेधावी और भाई डॉ० वीरेन्द्र पहले की तरह ही सरल, निश्छल और शान्त बने रहे।

वाक्पटुता –

आपकी भाषण शैली और वाक् चातुर्य कमाल का था। गम्भीर से गम्भीर विषय को, चाहे वह लड़ाई, हाथ–पाई व वाक् बाणों के चरम तक पहुँच चुका हो, आप अपने धैर्य, सूझ–बूझ और विनम्रता से नया मोड़ देकर वातावरण को प्रेममय, शांत और सामान्य बनाने में सिद्धहस्त थे। समाज और बिरादरी की अनेक समस्याओं को आप चुटकियों में हल कर दिया करते थे। क्षेत्र की प्रायः बड़ी–बड़ी सभाओं का मंच संचालन आप बड़ी कुशलता से प्रभाव पूर्ण ढ़ंग से किया करते थे। आर्य समाज नांगल राया के तो आप कृष्ण थे और यहाँ आयोजित लगभग सभी बड़ी सभाओं का मंच संचालन आप जादुई ढ़ंग से किया करते थे। आर्य समाज नांगल राया के सत्संग–भवन की आधारशिला रखने के समय आयोजित सम्मेलन में आपने ऐसा जादुई प्रभाव दिखाया कि उपस्थित महिलाओं ने उत्साह में भरकर दान–पात्र को रुपयों से भर दिया।

सात्विकता, चरित्र व बल से युक्त जीवन –

आपके जीवन के कुछ सिद्धान्त थे जिनपर आप आजीवन अटल रहे। मर्यादाओं और श्रेष्ठ परम्पराओं का आपने कभी पल्ला नहीं छोड़ा। आपका खान–पान और व्यवहार पूर्णतः सात्विक था। मांस, अण्डा, शराब को आपने कभी छुआ तक नहीं। आपके बहुत से राजनीतिक मित्रों ने भारी संख्या में एकत्र होकर एक पार्टी की व्यवस्था की जिसमें शराब के भी पैग चल रहे थे। आपके सभी मित्रों ने मिलकर शराब पीने का आग्रह किया पर आपने उसे सिरे से ही नकार दिया। अन्ततः उन्होंने शराब की एक बोतल जबरदस्ती पिलाने का प्रयास किया। इसी धक्का–मुक्की में वह शराब की बोतल उनके वस्त्रों पर डाल दी। पर चरित्र व सात्विकता के धनी राजेन्द्र जी ने शराब की दुर्गन्ध से आपूरित अपने वस्त्रों को भी अपने घर तक ले जाने में अपनी तौहीन समझी और अपने वस्त्र वहीं निकाल कर फेंक दिये और केवल कच्छे में अपने घर पहुंचे। उनका यह उदाहरण नवयुवकों को अपने जीवन में प्रेरक सिद्ध हो सकता है।

यज्ञ और संस्कृति प्रेमी –

यज्ञ और धर्म में आपकी अपूर्व आस्था थी। अपना हर शुभ काम यज्ञ और वेद–मंत्रों से प्रारम्भ करते थे। यज्ञ के बाद सभी उपस्थित महानुभावों को भोजन बड़ी श्रद्धा से कराते थे। मेरे जैसे अकिंचन

व्यक्ति का भी पूर्ण सम्मान करते थे। सभी यज्ञ और संस्कार मुझसे ही कराते थे।

आर्यसमाज नांगल राया के वेद प्रचार में यज्ञ में यजमान सपत्नीक बनते थे और सपरिवार शामिल होते थे। मुझ समेत सभी विद्वानों को भोजन व दक्षिणा श्रद्धा सहित देते थे और समाज में प्रशाद भी अपनी ओर से वितरित करते थे।

आर्यसमाज नांगल राया में योगदान –

आर्यसमाज नांगल राया के सत्संग भवन के निर्माण के वे सूत्रधार थे। शिलान्यास समारोह का मंच–संचालन अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से किया और दान एकत्र करने में अद्भुत कार्यक्षमता का परिचय दिया। अपने समर्थ मित्रों और सम्बन्धियों से दान लेने हमें साथ लेकर गये। आर्यसमाज नांगल राया के सत्संग भवन की दूसरी मंजिल एक प्रकार से श्री राजेन्द्र जी का ही स्मृति चिन्ह है। पहली मंजिल की छत का लैन्टर पड़ते ही पैसा भी समाप्त हो गया और अगली मंजिल के निर्माण का इरादा भी न था। परन्तु राजेन्द्र जी ने साहस दिलाया और अगली मंजिल के निर्माण का कार्य जारी रखने का प्रस्ताव रखा और आर्थिक व्यवस्था में बाधा न आने पाये, इसका विश्वास दिलाया। उनका पुत्र मेधावी गाड़ी चलाता, उसमें श्री राजेन्द्र जी और आर्यसमाज के अधिकारी बैठकर उनके सम्पर्क स्थानों पर जाते रहे और पर्याप्त दान एकत्र किया। श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, प्रीत विहार उनके संबंधी थे और उनसे सम्पर्क कर सत्संग–भवन के निचले भाग का पत्थर और खिड़कियों व दरवाजे लगाने के लिए उन्हें तैयार कर पुण्य के भागी बने। नांगल, लाजवन्ती बाजार से घर–घर व दुकान–दुकान जाकर दान–राशि जुटायी।

आर्यवीर दल को प्रोत्साहन –

आपने आर्यवीर दल को, बालकों की खेल व भाषण प्रतियोगिताओं, जन्माष्टमी, स्वाधीनता दिवस, हैदराबाद दिवस, राम नवमी आदि अवसरों पर रखी भाषण प्रतियोगिताओं के आयोजन में अपूर्व सहयोग दिया और हर प्रतियोगी को हर अवसर पर अपनी ओर से प्रोत्साहन राशि देकर उनका उत्साह बढ़ाते रहे।

विजयी विधायक का स्वागत –

क्षेत्र से विजयी विधायकों का स्वागत आर्यसमाज की परम्परा रही है और गत बार श्रीमति किरण चौधरी के विधायक चुने जाने पर उनका भव्य स्वागत किया गया जिसका आयोजन और व्यवस्था श्री राजेन्द्र जी ने बड़ी सूझबूझ से की और मंच के संचालन में अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया।

आप अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे और उनके पदाधिकारी भी रहे। गैस एजेन्सी की अखिल भारतीय एसोसियेशन के आप उपाध्यक्ष थे और दिल्ली मकान–मालिक एसोसियेशन के अध्यक्ष रहकर मकान मालिकों के हितों की पैरवी कुशल ढंग से करते रहे।

रया राजपूत बिरादरी के प्रतिनिधि –

आप रया राजपूत बिरादरी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष थे और बिरादरी की अनेक समस्याओं के समाधान के लिये अनेक सूत्र देते रहे। बिरादरी सभा ने जब उत्तर प्रदेश भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष (पूर्व केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन मंत्री) व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह का अभिनन्दन बसई–दारापुर में श्री मंगतराम तँवर के निवास पर किया तो आपने उनसे पुरजोर

अपील की थी कि इस बिरादरी के 95 प्रतिशत व्यक्ति भाजपा के समर्थक हैं अतः विधानसभा में इस बिरादरी को उचित प्रतिनिधित्व देने के लिए टिकट दिया जाना चाहिए। श्री राजनाथ जी उनके द्वारा प्रवाहमय भाषण और तथ्यपूर्ण विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए और अपने भाषण में उनके विचारों और उनके नाम व प्रतिभा की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

क्षेत्र के नागरिकों व अनेकानेक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं की समस्याएं हल करने में आप सर्वदा अग्रणीय रहे। आपका विनम्र, सौम्य, शान्त, मृदुल, हंसमुख स्वभाव यहाँ की जनता का सदा प्रेरणा–स्त्रोत रहा। आपके निधन से एक विशाल क्षेत्र आपके कुशल मार्गदर्शन से वंचित और अनाथ हो गया। क्षेत्र के नूतृत्व की दूर–दूर तक आशा की किरण एक प्रकार से क्षीण हो गयी। नांगल और यहां का आर्यसमाज तो आपके अभाव में किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया है। जब भी कोई समस्या आती थी तो आर्यसमाज के अधिकारी आपका द्वार खटखटाते थे और पूर्ण समाधान पाते थे। आपके निधन से पूर्व "अखिल भारतीय रवा राजपूत सभा" के अध्यक्ष पद पर आपको आसीन करने का निर्णय हो चुका था लेकिन दैव को कुछ और ही मंजूर था। आपकी शव–यात्रा में उमड़ा अपार जन–समूह आपकी लोकप्रियता का जीता–जागता सबूत था। 26 नवम्बर, 1999 का वह प्रभात आपके जीवन की सन्ध्या बनकर आया और हमारे कुशल नेतृत्व को हमसे छीनकर ले गया।•

– भगवान दास
भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज नांगलराया

स्व० पं० राम स्वरूप जी

पं० राम स्वरूप जी का जन्म 9 सितम्बर 1896 को नांगल राया गाँव में हुआ। आपकी धर्मपत्नी का नाम भगवान देई था। आपने नांगल राया को चार पुत्र रत्न समर्पित किये जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र में अपना और अपने पिता का नाम अमर कर दिया। सबसे बड़े पुत्र पं० विष्णुदत्त स्वाधीनता सेनानी रहे। दूसरे पुत्र पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन उच्च कोटि के साहित्यकार और पत्रकार रहे। तीसरे पुत्र पं० शिवदत्त शर्मा शिक्षा के क्षेत्र में कर्मठ अध्यापक रहे और चौथे पुत्र पं० श्री दत्त शर्मा ईमानदार, निष्ठावान मेजर जनरल के पद से सेवामुक्त हुए।

पंडित जी की शिक्षा मैट्रिक तक हुई। आप दिल्ली छावनी बोर्ड में अधीक्षक के पद कर कार्यरत रहे। एक वर्ष तक आप मुख्य कार्यकारी अधिकारी के पद पर भी आसीन रहे। 15 वर्ष से भी अधिक अवधि तक आप दिल्ली छावनी परिषद के सदस्य भी रहे और विभिन्न समितियों में वाइस चेयरमैन व चेयरमैन के पदों को भी सुशोभित किया। आपने नांगल राया में प्राथमिक विद्यालय और सदर बाजार में सनातन धर्म मन्दिर की स्थापना में भी प्रमुख भूमिका निभाई। बाद में आप रामजस कालेज के अधीक्षक पद पर नियुक्त हुए और वहाँ अपने पुत्रों को समुचित शिक्षा दिलाने में सहयोग दिया। आपने नांगल राया सनातन धर्म मन्दिर को पंजीकृत कराने में योगदान किया और लम्बे समय तक इसके विभिन्न पदों का कार्यभार संभाला।•

स्व० श्री सदा राम तँवर

आप के पिता का नाम चौ० राम स्वरूप था। आप का जन्म 20.05.1929 को हुआ। आप का निधन 28.10.1996 को हुआ। आप की पत्नी का नाम श्रीमती बिमला तँवर है।

विशेष उपलब्धियाँः–

- देश की आजादी के लिए संधर्ष करने वालों की मदद करना।
- क्षेत्र की रूप–रेखा एवं सुधार नीतियों के निर्माण में सहयोग
- सरकारी सेवा – पी एण्ड टी।
- मजदूरों एवं कर्मचारियों के लिए पोस्टल यूनियन की स्थापना में अपूर्व सहयोग।
- सेवा के दौरान एवं सेवा निवृत्ति के बाद भी राष्ट्रीय स्तर एवं क्षेत्रीय स्तर पर यूनियन के महासचिव एवं अध्यक्ष बने रहे।
- आपकी त्याग की भावना, ईमानदारी एवं मानव प्रेम ने इन्हें कश्मीर से कन्याकुमारी, सौराष्ट्र से अरूणाचल प्रदेश तक सभी का प्रिय बना दिया।
- सारी जिन्दगी लोगों के विकास एवं वास्तु स्थिति सुधार के लिए सरकार की गलत नीतियों एवं निर्णयों से सामना होता रहा।
- आपने सभी वर्गों के लोगों को सम्मान से देखा और पूर्ण सहयोग बिना किसी स्वार्थ के किया।
- सेवा निवृत्ति होने के बाद भी लाखों लोगों के विशेष आग्रह पर उनकी सेवा करते रहे।
- आपके मन में कोई छल, कपट, लालच या प्रलोभन नहीं था। और एक साधारण जीवन व्यतीत किया जिस कारण लोग आज भी उन्हें याद करते हैं और मान–सम्मान करते हैं।
- उनकी मृत्यु के दिन पूरे देश के सभी ड़ाकघरों ने शौक के रूप में काला दिवस बनाया।
- राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के बावजूद भी अपना सम्पूर्ण जीवन एक साधारण मनुष्य के रूप में व्यतीत किया और अपनी एक छाप अपने प्रदेश व देश के ऊपर छोड़ गये।•

आर्यों के सामाजिक धर्म

1. समाज में जाना, दान व चन्दा देना, सुशीलता से बैठना।
2. प्रत्येक कार्य में उत्साह से भाग लेना।
3. एक–दूसरे के दुःख–सुख में सम्मिलित होना।
4. अपनी बिरादरी बनाना।
5. अपने सम्बन्ध आर्यों से रखना।
6. बालकों का आर्यकुमार–सभाओं से सम्बन्ध जोड़ना।
7. विवाह आदि पौराणिक भाई–बन्धुओं के जाल से निकलकर करना।
8. दूसरों की सहायता करना।
9. अपने संन्यासियों, उपदेशकों, पुरोहितों का मान करना।
10. आर्यसमाज के पत्रों को प्रोत्साहित करना।
11. अपने बालकों को शिल्प–विद्या सिखाना तथा गुरुकुल और कन्या गुरुकुल में भेजना।

पकिस्तान से निर्वासित हिन्दुओं का नांगलराया में पुनर्वास

श्री पी. आर. साहनी
(पूर्व मेयर दिल्ली)

15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ परन्तु उस समय के नेतृत्व ने भारत माता का विभाजन स्वीकार कर लिया। विभाजन के कारण पाकिस्तान से हिन्दुओं एवं सिखों ने भारत की ओर पलायन प्रारम्भ कर दिया। परन्तु मजहबी लोगों ने हिन्दुओं एवं सिखों को मारना प्रारम्भ कर दिया, जिसमें पाकिस्तान सरकार का भी समर्थन प्राप्त था। सारे यात्रियों को जो रेल द्वारा भारत आ रहे थे, कत्ल कर दिया गया। हजारों लोगों को मार डाला गया। करोड़ों की सम्पत्ति लूट ली गई। हजारों हिन्दुओं पर गलत केस बना कर जेल में डाल दिया। जब भी वे लोग जेल से छूटते थे, बाहर आते ही मजहबी लोग उन्हें मार डालते थे। यह सब बातें पाकिस्तान सरकार के इशारे पर हो रही थी। भारत के गृह मंत्री लौह पुरूष सरदार पटेल के कारण पाकिस्तान सरकार को जेल में डाले कैदियों को सुरक्षित भारत भेजना पड़ा। जान बचा कर आए हिन्दुओं एवं सिखों का भारत भूमि पर जनता द्वारा स्वागत किया गया। वे अपने धर्म के लिए सब कुछ छोड़ कर भारत आ गए।

बहुत बड़ी संख्या में हिन्दु एवं सिख बन्धु नांगल राया गाँव आ गए। कोई भी ठहरने का स्थान नही था, न ही खाने का प्रबन्ध कर सकते थे। नांगल राया के बन्धुओं ने अपने हिन्दु भाईयों के लिए सब कुछ किया। इनमें प्रमुखतः चौ० भूप सिंह, श्री पदम सिंह, श्रीरामनारायण जी, चौ० रूप चन्द, श्री भुल्लन सिंह, श्री महावीर सिंह, श्री तोता राम, श्री प्रभु दयाल जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेतृत्व में आए हुए शरणार्थियों की सेवा में लग गए। नांगल राया आर्यसमाज का बहुत बड़ा योगदान रहा। स्वर्गीय तोता राम टटीरी निवासी श्री नाहर सिंह के मामा जी के नेतृत्व में आए हुए हिन्दु भाईयों के रहने की एवं भोजन की व्यवस्था की गई। पाकिस्तान से आए अपने बंधुओं को लगा कि वे अपने घर में सुरक्षित हैं।

मेरे पिता स्वर्गीय श्री हंसराज जी को लाहौर जेल में बंद कर दिया था। भारत के गृह मंत्री सरदार पटेल के दबाव में कैदियों को सुरक्षित भेजा गया, तो हमारा परिवार 1948 में नांगल राया गाँव में आ गया।

30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की हत्या कर दी गई। उस समय की कांग्रेस सरकार ने षडयंत्र के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। संघ के स्वयं सेवकों पर सरकार की ओर से अत्याचार का दौर प्रारम्भ कर दिया गया। हजारों बेकसूरों को जेल में बंद कर दिया गया। संघ ने पूरे देश में आन्दोलन प्रारम्भ किया, जिसका असर नांगल राया गाँव में भी नजर आया। हर दीवार पर नारा लिखा हुआ था– "काले कानून तोड़ दो, गुरू जी को छोड़ दो"। परम पूज्य गुरू जी

उस समय संघ के सर संघ चालक थे। नांगल जैसे छोटे से गाँव से 30 लोगों ने गिरफतारी दी और महीनों जेल में रहे। गृह मंत्री सरदार पटेल ने जब सरकार को समझाया कि राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी की हत्या में संघ का कोई हाथ नही है और हत्यारे नाथू राम गौडसे का संघ से कोई सम्बन्ध नही है, तब संघ से प्रतिबंध हटाया गया। परम पूजनीय माधवराव सदाशिवराव गौलवलकर (गुरू जी) जेल से छूटने के पश्चात नांगल आए। नांगल की जनता ने उनका भव्य स्वागत कल्लर (अब सागरपुर) में किया। कार्यक्रम के कार्यकताओं में अभूतपूर्व जोश था, जेल से आए अपने स्वंय सेवकों का अभिनन्दन किया गया।

आर्यसमाज के निष्ठावान कार्यकर्ता श्री तोता राम जी ने शरणार्थियों को आर्यसमाज से जोड़ना प्रारम्भ किया। हमारे परिवार ने चौ० छत्तर सिंह जी के मकान में रहना प्रारम्भ किया। मेरी माता स्वर्गीय कौशल्या देवी जी के आग्रह पर मैंने भी आर्यसमाज में प्रवेश लिया और नित्य प्रति सायं को हवन में सम्मिलित होता था। श्रीमान तोता राम जी बच्चों को संस्कारित करने का प्रयास करते थे। मंत्रों का हिन्दी में अनुवाद समझाते थे।

पाकिस्तान से आये परिवारों का तथा नांगल राय के परिवारों के रहन सहन में बहुत बड़ा अन्तर था, जिसके कारण कई बार समस्यांए भी आ जाती थीं। उन समस्याओं का निवारण भी आर्यसमाज द्वारा किया जाता था जिसमें स्वर्गीय तोता राम जी एवं स्वर्गीय बाबू रूपचन्द जी (आर्यसमाज नांगलराय के संस्थापकों में से एक) का बड़ा सहयोग रहता था।

नांगल गांव में उस समय एक ही प्राथमिक विद्यालय था। जहाँ पर डिसपैंसरी बनी हुई है वहीं पर विद्यालय चलता था। स्वर्गीय गरीब राम जी मुख्य अध्यापक थे। उस समय विद्यालय में वही अध्यापक थे। पहली से चौथी कक्षा तक बच्चों को वह अकेले ही पढ़ाते थे। बड़ी लगन के साथ अपने शिष्यों को शिक्षा देते थे। पूरा नांगल गांव उनका अत्याधिक सम्मान करता था। हर धार्मिक कार्यक्रम में भी मुख्य अध्यापक जी का सहयोग लिया जाता था। वह विद्यालय में ही रहते थे। उस समय दिल्ली के सभी प्राथमिक विद्यालयों के चयनित विद्यार्थियों की वजीफे के लिए परीक्षा होती थी। स्वर्गीय गरीब राम जी हर वर्ष अपने विद्यालय के चौथी कक्षा में पढ़ने वाले चार विद्यार्थियों को इस परीक्षा में भेजते थे। उन चयनित विद्यार्थियों को सायंकाल विद्यालय में बुलाकर निशुल्क परीक्षा की तैयारी कराते थे। पॉचवी में प्रवेश लेने हेतू विद्यार्थी दिल्ली छावनी विद्यालय में जाते थे।

1953 में स्वर्गीय लोकवीर सिंह जी हरियाणा से वापिस नांगल आ गये। वह उस समय संघ के प्रचारक थे। नांगल राया आकर उन्होंने संघ की सायं शाखा प्रारम्भ की। उस समय मैं छठी कक्षा में दिल्ली छावनी विद्यालय में पढ़ता था। आस पास कोई विद्यालय न होने के कारण नांगल के सारे बच्चे चौथी कक्षा के बाद दिल्ली छावनी ही जाते थे। स्वर्गीय लोकवीर जी के प्रयास से आदरणीय राम नारायण जी के घेर में सायं शाखा प्रारम्भ की गई, जिसकी संख्या सदैव 50 से अधिक रहती थी। उस समय शाखा में जाने वाले प्रमुख स्वयं सेवक स्वर्गीय भँवर सिंह राजपूत, उमा

शंकर, सरदार सोहन सिंह, परमानन्द सेतिया, स्व० राधे श्याम, रतन चन्द शर्मा, उपदेश शुक्ला, सरदार सोहन सिंह, सरवर कुमार इत्यादि थे। शाखा के माध्यम से बच्चों को संस्कारित किया जाता था।

1956 में आर्य कुमार सभा की स्थापना की गई। आर्य कुमार सभा की जिम्मेदारी स्वर्गीय भंवर सिंह राजपूत एवं मुझे प्रदान की गई। हम दोनों ने मिलकर आर्य समाज में पुस्तकालय की स्थापना की। पुस्तकालय के माध्यम से युवाओं को आर्य कुमार सभा से जोड़ा गया। मासिक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी, इस में स्व० बाबू रूपचन्द जी का बड़ा सहयोग रहता था।

मैं यह बात गर्व से कह सकता हूँ कि नांगल निवासियों ने पाकिस्तान से आये हिन्दुओं एवं सिखों को अपना भाई समझा एवं उनकी भरपूर सहायता की।

श्री पृथ्वीराज साहनी जी दिल्ली के महापौर पद को सुशोभित कर चुके हैं। आर्यसमाज नांगलराय के लिये यह गर्व की बात है कि उसका एक आर्यवीर दिल्ली के प्रथम नागरिक होने का सौभाग्य प्राप्त कर पाया। श्री साहनी अब भी कार्यकर्त्ताओं और जनता के कार्यों में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके लिये अपनी कलम से कुछ लिख पाने का अवसर मिलना भी दुर्लभ है। लेकिन इस आर्यसमाज के प्रति अपने विशेष और अनन्य लगाव के कारण से संस्मरण भेजे हैं। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं –

– मुख्य सम्पादक

अतिरिक्त महाप्रबन्धक

श्री महेश चन्द

पिता का नाम : स्व० श्री भरत सिंह
माता का नाम : स्व० श्रीमती शांति देवी
जन्मतिथि : 15.12.1953
जन्म स्थान : ग्राम खेड़ा पो० –गजरौला शिव, जिला बिजनौर (उ०प्र०)
शैक्षणिक योग्यता: सन् 1971 में उ० प्र० मा० शि० परिषद से 12वीं कक्षा पास की
व्यावसायिक योग्यता :–
रूड़की विश्वविद्यालय से विद्युत अभि० में डिग्री
स्थाई पता : नांगलराया व जनकपुरी, नई दिल्ली–58 में सन् 1986 से
व्यवसाय : टाटा पावर दिल्ली ड्रिस्ट्रिब्यूशन लि० में अतिरिक्त महाप्रबन्धक
पत्नी का नाम : श्रीमती मधु

अन्य विवरण :–
पूर्व अध्यक्ष–बिजनौर रवा राजपूत संगठन, दिल्ली–एन.सी.आर.
वर्तमान–संरक्षक बिजनौर रवा राजपूत संगठन, दिल्ली–एन.सी.आर.
वर्तमान–उपाध्यक्ष, दिल्ली विद्युत बोर्ड अभियन्ता संघ

दूरभाष : 28530374 मो० : 9868442929
E-mail : vkmedhavi65@gmail.com

निर्भीक योद्धा

स्व० श्री भंवर सिंह राजपूत

चेहरे पर खिलखिलाती हँसी, इरादों में बुलन्दी, हिम्मत और आशा जगाती आवाज और स्वभाव में यारों का यार वाली मस्ती स्व० भंवर सिंह राजपूत की पहली पहचान है। देसीपन और नागर–शालीनता के अद्‌भुत मेल से युक्त आकर्षक व्यक्तित्व से भरा मधुर व्यवहार और जीवन्त ऊर्जा भंवरसिंह की खास पहचान कही जा सकती है। अपनापन इतना कि कभी किसी से कहा–सुनी भी हो गई तो उसे मैत्री का हाथ बढ़ाने की पहल भी भंवर सिंह ही करते थे। वे हर महफिल की जान थे। आज भी जब उनके पुराने साथी मिल बैठते हैं तो यादों के घटाटोप में से आवाज निकलती है कि हमें अपने मित्र भंवरसिंह पर नाज है, हमारा यार जिन्दादिल, निस्वार्थी, समाज–समर्पित, दूरदर्शी, सबका साथी, यारों का यार और प्यारा प्राणी था।

भंवर सिंह जी की रूचि राजनीतिक–सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों में थी, अपने क्षेत्र के मंडल से लेकर ऊपर तक के संगठन में आप का सकारात्मक सहयोग रहता था और स्व० भूपसिंह जी के चुनावों का सारा दारोमदार उन्हीं पर रहता था। अपने क्षेत्र की राजनीति की तो जैसे उन्होंने नब्ज थाम रखी थी। आपात्काल के बाद चुनाव में पंडित विष्णुदत्त और बाद में प्रो० जगदीश मुखी को चुनाव में उतारने में भंवर सिंह जी तथा उनके बचपन के मित्र श्री पृथ्वीराज साहनी, श्री उपदेश शुक्ल, सरदार सोहनसिंह जी तथा श्री परमानन्द सेतिया जी की भूमिका रही थी। दिल्ली में अणुव्रत (जैन–संस्था) की स्थापना के प्रांरभिक वर्षों के प्रयत्नों में भंवर सिंह जी के सहयोग को संस्था ने सराहा। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में कन्या पाठशाला और आई. टी.आई. की स्थापना से लेकर इन्हें मान्यता दिलवाने में आपने अपने प्रभाव का प्रयोग करते हुए अपने मित्र, हितैषी और उत्तर प्रदेश के तब के शिक्षा मंत्री मान्य राजनाथ सिंह जी से सहयोग मुहैय्या कराया और साथ ही इन संस्थाओं के लिए आर्थिक संसाधन भी जुटाये। सामुदायिक महत्व के कार्यों में भवरसिंह जी ने सदा तन–मन–धन से सहकार किया।

12 जुलाई 1939 को जन्मे भंवरसिंह जी नांगल गांव के साधारण किसान स्व० गिरधारी लाल और स्व० झण्डो देवी की छह संतानों में सबसे छोटे बच्चे थे। पिता का अनथक परिश्रम भाव और माता की कुशल–व्यवहार–क्षमता बालक भंवर सिंह ने जन्म से ही पा ली थी, फिर वयमान में पिता समान भाईयों के परिवारों में पलने वाले इस बालक ने परिस्थितियों की पहचान भी जल्दी ही सीख ली थी। होश संभालने से पहले ही बड़े भाई स्व० भूपसिंह जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और राजनीति से जुड़ गये थे। घर का व्यवसाय मझले भाई स्व० अमर सिंह जी ने संभाल लिया था और छोटा भाई भंवर सिंह दोनों भाइयों के काम में सहायक की भूमिका में रहता था।

वर्ष 1947 में जब सारा देश बेघर हुए परिवारों की चिंता में था आठ बरस का यह

बालक भंवरसिंह भी स्वंय सेवकों के साथ सहायता कार्यों में लग गया था, इसी प्रकार जब वर्ष 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा तब नौ बरस का बालक भंवरसिंह रात के अंधेरे में 'काला कानून तोड़ दो, गुरूजी को छोड़ दो' की अपील वाले पोस्टर दीवारों पर चिपकाता था। बचपन से ही भंवर सिंह के व्यक्तित्व में समाज और राजनीति के प्रति सहज–समर्पण भाव घर कर गया था।

इसी समय से भंवर सिंह राजपूत में संगठन–प्रबंधन–क्षमता, टीम–भावना और दूरदर्शिता के गुणों का रूप उभर कर दिखने लगा था। उनकी स्कूली शिक्षा दिल्ली कैंट के स्कूल से हुई। भंवर सिंह और श्री पृथ्वी राज साहनी (अब पूर्व महापौर, दिल्ली) सहपाठी और मित्र थे। भंवरसिंह स्कूल की कबड्डी की टीम के प्रेजिडेन्ट थे और वे श्री पृथ्वी राज साहनी के साथ मिल कर स्कूल में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया करते थे। भंवरसिंह जी के मन में शुरू से ही अपने परिवेश के प्रति कुछ करने की लगन थी और वे समझ गये थे कि सार्थक प्रयत्नों के लिये अच्छी टीम और अच्छी योजना का होना बहुत जरूरी होता है। इसीलिए वर्ष **1956 में ग्यारह वर्ष की लड़कपन की आयु में उन्होंने नांगल में 'आर्य कुमार सभा' का विधिवत गठन किया। इस संस्था के अध्यक्ष भंवर सिंह जी थे और महामंत्री श्री पृथ्वीराज साहनी (पूर्व महापौर) थे।**

इस मंच से भंवर सिंह जी ने गाँव के युवाओं को संगठित किया और बड़े सुनियोजित तरीके से अनेक खेल–कूद प्रतियोगिताओं और दंगलों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों ने गाँव की युवा शक्ति को स्वस्थ कार्यों की ओर प्रेरित किया और इस प्रकार समाज के प्रति दायित्व–बोध से भरे उत्साही नवयुवकों की एक टोली विकसित हो गई। भंवरसिंह राजपूत ने अब 'सरस्वती कला संघ' नाम से एक और संस्था का गठन किया। भंवरसिंह इस संस्था के संरक्षक बने, श्री पृथ्वीराज साहनी अध्यक्ष, श्री उपदेश शुक्ल महासचिव, सरदार श्री सोहन सिंह जी कोषाध्यक्ष और श्री परमानन्द सेतिया प्रतिनिधि। इन पाँचों मित्रों ने मिल–जुल कर नांगल में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का नियमित कार्यक्रम प्रारम्भ किया। नांगल में रामलीला के मंचन का प्रथम श्रेय इस संस्था को जाता है। इस मंच से अनेक खेल–कूद प्रतियोगिताओं और दंगलों का आयोजन किया गया, जिसमें आस–पास के गाँवों के युवाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। भंवरसिंह जी के प्रयत्नों से नांगल में, सामाजिक दायित्व और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का भाव तो फलने–फूलने लगा था, किन्तु सफाई के प्रति जागरूकता के लिये प्रयत्न करने शेष थे। उनके घर के पीछे का आज का पार्क तब गांव का कूड़ाघर बन चुका था। बार–बार पार्क की सफाई करवाने और लाख मना करने पर भी कूड़ा यहाँ डाला ही जाता रहता था। समाज और समूह मनोविज्ञान को समझने वाले भंवरसिंह जी ने इसकी सफाई करने का ऐसा स्थायी और कारगर उपाय सोचा कि उसके बाद यह स्थान पवित्रता का केन्द्र बन गया। तब भंवरसिंह ने यहाँ पाँच–कुण्डी महायज्ञ का आयोजन किया जिसमें पुरोहित मथुरा के सिद्ध ब्रह्मचारी रहे और गाँव के लगभग सभी सम्मानित गृहस्थ यजमान बने। पंद्रह दिवस तक चलने वाले इस अनुष्ठान में गाँव के लगभग प्रत्येक परिवार की भागीदारी रही। उस दूरदर्शी युवा की सात्विक सोच के परिणाम स्वरूप

अब यह पार्क सबके लिये स्वास्थ्य–साधना–स्थल बन गया है।

भंवरसिंह जी का बचपन चाँदी के चम्मच वाली सुविधा वाला नहीं रहा था। जब उन्होंने मैट्रिक बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की तब तक उनका विवाह हो चुका था। परिवार का पूरा दबाव था कि वे भी अपने साथ के और लड़कों के समान कचहरी, अस्पताल, दिल्ली परिवहन या ऐसे ही किसी दफ्तर में दफ्तरी, चपरासी, खलासी वार्डब्वाय या ऐसी ही कोई नौकरी कर लें, क्योंकि तब परिवार और गाँव वालों की सोच का दायरा बहुत सीमित था। कॉलेज की पढ़ाई को तब के आम किसान, परिवार के लिये फालतू का खर्चा या खतरा समझता था। दबाव गंभीर था, एक बार फिर से उनका जीवन दोराहे पर आ गया था, पर दूरदर्शी भवंर सिंह ने हालात से समझौता करने के स्थान पर उनका मुकाबला करने वाला विकल्प चुना। आप रोज सुबह तीन या चार बजे उठ कर खेतों और पशुओं से जुड़े कामों को पूरा कर सुबह आठ बजे दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़ कर बड़ौत जाट कॉलेज जाते थे और परीक्षा के लिये बड़ौत में रहने वाली अपनी बड़ी बहन तथा सरपंच स्व० चौ० बिद्धीसिंह जी की पत्नी स्व० परमेश्वरी देवी जी के घर पर रूका करते थे। बड़ौत कॉलेज से इंटर की परीक्षा पास करने के बाद मेरठ कॉलेज से आपने बी.ए. और फिर यहीं से पहले 'अर्थ–शास्त्र' विषय में और इसके बाद में 'समाज विज्ञान' विषय में एम. ए. किया। आपका समाज विज्ञान परीक्षा के लिये तैयार किया गया लघु शोध–प्रबंध विश्व–विद्यालय के द्वारा विशेष रूप से सराहा गया। यूनिवरसिटी की परीक्षा पूरी करने पर लगा कि संघर्ष यात्रा का एक पड़ाव पूरा हो गया। भंवरसिंह जी अब स्वास्थ्य और परिवार–कल्याण विभाग में एक्सटेन्शन ऑफिसर के पद पर कार्य करने लगे। वे इस पद पर रहते हुए भी अपने गांव की प्रगति के लिये अधिक तत्पर रहते थे। इस दौरान आपने नांगल में अनेक शिक्षाप्रद फिल्मों का प्रदर्शन कराया और कठपुतली के रोचक पर शिक्षाप्रद कार्यक्रम आयोजित किये। यह समय कुछ सहज रफ्तार वाला था पर संघर्षों का दौर तो भंवरसिंह की प्रतीक्षा ही करता रहता था। संयुक्त परिवार में विघटन का दौर आया। अभावों का एक नया अध्याय शुरू हुआ। परिवार की जिम्मेदारी, फिर आपात्काल की मार, राजनीतिक असमंजस का दौर यानि कुल मिलाकर भंवरसिंह के सामने फिर से जीवन शुरू करने का प्रश्न आ खड़ा हुआ।

दूरदर्शी भंवरसिंह जी को हालात को अपने अनुकूल करना आता था। वे भविष्य की जरूरतों को पहचान कर समयानुकूल निर्णय लेकर आगे आने वाली अनेक परिशानियों का रास्ता ही बंद कर देते थे। घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में ताल बैठाते हुए आप अपने बच्चों के स्वास्थ्य और समुचित विकास की ओर भी पूरा ध्यान दे रहे थे। बड़े बेटे चि० प्रद्युम्न की अनथक परिश्रम और काम के प्रति समर्पण की भावना को देख कर उसके लिये लेबल बनाने की फैक्ट्री लगाने का विचार किया और छोटे पैमाने पर यह काम शुरू किया गया था परन्तु चि० प्रद्युम्न की संघर्ष–शीलता और भंवरसिंह जी की कभी भी हिम्मत न हारने वाली मानसिकता और उत्साह चेतना ने फैक्ट्री को घोर संकट की स्थितियों में भी संभाला कि दो वर्षों में ही यह फैक्ट्री उद्योग–क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगी और चि० प्रद्युम्न अठारह

वर्ष की आयु में ही एक उभरता हुए सफल उद्योगपति के रूप में पहचाना जाने लगा। पिता ने उनके लिये समाज में ऊँचे सम्मान का सपना संजोया था और वे चि० प्रद्युम्न को समाज की आचार संहिता के लिये भी प्रशिक्षित कर रहे थे और पुत्र भी पिता के आशीर्वाद और अपने अनथक और सतत परिश्रम वाली वृत्ति के चलते आज श्री प्रद्युम्न द्वारका विधान–सभा क्षेत्र से विधायक हैं। मंझले बेटे चि० प्रवीण को आप डॉक्टर बनाना चाहते थे और उनके लिये सागरपुर में एक हॉस्पिटल बनाना चाहते थे क्योंकि तब सागरपुर में कोई अच्छा चिकित्सालय नहीं था। छोटे बेटे चि० अमोघ को वे भारतीय प्रशासकीय सेवा के क्षेत्र में भेजना चाहते थे किन्तु नियती की मंशा के आगे बहुत कुछ अनकिया रह जाता है जो शायद आने वाली जमातों के लिये एक दायित्व–बोध का तकाजा बन जाता है।

इस समय चि० प्रवीण (कॉमर्स–ग्रेजुएट) फैक्ट्री संभाल रहे हैं और उनकी अद्भुत लगन के कारण वह छोटा सा उद्यम उपक्रम 'चौधरी लेबल फैक्ट्री' अब इंटरनेशनल पहचान पा चुका है। छोटे पुत्र चि० अमोघ एम.डी. डॉक्टर बन गये हैं और जनकपुरी में अपना क्लिनिक चला रहे हैं। बेटी सौ० उमा अपना बुटीक चला रही हैं, यद्यपि पिता भंवरसिंह जी उनके लिये एक स्कूल खोलने की इच्छा रखते थे। भंवर सिंह जी लड़कियों की शिक्षा को लेकर बहुत संवेदन–शील थे। नांगल में एक अच्छे बालिका विद्यालय का सपना, वे अक्सर देखा करते थे। उनका हर सपना परिवार और अपने गाँव की खुशहाली के रंगों से भरा हुआ रहता था।

उदार मन भंवरसिंह जी अपने हर दूर–पास के रिश्तेदारों के सुख–दुख में तन–मन–धन से सहयोग करने के लिये तत्पर रहते थे और सभी रिश्तेदार उनके घर पर ही रूकना चाहते थे। जब उनकी माँ स्व० झण्डो देवी लकवा–ग्रस्त हालत में उनके पास रहने लगी तब ऐसे कई अवसर आये जब उन्होंने माता को नहलाने, उनके बाल बनाने से लेकर भोजन–दवा देने और मल–मूत्र के कामों को भी बड़ी ममता के साथ किया। यह घटना छोटी तो है पर इससे उनकी मातृ–भक्ति और सहन–शीलता का एक अनुकरणीय पक्ष सामने जरूर आता है। इसी प्रकार बात तब की है जब उनके घर में पहला टी.वी. आया। इस समय तक, शायद आस–पास के किसी घर में टी.वी. नहीं था और उन दिनों कार्यक्रम भी कम ही हुआ करते थे, किन्तु जिस दिन चित्रहार या फिल्म आनी होती थी तब उनका कमरा बच्चों–बड़ों और पर्दे वाली बहु–बेटियों से इस कदर भर जाता था कि कमरे की सब खिड़कियाँ दरवाजे खोलने पड़ते थे, पर घरवालों की असुविधा पर ध्यान न देते हुए उन्होंने इस पर कोई रोक नहीं लगाई। पास–पड़ोस में अगर किसी को पानी चाहिये तो उनके घर की पानी की मोटर घंटों चलती थी और उन्होंने इन सब सेवाओं के लिए अपने हित की चिन्ता नहीं की।

इसी प्रकार ऐसी घटनाएँ अनेक हैं जिनसे इनकी पर–दुख कातरता और संकट–ग्रस्त अजनबी की भी रक्षा में अपना सब कुछ भूल कर कूद पड़ने के स्वभाव का पता चलता है। राजनीति में धरने–प्रदर्शनों के दौर तो चलते ही रहते हैं। ऐसी ही एक प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने प्रदर्शनकारियों

पर लाठियाँ बरसानी शुरू कर दी तब सारे प्रदर्शन कारी इधर–उधर हो गये पर उनका किशन नाम का एक साथी, पैर में चोट के कारण पुलिस घेरे में आ गया और पुलिस ने उन पर लाठियाँ बरसानी शुरू कर दी। यह देख भंवरसिंह जी किशन पर ऐसे लेट गये कि लाठियों का प्रहार इन की पीठ पर पड़ने लगा और मित्रता की इस मिसाल को देख लाठियों वाले हाथ भी रूक गये। इसी प्रकार सर्दियों की एक शाम ढले जब भंवरसिंह जी घर लौट रहे थे तब गोपीनाथ–बाजार में प्रवेश करते ही उन्हें कुछ शोरगुल सुनाई दिया और उन्हें लगा कि यह शोर संकट की आवाज वाला है। शोर की आवाज की तरफ देखा तो धुंध में पैट्रोल पंप की तरफ कुछ हल–चल दिखी। उन्होंने अपना स्कूटर पंप की तरफ मोड़ा तो देखा कि व्हील–चेयर पर बैठे व्यक्ति पर तीन–चार लड़के घूंसे बरसा रहे थे, पास खड़ा सहायक घायल था और काँप रहा था। पलक झपकते ही भंवरसिंह जी ने उन लड़कों को झड़प मारी, लड़के पलटे और उलट कर इन पर वार करने लगे, पर वे जल्दी ही घबरा कर भाग निकले। अब भंवरसिंह जी ने पैट्रोल पंप के मालिक को देखा और परिचय से जाना कि श्री अजीत पूर्व सैनिक है और भारत पाक युद्ध में उनका सारा शरीर गोलियों से इस कदर छलनी हो गया था कि अब वे केवल देख–सुन और बोल भर पाते थे। देश–भक्त भंवरसिंह जी को उन दुष्टों को पुलिस को न सौंपने और उनके भाग जाने पर बहुत अफसोस हुआ। इस घटना के बाद तो वे लगभग रोज रात को उनके पास हो कर आते थे और तब से लेकर आज तक हमारा परिवार इसी पैट्रोल पंप से तेल लेता है और अजीत जी के लाख मना करने पर भी भंवरसिंह जी पैट्रोल के दाम चुकाते थे।

भंवरसिंह जी की संवेदना का एक पहलू और भी है जिसकी जानकारी सबको कम ही है। जिस संवेदना से अपने–पराये हर व्यक्ति के लिये अपनी सुरक्षा को भूल कर संकट के घेरे में कूद जाते थे उसी संवेदना के चलते उन्होंने नांगल के संयुक्त–परिवार के ढाँचे में आती दरारों को देख कर एक उपन्यास 'जुड़ते परिवेश' लिखा जिसकी भूमिका हिन्दी के मनोवैज्ञानिक–उपन्यासों के पुरोधा जैनेन्द्र कुमार ने लिखी और जो प्रकाशित भी हुआ। 'कथालोक' पत्रिका में भी सामाजिक विषयों पर आपने अनेक लेख लिखे। उनकी अनेक कविताएँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। समय ने उन्हें मोहलत नहीं दी अन्यथा उनकी समाज हित की अनगिनत योजनाएँ आज नांगल को राजधानी की शान बना देती। हमें इस मानव–मात्र और समाज–समर्पित व्यक्तित्व पर गर्व है, मान है तथा हम इस विभूति को श्रद्धा से नमन करते हैं। •

– डॉ० मालती

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
कठ० उ० 3.14
उठो, जागो, श्रेष्ठ (आचार्यों)
को पाकर ज्ञान प्राप्त करो।

विधायक द्वारका क्षेत्र

श्री प्रद्युम्न राजपूत

द्वारका विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री प्रद्युम्न राजपूत एक सफल उद्योगपति होने के साथ–साथ अपने क्षेत्र के चहेते नायक भी हैं। नई सोच और नये उत्साह से भरा उनका मन कदम–दर–कदम किसी नई मंजिल हासिल करने के लिये व्याकुल रहता है।

12 जुलाई 1963 में जन्मे श्री प्रद्युम्न राजपूत स्व० श्री भंवर सिंह राजपूत के चार बच्चों में सबसे बड़े हैं। दूरदर्शी पिता ने बालक प्रद्युम्न में वह ललक देख ली थी जिसे सही दिशा में विकसित किया जायेगा तो भविष्य में यह एक ऐसी मशाल बन जायेगी जिससे घर–परिवार और समाज रोशन होगा और दोनों का मस्तक गर्व से ऊँचा भी उठ जायेगा, यही कारण रहा होगा जिससे पिता का प्यार–दुलार, संभाल और फटकार भी आपके हिस्से में सबसे ज्यादा आई। पिता ने घर–परिवार के रोजमर्रा के सारे काम प्रद्युम्न राजपूत पर डाल दिये थे। घर–खर्च और पैसे संभाल की जिम्मेदारी भी इनकी ही रही। पिता अपने इस पुत्र के कठोर प्रशिक्षक रहे और श्री प्रद्युम्न राजपूत एक अनुशासित प्रशिक्षु के समान इनको स्वीकारते रहे।

श्री प्रद्युम्न राजपूत की स्कूली शिक्षा जनकपुरी डी ब्लाक के राजकीय विद्यालय से हुई। बारहवीं की परीक्षा देने के बाद जब सभी विद्यार्थी भविष्य के सपने संजोते अपनी मित्रमंडली के साथ मस्ती किया करते थे तब श्री प्रद्युम्न को उनके पिता स्व० श्री भंवर सिंह राजपूत ने उनकी रूचि को भांपते हुए मायापुरी की एक फैक्ट्री में काम सीखने को भेजने का निर्णय लिया। श्री प्रद्युम्न ने अपनी उम्र के तकाजों को किनारे रखते हुए अपने पिता के निर्णय को स्वीकारा। गर्मी–सर्दी बरसात को झेलते–झेलते प्रद्युम्न ने फैक्ट्री के छोटे से छोटे काम को बारीकी से सीखा। पुत्र की लगन और कठोर परिश्रम करने की क्षमता को देख पिता ने दो खड्डियों की मशीन के साथ 'चौधरी लेबल फैक्ट्री' की शुरूआत की। फैक्ट्री श्री प्रद्युम्न के हवाले कर दी। काम की यह शुरूआत छोटे पैमाने और साधारण स्तर की थी और संसाधन सीमित प्रकार के थे। कार्य के इस प्रारम्भिक दौर में श्री प्रद्युम्न राजपूत को आर्डर लाने, समय पर उन्हें पूरा करने तथा आर्थिक तंगी की परेशानियों से गुजरना पड़ता था। बार–बार की ऐसी समस्याओं से जूझते–जूझते श्री प्रद्युम्न हार–हार जाते थे। बार–बार पिता से सहायता मांगना भी उनकी गैरत को ठीक नहीं लगता था। पर कभी भी हिम्मत न हारने वाले पिता स्व० श्री भंवर सिंह जी ने पुत्र को विफलताओं को साहस से नाकाम करने का मंत्र दिया। असफलताओं को चुनौती समान लेकर उन पर विजय पाने की मानसिकता की नींव गहरी पड़ गई थी। मनोबल से मजबूत श्री प्रद्युम्न राजपूत उद्योग जगत में सबसे कम

वय में सफल उद्योगपति के रूप में पहचाने जाने लगे।

अब श्री प्रद्युम्न के पास एक लक्ष्य था फैक्ट्री का। घर से फैक्ट्री और फैक्ट्री से घर तक की यात्रा में ये अकेले थे, न कोई साथी न कोई मित्र। आपका विवाह दिल्ली की पुरानी सब्जीमंडी के आर्यपुरा के निवासी व्यापारी श्री नानक चंद और श्रीमती पुष्पा देवी की सुपुत्री सुश्री गायत्री से हुआ। श्रीमती गायत्री राजपूत ने दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया और संस्कृत विद्यापीठ से बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। श्री प्रद्युम्न राजपूत के सुपुत्र श्री अभिजीत मेधावी छात्र हैं और आपने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित बी.बी.ए. पाठ्यक्रम की उपाधि प्रथम श्रेणी से प्राप्त की है। संप्रति आप एम.बी.ए. के लिये अध्ययनरत हैं। पत्नी और पुत्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली प्रकार से निभाते हुए और अपनी पत्नी की इच्छा का सम्मान करते हुए आपने उनके लिये अपनी दिवंगत माता के नाम से नांगल में "सरस्वती आँचल स्कूल" की स्थापना की। इस स्कूल की हेडमिस्ट्रेस उनकी पत्नी श्रीमती गायत्री राजपूत हैं तथा अब जनकपुरी डी ब्लाक तथा सागरपुर में भी इस स्कूल की शाखाएं खुल गई हैं। आपकी पत्नी श्रीमती गायत्री राजपूत इन तीनों स्कूलों का कार्यभार कुशलता से संभाल रही हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पहचान दर्ज करवाने के बाद लक्ष्यों को हासिल करने का उनका उत्साही मन अब नये लक्ष्य की तलाश में था। इसके लिये आपने अपने पिता की सामाजिक–राजनीतिक आशाओं का दामन थामा। अब तक आपका छोटा भाई प्रवीण राजपूत भी दिल्ली विश्वविद्यालय से कॉमर्स ग्रेजुएट हो चुका था और फैक्ट्री में सहयोग कर रहा था। श्री प्रद्युम्न राजपूत ने अपने छोटे भाई की समझ का आकलन करते हुए फैक्ट्री का कार्यभार श्री प्रवीण राजपूत को सौंपा। श्री प्रवीण राजपूत को फैक्ट्री के सुचारू संचालन में उनकी वकील पत्नी श्रीमती रेनू राजपूत ने पूरी सहायता की। दोनों पति–पत्नी ने फैक्ट्री का अंतर्राष्ट्रीय विस्तार किया। इस प्रकार घर–परिवार तथा कार्य–व्यापार की तरफ से निश्चिँत होकर श्री प्रद्युम्न ने सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भाग लेने का निर्णय लिया।

सामाजिक कार्यों में तो आप अपने पिता के साथ ही तन–मन–धन से जुड़े रहते थे। उनके चुनावी राजनीति के प्रति रूझान को जान कर क्षेत्र के समर्थकों ने उनके लिए काम करना शुरू कर दिया। राजनीतिक पार्टी का टिकट पाना आसान काम नही होता पर श्री प्रद्युम्न राजपूत के कार्यों और उनके समर्थकों के आग्रह को देख भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें द्वारका विद्यानसभा से विधायक पद का प्रत्याशी बनाया। इस विधान सभा में भारतीय जनता पार्टी का जनाधार नगण्य सा था। पिछले चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी इस क्षेत्र में अपनी जमानत भी नहीं बचा सके थेऔर युवा प्रत्याशी श्री प्रद्युम्न राजपूत को वर्ष 2007 में होने वाले विधान सभा चुनाव में सफलता नही मिल पाई पर इस चुनाव में उनको तीस हजार से भी अधिक वोट मिले।

वोटों के इस आँकड़े ने भारतीय जनता पार्टी को उत्साह से भर दिया। पराजय का मलाल तो रहता है पर सब के मन में आशा की किरणें चमकने लगीं थी, क्योंकि प्रद्युम्न राजपूत के करिश्माई व्यक्तित्व ने पार्टी को एक सशक्त जनाधार दिलवाया था और फिर जब इसी क्षेत्र में मध्यावधि चुनाव की घोषणा हुई तो लंबे और गंभीर विचार विमर्श के बाद श्री प्रद्युम्न राजपूत को भारतीय जनता पार्टी ने अपना प्रत्याशी बनाया। वर्ष 2009 में आप भारी बहुमत से विजयी होकर द्वारका विधान सभा के विधायक बन गये। चुनाव तो जीत लिया पर वे जानते थे कि विजय की उपलब्धि के साथ अब उनके सामने लम्बे समय से राजनीतिक उपेक्षा और बदहाली के शिकार क्षेत्र के विकास और क्षेत्र के निवासियों की बुलन्द उम्मीदों की चुनौतियों का अंबार खड़ा है। चुनाव जीतने के बाद क्षेत्र ने उन्हें सिर माथे रखा और श्री प्रद्युम्न ने भी अपने इस कार्य–क्षेत्र को अपने व्यक्तिगत जीवन से ऊपर रखा। घर परिवार से लेकर हर रिश्ता और उनका सारा समय अब द्वारका विधानसभा क्षेत्र के लिये ही था। पत्नी, परिवार और सभी संबंधियों के लिये अब आपके पास समय कम ही रहता है और परिवार ने भी उन्हें क्षेत्रार्पित जैसा ही कर दिया है। एम.एल.ए बनने के बाद उन्होंने अपने परिवार की एक और जिम्मेदारी अपने सबसे छोटे भाई डॉ. अमोघ के विवाह और उनके क्लिनिक की स्थापना कर पूरी की।

राजनीति की सभी तरह की उठा पटक से दो दो हाथ होते हुए वे निरन्तर क्षेत्र के विकास के लक्ष्य पर ही केन्द्रित रहते हैं। विपक्ष में रहते हुए भी आपने अपने क्षेत्र के विकास कार्यों के लिये धनराशि जुटाई। इसके लिये उन्हें सत्ता पक्ष के अधिकारियों से काफी जूझना पड़ता था और सत्ता पक्ष को भी इस युवा विधायक की समाज निष्ठा को मान देना पड़ता था।

प्रद्युम्न राजपूत अब पूरी तरह से समाज समर्पित नायक हैं। बिरादरी ने आपको अपने सिर माथे रखा है और आपने भी बिरादरी का मान बढ़ाया है। क्षेत्र और बिरादरी को आपसे बहुत उम्मीदें हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि यह दो–तरफा रिश्ता हमेशा ऐसा ही ताजा दम बना रहेगा।•

– डॉ० मालती

ऋषि दयानन्द के उपकार

1. एक ईश्वरोपासना, एक सन्ध्या।
2. वेदों का प्रचार तथा ऊँचा स्थान।
3. स्त्री–जाति का सम्मान।
4. विधवाओं का पुनरुद्धार।
5. शुद्धि का द्वार खोल देना।
6. अछूतों का उद्धार।
7. संस्कृत का प्रचार।
8. वैदिक संस्कारों की एकता।
9. जातीय प्रेम तथा सहानुभूति।
10. स्वदेश–प्रेम और भक्ति।
11. बाल–विवाह को रोकना।
12. प्राचीन आर्य–ग्रंथों से प्रेम।

प्रतिज्ञा, गीत, राष्ट्रगीत आर्यवीर की प्रतिज्ञा

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।।

उठाए ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे।
उसी की लिए हम जिएँगे, मरेंगे।।

आदर्श शिक्षक

स्व० पं० शिवदत्त शर्मा

पं० शिवदत्त शर्मा का जन्म नांगल राया गाँव में माता भगवान देई के उदर से फरवरी 1934 में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. (आनर्स) व एम.ए. (इंगलिश) किया। आप दिल्ली राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में वायस प्रिंसिपल थे। अपने छोटे से जीवन में आप अपना अधिकांश समय वृद्धों, बीमारों और घायलों की सेवा में लगाते थे। आप पशु प्रेमी भी थे और जहाँ कहीं बीमार पशुओं को देखते थे उन्हें अपने खर्चे से पशुचिकित्सालय ले जाते थे और अपनी ओर से ही उनका इलाज कराते थे। इससे निरीह व निस्सहाय पशुओं के प्रति एक नई जाग्रति गाँव में आई। लेकिन इस अद्भुत प्रतिभाशाली शिक्षाविद का छोटी आयु में ही निधन हो गया। महीने में कम से कम एक सप्ताह आप आर्यसमाज नांगलराया के साप्ताहिक सत्संग में अवश्य आते थे और 'मन मन्दिर में गाफिला झाड़ू रोज लगायाकर' गीत तन्मय होकर गाया करते थे।•

सत्यमेव जयते नानृतम् ।
मुण्डक० उ० 3.2.4
सत्य की ही जय होती है, झूठ की नहीं।

मेजर जनरल श्री दत्त शर्मा

विनम्रता, सौम्यता, शालीनता, संयम, मृदुभाषिता, कर्त्तव्यनिष्ठा व राष्ट्र सेवा की प्रतिमूर्ति सेना में मेजर जनरल श्री दत्त शर्मा का जन्म नांगल राया ग्राम में पिता स्व० पं० रामस्वरूप शर्मा और माता भगवान देई के घर में दिनांक 9 सितम्बर 1938 को हुआ। आपने अपनी शिक्षा बी.एस.सी. (आनर्स) तक प्राप्त की। इसके पश्चात आई.एम.ए. परीक्षा में शामिल हुए और समग्र भारत में वरीयता क्रम में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

अपने 33 वर्ष के सेवा काल में आप विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे। यू.एस.एस.आर. में प्रशिक्षण लेने के लिये भी लीडर के रूप में आप चुने गए। नाइजीरिया में आप दो वर्ष तक रहे। आप सेना से मेजर जनरल के पद से सेवामुक्त हुए और अपनी भविष्यनिधि में से ढ़ाई लाख रूपये की राशि युद्ध–विधवा निधि में देकर घर लौटे। क्रोध और अहंकार जैसे दोष आपको छू तक नहीं सके। आप मितभाषी हैं और जहाँ आवश्यकता होती है वहाँ आप घंटों तक बोलने की क्षमता रखते हैं। आपका जीवन सन्यासियों जैसा है और विरक्त रहकर भी आप अपने कर्त्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा के साथ कर रहे हैं।•

स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा

आर्यसमाज नांगलराय के संस्थापक सदस्य स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा के पुत्र स्व० वेद प्रकाश वर्मा का जन्म 29.06.1938 को नांगलराय गाँव में हुआ। आपने 1963 में लखनऊ राजकीय कालेज से वास्तुकला में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में पंजाब सरकार में योजना सहायक के रूप में नौकरी की फिर भारत हैवी इलैक्ट्रिकल, रानीपुर में वास्तु सहायक के पद पर कार्य किया। बाद में 1972 में देहरादून में निवास करते हुए अपना स्वयं का वास्तुकला का कारोबार प्रारम्भ कर दिया। अनेक संस्थाओं के नक्शे बनाये और देहरादून के जानेमाने वास्तविदों में अपना प्रमुख स्थान बनाया। आपको अखिल भारतीय वास्तुविद संस्थान मुम्बई से आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको आध्यात्मिक साहित्य के स्वाध्याय और लिखने का शोक था और आप वैदिक सिद्धान्तों के अनुकरण पर अधिक जोर देते थे और आर्यसमाज से सदैव जुड़े रहे। कर्म को ही पूजा समझते हुए आप अपने पेशे के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। आपके पुत्र श्री गौरव ने भी वास्तुकला में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग दिया। दुर्भाग्यवश श्री वेद प्रकाश का दिनांक 30.03.2012 को बीमारी के बाद निधन हो गया।•

श्रीमती शुभा वर्मा

स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती शुभा का जन्म 29.11.1947 को मेरठ नगर में स्वाधीनता सेनानी श्री मुसद्दी लाल काम्बोज के घर में हुआ। श्रीमती शुभा वर्मा इस समय भारत विकास परिषद द्रोण की अध्यक्षा, दीन दयाल उपाध्याय प्रतिष्ठान की उपाध्यक्षा और भाजपा महिला मोर्चा, उत्तराखण्ड की पूर्व कार्यकारी सदस्य हैं। आपको भारत विकास परिषद, लायन्स क्लब आदि अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। आपने 1966 में मेरठ से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। निर्धन परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षण देना आपका शोक है। सेवा, सहयोग, सम्पर्क, समर्पण और संस्कार आपके जीवन का पाँच सूत्री उद्देश्य है। और अन्तिम उद्देश्य है राष्ट्र सेवा और राष्ट्र भक्ति। आपके मुख्य कार्यक्रम हैं :– सामूहिक संगीत प्रतियोगिता, लोकनृत्य प्रतियोगिता, कवयित्री सम्मेलन, जेल निरीक्षण और निर्धन लड़कियों के विवाह की व्यवस्था। अपँगों को कृत्रिम अंग और श्रवण यन्त्र देने का काम भी आप बखूबी करती हैं। महिलाओं का उत्थान, बाल विवाह विरोध, अन्धविश्वास और पाखण्ड जैसी कुप्रथाओं को दूर करने में आप निरन्तर जुटी रहती हैं। अपनी आत्मा की आवाज पर अमल करना ही सत्य और सत्य को ही आप ईश्वर की आवाज समझती हैं। आपने रामायण के आदर्श को ही अपनी प्रेरणा माना है। रामायण की निम्न चौपाई आपके जीवन का आदर्श वाक्य है–

धीरज धर्म मित्र अरू नारी।
आपत्काल परखिये चारी।।•

मेजर जनरल अनिल वर्मा

1. पूज्य स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा एवम स्व० श्रीमती हीमती देवी की अन्तिम सन्तान और भाई–बहनों में सबसे छोटे श्री अनिल वर्मा का जन्म 16 मार्च 1955 को तिमारपुर, दिल्ली में हुआ।

2. माता–पिता की धार्मिक प्रवृति के कारण, परिवार में आर्य समाज का सत्संग, हवन, भजन, कीर्तन तथा साधु, महात्मा का आना जाना लगा रहता था। इसके कारण पूरा परिवार सामाजिक, धार्मिकता के माहौल में पला तथा सभी बच्चों में एक अच्छा इंसान और नागरिक बनने की नीवें हमारे माता–पिता ने डाली। माता–पिता का परिश्रम, सोच तथा मार्ग दर्शन से सभी भाई–बहन अपने जीवन की सफलता के अंजाम पर पहुँच सके।

3. अनिल वर्मा ने 1960 से 1972 तक अपनी स्कूल की शिक्षा St. Xaviers School दिल्ली में की। All India Higher Secondary परीक्षा में कामर्स में अखिल भारत में 12वां स्थान हासिल करके Scholarship प्राप्त की। 1972 से 1975 तक आप ने श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स दिल्ली युनिवर्सिटी से बी.काम (आनर्स) की डिग्री प्राप्त की। इस बीच देश सेवा का जज्बा उनके हृदय में घर कर गया था और उन्होंने सेना में आफिसर कमीशन लेने का मन बना लिया। 1975 में यू.पी. एस.सी. और एस.एस.बी. की आफिसर ट्रेनिंग स्कूल कमिशन की परीक्षा में उन्होंने अखिल भारत में प्रथम रैंक प्राप्त किया और अक्टूबर 1975 में ओ. टी.ए. में प्रशिक्षण प्रारम्भ किया। कठिन परिश्रम और ईश्वर कृपा से अगस्त 1976 में ओ.टी.ए.से सभी यूनिट में दूसरे स्थान पर पास आउट किया और भारतीय थल सेना में सेकिन्ड लेफ्टीनेन्ट के रैंक पर 20 लान्सर रैजिमेन्ट में कमिशन प्राप्त किया।

4. 1976 से 2012 तक सेना की नौकरी में उन्होंने देश के चारों कोनों में अलग–अलग पोजिशन और ओहदों पर काम किया। उनमें से कुछ उल्लेखनीय पोस्ट / कोर्स इस प्रकार हैं :–

क) 1989 से 1991 तक इंडियन मिलिट्री अकेडमी देहरादून में इंस्ट्रक्टर क्लाश–बी.

ख) 1991–92 में डीफेंस सर्विस स्टाफ कॉलेज विलिंगटन कोर्स किया तथा एम.एस.सी डिफेंस स्ट्डीस की डिग्री प्राप्त की।

ग) 1998–2000 तक कर्नल की पदोन्नति के पश्चात 76 आर्मर्ड रेजिमेन्ट की कमान संभाली और ओ.पी. विजय में हिस्सा लिया।

घ) 2002 में ओ.पी. पराक्रम में हिस्सा लिया।

ड़) 2006–2007 में ब्रिगेडियर की पदोन्नति

के उपरान्त एक आर्मर्ड ब्रिगेड की कमान संभाली।

च) 2009 में आर्मी कमांडर दक्षिण कमांड, पूने का प्रंशसा पत्र प्रदान किया गया।

छ) सेना में उच्च कोटि की सेवा के लिए 2010 और 2011 में दो बार चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ का प्रंशसा पत्र प्रदान किया तथा अक्टूबर 2010 में मेजर जनरल रैंक पर पदोन्नति हुई।

5. आप की धर्मपत्नी श्रीमती कविता वर्मा ने बी.ए., एम.ए. अँग्रेजी और बी.एड. किया है और आर्मी स्कूल में अलग–2 जगह कई साल अध्यापिका का काम किया है। उनकी प्रेरणा तथा अथक परिश्रम से दोनों पुत्रों ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की। ज्येष्ठ पुत्र करण ने बी.ई करके एम.बी.ए. किया और नोयडा की एक कंपनी में कार्यरत है। उसकी पत्नी शिल्पी भी बी.ई. करके जर्मनी में काम कर रही है। छोटे पुत्र अभिषेक ने बी.ए. एल.एल.बी करने के बाद 2010 में सिविल सर्विस परीक्षा पास की और आई.आर.एस. में कस्टम एण्ड एक्साईज विभाग में सहायक कमिशन की पोस्ट प्राप्त की।•

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः ।।
यजु० 42.2

काम करते हुए ही
सौ वर्ष जीने की इच्छा करें।

स्व० श्री बाल किशन तँवर ए.सी.पी.

श्री बालकिशन तँवर बाबू रूपचन्द जी के तीसरे नम्बर के पुत्र थे। आपका जन्म 27.10.1931 को नांगल गाँव में हुआ। आपने रेवाड़ी अहीर कालेज से एम.ए. किया। खेलकूद में आपकी विशेष रूचि थी। बैडमिन्टन, दौड़ में आप प्रथम रहते थे और अनेक मैडल प्राप्त किये। आप पुलिस विभाग दिल्ली में ए.एस.आई. के पद पर चौकी इंचार्ज नियुक्त हुए और अलीपुर व नरेला में आपकी प्रथम नियुक्ति हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू के आवास पर उनकी सुरक्षा में काफी अवधि तक ए.सी.पी. के रूप में आपकी तैनाती रही। आप प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के रूट इंस्पैक्टर भी रहे। राष्ट्रपति की ओर से पुलिस मैडल से भी आपको सम्मानित किया गया। सन् 71 में पाकिस्तान से युद्ध (बंगलादेश मुक्ति संग्राम) से पूर्व अमेरिका के राष्ट्रपति निकसन से मिलने जब इंदिरा गाँधी गई तो उस टीम में भी आप उनके साथ गये। इन्दिरा गाँधी की हत्या के बाद उनकी मृत्यु की खोजबीन हेतु स्पेशल टीम में आपको अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ खोजबीन अधिकारी की मान्यता मिली। 27.8.1990 को रात्रि के समय सोते हुए हृदयाघात से आपका निधन हो गया।•

— भगवानदास

स्व० कर्नल सुरेन्द्र सिंह तँवर

श्रीमती ऊषा तँवर
धर्म पत्नी
स्व० सुरेन्द्र तँवर

श्री सुरेन्द्र सिंह तँवर जब सैनिक सेवा में आये तो केवल मैट्रिक ही पास थे। सेवा काल में ही आपने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आपका जन्म चौ० छतर सिंह के घर में माता रामप्यारी के उदर से नांगल राया गाँव में 27 नवम्बर 1948 को हुआ। श्री सुरेन्द्र सिंह को 29 अप्रैल 1973 को कमीशन प्राप्त हुआ। आपको सेना से

निम्नलिखित मैडल प्राप्त हुए :–

1. शौर्य सेवा मेडल
2. जे एण्ड के
3. 9, 20430 वर्ष एल.एस.एम.
4. 50 वीं आर्मी (I) मैडल
5. सी.ओ.ए.एस. कमोडोशन कोर

आपका विवाह 26 जून, 1977 को श्रीमती उषा के साथ हुआ। आपके एक पुत्री गरिमा और एक पुत्र राहुल हैं। आपका हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी भाषा पर अधिकार था। श्री सुरेन्द्र सिंह मिलनसार, सेवाभावी व सरल स्वभाव के धनी थे। किसी कार्य को छोटा बड़ा नहीं समझते थे। कर्नल जैसे बड़े पद पर रहते हुए भी घर की सफेदी आदि स्वयं कर लिया करते थे। सेना में अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए अपने स्वास्थ्य की भी उपेक्षा करते थे। इसी कारण हृदयाघात हुआ और सैनिक अस्पताल में एन्जियोग्राफी कराते समय पुनः हृदयाघात हुआ और दिनांक 8 फरवरी, 2000 को 51 वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया।•

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। 1।।
हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन–वृष्टि को।।

सं गच्छध्वं सं वदध्वंस सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। 2।।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।3।।
हों विचार समान सबके चित्त–मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। 4।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख–सम्पदा।।

नरेश कुमार राणा

जन्मतिथि : 01.03.1970
जन्म स्थान : उत्तर प्रदेश
शिक्षा : बी. काम (आनर्स), सी.ए., सी.एस
स्थाई पता : डब्ल्यू जैड–310, नांगल राया, नई दिल्ली–110046
व्यवसाय : Director, Vishwas Fincop Services (P) Ltd. Member : NSE, BSE, NSEL, MCX, CDSL
पत्नी का नाम : श्रीमती विजय रानी, एम.ए., बी. एड, शिक्षक
पुत्र : विभांशु, निपुन

विशेष उपलब्धियाँः–
संरक्षक सदस्य, सत्यार्थ संदेश, मासिक पत्रिका नवलखा मंडल परिवार, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान)। आप आर्यसमाज नांगलराय के वार्षिक लेखा–जोखा का प्रतिवर्ष निःशुल्क आडिट करते हैं।

दूरभाष : 47115526 मोबाईल : 9810066130
ई–मेल : naresh@vishwasonline.com

श्री राम नारायण

जन्मतिथि : 16.01.1927
जन्म स्थान : नांगल राया गाँव
शिक्षा : रतन प्रभाकर, 1949 में जेल काटी, 46 में आई.टी.सी किया इन्द्रप्रस्थ गुरूकुल, ओ.टी.सी

व्यवसाय : कुरूक्षेत्र में कुर्सी का कारखाना। 1960 में बागीची में कपड़े की दुकान रामशरण जी की दुकान में खोली। आपने बताया कि पंखा रोड़ स्कूल 1940 से पहले से चल रहा है। आप आर. एस. एस. के पुराने स्वयं सेवक हैं। आपने वित्तीय कम्पनी (रामसिंह क्यामपुर के साथ चलाई)

पत्नी का नाम : श्रीमती परसन्दी देवी, भगवान देई
पुत्र : सुखवीर सिंह, यशपाल सिंह, नरेन्द्र सिंह

स्वाधीनता सेनानी

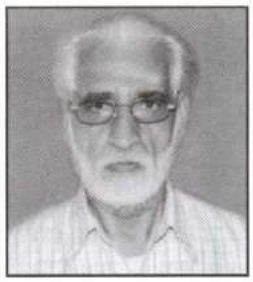

श्री के० के० भाटिया

जन्म तिथि : 24 अगस्त 1929
जन्म स्थान : गाँव व पोस्ट कोरीके (गुलु शाह) जिला–सियालकोट (अब पाकिस्तान में)
योग्यता : एम० ए०, डिप्लोमा लाईब्रेरी सर्विस, डिप्लोमा जर्निलिज्म, एम. लिबहीर्फोमेशन सर्विस (पूर्व डिफेन्स सर्विसिस आर्मि एयर फोर्स)
धर्मपत्नी : स्व० श्रीमती सीता रानी
पुत्र : विनोद भाटिया
पुत्रियाँ : इन्द्रा भाटिया, स्नेह भाटिया

श्री के. के. भाटिया सुपुत्र स्व. एफ. सी. भाटिया निवासी डी–1 सी/85 बी, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058 को भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए उनके द्वारा राष्ट्र के प्रति दी अमूल्य सेवाओं के लिए आर्यसमाज नांगलराया द्वारा मानक स्वाधीनता सेनानी के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए सम्मानित किया गया।

श्री के. के. भाटिया ने ए. सी. एम. ए. मेरठ छावनी में अपने कार्यकाल के दौरान 16 अगस्त 1946 के दिन आई. एन. ए. अधिकारी मेजर जनरल शाहनवाज़, कैप्टन ढिल्लों और कैप्टन सहगल के कोर्ट मार्शल किये जाने के विरूद्ध निकाले गए विरोध प्रदर्शन और हड़ताल में सक्रिय भागीदारी की थी जिसके कारण उन्हें अपनी नौकरी से बर्खास्तगी की सजा भुगतनी पड़ी। वर्ष 1946 में अपने निलंबनकाल में भी मेरठ शहर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में एक स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएं दिए जाने के फलस्वरूप इन्हें विदेशी शासकों के आक्रोश का भाजन बनना पड़ा।

श्री के. के. भाटिया ने अपना जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित किया हुआ है। तिहाड़ जेल की महानिदेशक रही श्रीमती किरण बेदी के कार्यकाल के दौरान ये जेल में बंद अपराधियों के शैक्षिक एवं नैतिकता सम्बन्धी सुधारों के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेते रहे।

विभिन्न अवसरों पर श्री भाटिया बालकों तथा विद्यार्थियों के लिए नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए ऐसी महत्वपूर्ण शिक्षाओं को ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। अपने जीवन के 89 बसन्त देख चुके श्री भाटिया की जीवनशैली अत्यंत सरल एवं अपनाये जाने योग्य है। ईश्वर उन्हें निरोग एवं शतायु जीवन दे ताकि वर्तमान युग में वे भारतीय संस्कृति के संवाहक के रूप में समाज को प्रेरणा देते रहे।•

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
यजु० 36.18
मैं मित्र की दृष्टि से सभी प्राणियों को देखूँ।

आर्यसमाज की कुछ विभूतियां

प्रज्ञाचक्षु, स्वामी विरजानन्द सरस्वती
आर्य समाज के क्रान्ति की प्रथम संक्रामियत, अनार्ष ग्रन्थों पर सदा-सर्वदा के लिए अप्रीति, अरुचि थी। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्तसूत्र तथा अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। श्री विरजानन्द जी दयानन्द को अपने परमप्रिय, प्रतिभावन शिष्यरत्न मानते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती (सन् 1824-1883)
आर्य समाज के प्रवर्तक वैदिकधर्म पुनरुद्धारक, आचार्यों के आचार्य परिवाट् सम्राट सकल शास्त्र निष्णात, अलौकिक एवं अद्भुत तार्किक, सर्वतंत्र स्वतंत्र, ब्राह्मण कुल भास्कर, दिग्गज मेधावी, मानवकुल पूज्य।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जन्म फाल्गुन वदी 13 सन् 1857–देहांत दिसम्बर 1926)
संन्यास से पूर्व नाम लाला मुन्शीराम, 12 अप्रैल 1917 को संन्यासी बने। आपने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र प्रारम्भ किया। शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय, मुसलिम हत्यारे द्वारा बलिदान।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती (सन् 1877-1954)
लाहौर उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य, दयानन्द मठ दीनानगर के संस्थापक, स्पष्ट वक्ता, अपरिग्रह के मूर्तिमान रूप, दृढ़ समय-पालक, कटु सत्य कहने के साहसी, शिरोमणि संन्यासी थे।

वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी (सन् 1855-1941)
त्यागी, तपस्वी, योगी, विरक्त, गौरवशाली, मूर्धन्य, स्थितप्रज्ञता की जीवित मूर्ति, परमार्थ संलग्न, परमश्रेष्ठ।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ (सन् 1894-1956)
वेदों के उद्भट विद्वान, अद्भुत व्याख्याता, प्रभावशाली लेखक, बहुभाषाविज्ञ, दर्शनाधिक वेदव्याख्या ग्रन्थ प्रणेता, दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मंडल के संस्थापक, अनेक अमूल्य ग्रन्थों के लेखक थे।

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय (सन् 1865-1928)
डी.ए.वी. कालिज लाहौर के स्तम्भ, मूर्धन्य वकील, कट्टर देशभक्त, निर्भीक शीर्षस्थ नेता, अद्भुत वाक्शक्ति, साहसी, उत्साही, बहुमुखी प्रतिभाशाली, क्रान्तिकारी थे।

महात्मा हंसराज (सन् 1864-1938)
दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कॉलिज लाहौर के अवैतनिक प्राचार्य, समाज-सुधारक, विद्या, धर्म, आत्मबलिदान, तप और त्याग के मूर्तिमन्त रूप, महामानव।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती (सन् 1762-1813)
संन्यास से पूर्वनाम श्री कृपाराम, 1901 में संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। आपने पाँच गुरुकुल स्थापित किए। महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) अत्यन्त प्रसिद्ध है। आपने 250 ट्रैक्ट लिखे, कर्म और योग पर विश्वास करते थे, दृढ़ ईश्वर-विश्वासी थे।

महात्मा नारायण स्वामी (सन् 1869-1947)
कर्मयोगी, आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, ऋषि-भक्त, लगनशील सेवाभावी, गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य, हैदराबाद सत्याग्रह-संग्राम के प्रथम सर्वाधिकारी, अनेक पुस्तकों के लेखक थे आप।

धर्मवीर पं. लेखराम (सन् 1858-1902)
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक, सुयोग्य उपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी, प्रतिभाशाली लेखक, आपने महर्षि दयानन्द की जीवनी लिखी है जो अभूतपूर्व है, उच्चकोटि के आस्तिक थे। वैदिक धर्म के प्रचार में अपने प्राणों की बलि दी।

महात्मा आनन्द स्वामी (सन् 1826-1920)
पंजाबी आर्यों के प्राण, प्रभावशाली एवं भक्ति भावी, व्याख्यानदाता, योग में कृत-परिश्रम, देश-विदेशों में वेद-प्रचारक, हैदराबाद सत्याग्रह संग्राम के तृतीय सर्वाधिकारी।

पं. प्रकाशवीर शास्त्री (सन् 1923)
आर्यसमाज के शीर्षस्थ राजनीतिक नेता, संसद सदस्य, कुशल प्रबन्धक, प्रभावशाली व्याख्यानदाता, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष।

महाशय राजपाल (सन् 1886-1929)
अत्यन्त सौम्य एवं शान्त प्रकृति वाले, परिश्रमी, कर्तव्यपरायण, धार्मिक पुस्तक प्रकाशक, 'रंगीला रसूल' ग्रन्थ के प्रकाशक, अमर बलिदानी हुतात्मा।

मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी (सन् 1864-1940)
आर्यसमाज के मनीषी, उत्कृष्ट विद्वान्, साधुस्वभाव, वैराग्य वृत्ति, तीव्र प्रतिभा, कुशाग्र बुद्धि, ऋषिभक्त, नास्तिक से आस्तिक।

ओ३म्

नांगलराया गाँव के प्रबुद्ध साहित्यकार

पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन

आपका जन्म नांगलराया में चैत्र शुक्ल चतुर्थी सं. 1979 तदनुसार 1 अप्रैल सन् 1922 में हुआ। आपके पिता का नाम पं० रामस्वरूप एवं माता का नाम भगवान देई था। दिल्ली से संस्कृत में बी. ए. (आनर्स) तथा एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। शास्त्री की उपाधि पंजाब से तथा व्याकरण, मध्यमा एवं साहित्य शास्त्री वाराणसी से किया। दिल्ली विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में संस्कृत विषय में आप सदा प्रथम रहे। एम.ए. में मूर्धस्थ होने के उपलक्ष्य में आपको विश्वविद्यालय पदक से पुरस्कृत किया गया। आपकी सहधर्मिणी का नाम श्रीमती विद्या देवी था। आपके तीन पुत्र – मनोज, मुकेश व मनीष हैं।

पत्रकारिता : – दिल्ली के प्रमुख अंग्रेजी दैनिकों – 'इण्डियन एक्सप्रैस' तथा 'द हिन्दुस्तान टाइम्स' में 36 वर्ष तक सफलतापूर्वक सम्पादन कार्य किया।

रचनायें:– आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनमें 'गीता कथा' (1988) 'गीतासार', 'चरैवेति चरैवेति', 'ठुकराया हीरा' प्रमुख हैं। 'चरैवेति चरैवेति' पुस्तक में उन्होंने लिखा कि भारत की जगद्गुरू की ख्याति और उसके लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से शनैः शनैः पतित होकर देश कैसे रसातल को पहुँचा। अपनी संस्कृति, सभ्यता, वैदिक ज्ञान, आत्मगौरव को भुलाकर भारत कैसे विदेशी राज्य की जंजीरों में फँसा। पश्चिमी सभ्यता से आक्रान्त होकर धर्मान्तरण के कुचक्र में फंसकर तन और मन से कैसे गुलाम बना, तुष्टिकरण की नीति से प्रभावित होकर भारत राष्ट्र की आत्मा का पतन हुआ, लेखक ने अपनी विद्वत्ता का परिचय देते हुए देश की मरी हुई आत्मा की झकझोरने का सफल प्रयत्न किया है। आपने लिखा कि जिस आर्यसमाज ने भारत की सोई हुई आत्मा को झकझोर कर जगाया उस आर्यसमाज को भी गाँधीजी ने 1924 में तीव्र आलोचना का लक्ष्य बनाया। लेखक के शब्दों में – 'आर्यसमाज तो मुस्लिम विरोधी न होकर मूलतः एक हिन्दु हितैषी ही अभियान था। शताब्दियों से हिन्दु समाज को घुन की तरह खाते हुए अनेकानेक दोषों को दूर कर, उसे उसकी प्राचीन वैदिक गरिमा प्रदान करना ही इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य रहा है। बालविवाह निषेध, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार, संस्कृत शिक्षा का प्रचार, छुआछूत निवारण, जाति प्रथा भँजन, शुद्धिकरण, हिन्दु संगठन प्रभृति व्यापक सुधारों द्वारा राष्ट्रोद्बोधन में किये गये आर्यसमाज के अविस्मरणीय योगदान की अनदेखी कैसे की जा सकती है।'

'गीता कथा' पुस्तक उनका ऐसा मील का पत्थर है जिसकी लोकप्रियता भारत में ही नहीं विदेशों में भी फैली है। आपने अपने जीवन में एकत्र की हुई 650 पुस्तकें संस्कृत विद्यालय में पं० रामस्वरूप धर्मार्थ ग्रन्थमाला कक्ष में दे दी। आर्यसमाज नांगलराया को भी कई पुस्तकें भेंट की। वास्तव में पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन केवल नांगल राया ही नहीं अपितु समूचे साहित्य जगत के रत्न थे।

स्त्री गौरव

डॉ० मालती

सादगी, विनम्रता और ज्ञान के साथ वाणी में कोमलता, विचारों में दृढ़ता तथा आत्म सम्मान की तेजस्विता के साथ सबके गुणों के प्रति सम्मान का भाव डॉ० मालती के व्यक्तित्व को स्त्री गौरव का सही हक़दार बना देते हैं। इन्हें देख कर प्रथम दृष्टि में कोई अनुमान नहीं लगा पाता कि दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिन्दी कॉलेज की प्राचार्या डॉ० मालती को क्षेत्रिय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने सम्मानित किया है और 'एसिया पेसिफ़िक हू ज़ हू' के पांचवे संस्करण में अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दर्ज करने वाली प्रतिभाओं में आपकी उपलब्धियों को भी अंकित किया गया है। 'विमन अचीवर्स' के लिये भी आपको नामांकित किया गया है।

हिन्दी तथा मराठी में एम.ए. तथा हिन्दी में पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त डॉ० मालती अपने छात्र जीवन से ही सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रही हैं। रेडियो से प्रसारित होने वाले युव–वाणी, बहनों के कार्यक्रम, ग्रामीण महिलाओं के कार्यक्रमों में उस समय के प्रश्नों पर होने वाली परिचर्चाओं में आप भाग लेती रहीं। अध्ययन पूरा करने के बाद आप दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुईं और इस कार्यकाल में अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ आपने कॉलेज की नाट्य एवं दूरदर्शन प्रस्तुतियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा दो बार डी.यू.टी.ए. की निर्वाचित सदस्या रहीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिन्दी कॉलेज की प्राचार्या डॉ० मालती की दिल्ली विश्वविद्यालय की विभिन्न कार्यकारी समितियों, एकेडमिक कमेटी, बी.ए. प्रोग्राम कमेटी तथा बी.ए. प्रोग्राम के 'भाषा, साहित्य और संस्कृति' 'फ़ाउन्डेशन कोर्स' की रचना कमेटी में भी सक्रिय भूमिका रही। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के रिसर्च–बोर्ड की सदस्य तथा आगरा विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर परीक्षा की परीक्षक रही डॉ० मालती के निर्देशन में दो छात्राओं ने दिल्ली विश्वविद्यालय से पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं में आपके अनेक समीक्षात्मक लेख प्रकाशित होते रहे हैं। वर्ष 2008 से साहित्य–अकादमी की पत्रिका 'समकालीन साहित्य' में आपका समीक्षात्मक लेख प्रकाशित हुआ है। इससे पहले भोपाल से प्रकाशित 'लोक–प्रशासन' पत्रिका में अंग्रेजी निबन्ध का आपके द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ तथा लगभग दस वर्षों तक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की पत्रिका वार्षिकी में आपके द्वारा किये गये मराठी कहानियों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुए। ओरियेन्ट–लॉनेगमैन के ब्लैक–स्वान प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'भाषा, साहित्य और संस्कृति' पुस्तक के संपादक–लेखक द्वय में से एक आप हैं। और प्रकाशन–विभाग द्वारा प्रकाशित 'अनुवाद और त्वरित भाषान्तरण' पुस्तक के लेखक–संपादक द्वय में आप एक हैं।

शिक्षा और लेखन के साथ आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रही हैं। दिल्ली सरकार की कमेटियों–संजय गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल तथा फ़िल्म प्री व्यूह कमेटी जैसी महत्वपूर्ण कमेटी की सदस्य रही हैं। अनेकानेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी डॉ० मालती इस समय भा.ज.पा. के शिक्षा प्रकोष्ट की सह संयोजक और इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती की कार्यकारी अध्यक्ष हैं।

गंभीर महत्व के पद पर कार्यरत व्यक्तियों पर समाज के प्रबुद्ध वर्ग की पैनी नज़र रहती है, पग–पग पर उनका आकलन होता रहता है और यही कारण रहा होगा कि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने डॉ० मालती की कार्यप्रणाली का आकलन करते हुए आपको सम्मानित किया। हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित संस्था 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' ने आपके कृतित्व को 'महादेवी वर्मा पुरस्कार' से सम्मानित किया। सामाजिक क्षेत्र में आपके योगदान को 'ह्यूमन राईट्स मिलेनियम अवार्ड 2000' तथा 'सेक्यूलर हारमनी अवार्ड 2001' से नवाजा गया। वर्ष 2002 में आपको अति प्रतिष्ठित 'भारत–गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया। अध्ययन–अध्यापन, लेखन और सामाजिक दायित्वों के साथ आपने माता और गृहिणी के दायित्व के निर्वाह में भी पूरी सजगता बरती। पति स्व० भंवर सिंह राजपूत सामाजिक–राजनीतिक चेतना प्रधान व्यक्ति थे, उनका अधिक समय सामाजिक दायित्वों के प्रति समर्पित था और घर–परिवार के अनुशासन, संस्कार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा डॉ० मालती की देख–रेख का विषय थे। कुशलता से समय प्रबंधन साधने के कारण आप घर–परिवार में गहरे अनुबंध और आत्मीयता की गहरी नींव डाल सकी। इस परिवार के बच्चे अपनी अलग पहचान रखते हैं और अपने साफ़–सुथरे आचार–विचार व्यवहार के कारण सबकी सराहना प्राप्त करते हैं। परिवार के संस्कारों के कारण ही इस परिवार के सभी बच्चे लक्ष्य–निष्ठ, सामाजिक और शालीन हैं। सबसे बड़े श्री प्रद्युम्न राजपूत विधायक हैं। उनकी पत्नी श्रीमती गायत्री उनके स्कूल में हैड–मिस्ट्रेस हैं, उनसे छोटे श्री प्रवीण परिवार के उद्योग कोर्लोबल बना चुके हैं और उनकी वकील पत्नी श्रीमती रेणू मायापुरी फ़ैक्ट्री संभाल रही हैं और सबसे छोटा डॉ० अमोघ तँवर और उनकी पत्नी डॉ० भारती तँवर जनकपुरी में अपना क्लिनिक संभाल रही हैं। बेटी उमा बुटिक चला रही हैं। सभी बच्चे परिवार, कारोबार और विरासत के दायित्वों का भली प्रकार से पालन कर रहे हैं। व्यक्ति, परिवार और कर्तव्य धर्म की संतुलित साधना में आत्मानुशासन, आत्मत्याग और आत्मिक दृढ़ता का होना अनिवार्य होता है और डॉ० मालती की यह धर्म–साधना उन्हें स्त्री–गौरव का सही हक़दार बनाती है।•

भगवान दास
पूर्व प्रधान आर्यसमाज नांगलराय एवं
पूर्व सम्पादक 'पालिका समाचार' (हिन्दी, उर्दू एवं पंजाबी)

आर्यसमाज

दयानन्द–सुत रूप में जन्मा आर्यसमाज।
जिसने बिगड़े राष्ट्र के सभी सुधारे काज।।
सभी सुधारे काज, स्वराज्य हमें दिलवाया।
उदित हुआ श्रुति–भानु, भ्रान्ति–तम दूर भगाया।।
रच सत्यार्थ प्रकाश' कँपाये सब मत फर्जी।
धन्य विश्वगुरू–सन्त प्रवर ऋषि दयानन्द जी।।

– भगवानदास

आर्यसमाज ही जिनका प्रेरणा स्रोत है

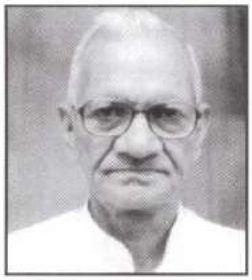

श्री भगवान दास

आर्यसमाज नांगलराया की सदस्यता दिसम्बर 1962 में ग्रहण की। तबसे आर्यसमाज के किसी न किसी पद पर रहकर आर्यसमाज की निरन्तर सेवा कर रहे हैं। साथ ही गत 35 वर्ष से आर्यसमाज नांगल राया के पुरोहित के रूप में रहते हुए आस पास के क्षेत्र में यज्ञ, संस्कार व प्रवचन आदि का कार्य कर रहे हैं।

जन्म व शिक्षा

जन्म 20.1.1937 को उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के तेड़ा ग्राम में हुआ। पिता स्व० श्री हरकेश सिंह व माता स्व० श्रीमती परमेश्वरी देवी थी। हाई स्कूल 1954 में आर्य विद्यालय तेड़ा (बागपत) से, इण्टरमीडिएट 1956 में दिगम्बर जैन कालेज बडौत से, बी.ए. 1967 में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से तथा एम.ए. (हिन्दी) 1969 में मेरठ विश्वविद्यालय से तथा हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद का डिप्लोमा 1970 में दिल्ली विश्वविद्यालय से किया। 1952 में 8वीं कक्षा में पढ़ते हुए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, वेद और ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था हो गई। पढ़ने में भी इसका एक बड़ा लाभ यह हुआ कि किसी भी विषय में निबन्ध या लेख लिखने में पारंगत हो गये तथा हिन्दी में 8वीं से लेकर एम.ए. तक प्रथम श्रेणी के अंक पाते रहे। चौथी कक्षा से ही संगीत के प्रति सम्मान था और संगीत के टूर्नामेंट में भाग लेते थे। ग्यारहवीं कक्षा से गीत व कविता लिखना प्रारम्भ किया।

बाल्मीकियों के घर यज्ञ

सन् 1956 में जैसे ही इन्टर की परीक्षा पास की पं० रामनिवास जी विद्यार्थी (संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित, उच्च कोटि के कवि व वेदों के गीतमय व्याख्याकार) के ब्रह्मत्व में गाँव तेड़ा में बाल्मीकियों के घर में यज्ञ में शामिल हुए व उनके घर यज्ञ शेष व प्रशाद ग्रहण कर कुछ दकियानूसी व्यक्तियों के प्रतिवाद का शिकार होना पड़ा और हुक्का–पानी छोड़ने की कदम–कदम पर मिली धमकियों को झेलना पड़ा।

सेवा कार्य एवं आर्यसमाज में प्रवेश

9 जून 1958 से पंजाब सरकार के सिंचाई विभाग में भाखड़ा डैम पर नियुक्ति हुई और वहाँ नांगल टाउनशिप आर्यसमाज में सदस्यता ग्रहण की।

मांसाहार पर बहस में चुनौती

1959 में सेवाकाल के दौरान सहकर्मियों के मध्य एक दिन मांसाहार पर बहस छिड़ गई। 50 के लगभग साथी उपस्थित थे जिनमें अधिकांश मांसभक्षी थे और मांसाहार को शारीरिक सशक्तता का माध्यम बता रहे थे। मांसाहार की हानियों और शाकाहार के लाभों पर तर्क प्रस्तुत करते हुए श्री भगवानदास ने चुनौती दी थी कि मैं पूर्ण शाकाहारी हूँ और आप सब मांसाहारी। यदि मांसाहार से अधिक शक्ति प्राप्त होती हो तो तुममें से कोई भी मुझ शाकाहारी के साथ कुश्ती लड़कर मुझे

परास्त कर दे तो मैं मान जाऊँगा कि मांसाहारी अधिक शक्तिशाली होता है और शाकाहारी निर्बल। लेकिन कोई भी चुनौती को स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ।

मृतक श्राद्ध पर बहस

वर्ष 1960 में पितरपक्ष के दिनों में – श्राद्ध जीवित पितरों का ही हो सकता है, मृतकों का नहीं – इस विषय पर सहकर्मियों के मध्य वाद–विवाद हुआ। श्री भगवानदास अकेले आर्यसमाजी शेष सब पौराणिक। ओम प्रकाश शर्मा नामक एक सहकर्मी बहुत तार्किक और किसी भी बात में अपना लोहा मनवाने वाले थे, प्रतिपक्षी के रूप में उनके सामने थे। लगभग एक घंटा बहस चली और अन्ततः तर्कविहीन होकर निरूत्तर हो गये। सभी साथी उस दिन मान गये कि ओम प्रकाश शर्मा ने आज पहली बार किसी से हार मानी है।

धार्मिक साहित्य

कविताओं का विषय ईश्वर, वेद, ज्ञान, भक्ति, आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि पर केन्द्रित रहा। वेद मन्त्रों का चयन करके उनका गीतों में अनुवाद कर 'मन्त्रगीत' नाम से 1995 में प्रकाशित किया। जिसमें प्रायः सभी विषयों का समावेश है। बहुत सी फुटकर कविताओं के साथ इनका प्रकाशन 'आर्य सन्देश' (साप्ताहिक) में 1991–92 में धारावाहिक रूप में निरन्तर होता रहा। श्रीमद् भगवद् गीता का काव्यानुवाद, दोहे, चौपाई और हरिगीतिका नामक छन्द में 2008 में 'गीतिका' नाम से प्रकाशित हुआ जिसकी काव्य क्षेत्र में व्यापक सराहना हुई।

आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारण

अनेक कविताओं, गीतों व वार्त्ताओं का समय–समय पर आकाशवाणी से प्रसारण होता रहा।

हिन्दी भाषा में काम काज व पुरस्कार

प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की घोषणा पर 26 जनवरी 1965 से व्यक्तिगत और सरकारी काम काज व पत्र–व्यवहार केवल हिन्दी भाषा में प्रारम्भ किया। बाद में दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के व्यापक विरोध और आगजनी के बावजूद सरकारी काम काज हिन्दी में जारी रखा। पुनश्च केन्द्र सरकार के अन्तरिक्ष मन्त्रालय में प्रतिनियुक्ति पर अनुवादक के पद पर नियुक्त होकर अन्तरिक्ष मन्त्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव नियुक्त हुए जिसका मुख्यालय बंगलौर में था। समिति की बंगलौर में बैठकों के दौरान मन्त्रालय के निदेशक टी. एन.सैशन (बाद में केन्द्रीय चुनाव आयोग के अध्यक्ष) से भी मुलाकात के अवसर मिले। नई दिल्ली नगर पालिका परिषद् में हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु 1991 में विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सम्पादन कार्य

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका–'पालिका समाचार' (हिन्दी, उर्दू, पंजाबी) के 1972 से सहायक सम्पादक रहे और वर्ष 1993–94 दो वर्ष तक सम्पादक रहे जिनमें प्रायः वैदिक संस्कृति का पुट स्पष्ट परिलक्षित होता था।

यज्ञ एवं संस्कार

गत 35 वर्षों से लगातार नांगल राया के आस पास के क्षेत्र में यज्ञ और संस्कार कराते रहे हैं। नांगल राया क्षेत्र के सभी बड़े राज नेताओं – चौ० लोकवीर सिंह (पूर्व महानगर पार्षद) श्री राजेन्द्र कुमार तँवर (पूर्व महानगर पार्षद) व चौ० भूपसिंह तँवर (पूर्व निगम पार्षद) के घरों में सभी यज्ञ व संस्कार इनके द्वारा सम्पन्न होते थे।

आचरण पर विशेष बल

जो कुछ भी कहा जाये उस पर आचरण भी होना चाहिए इस पर इनका विशेष बल रहा है। यदि हम सत्य पर आचरण नहीं करते तो हम महर्षि दयानन्द के अनुयायी कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। लगभग 29 वर्ष पहले की बात है आप आर्यसमाज तेड़ा के वार्षिक उत्सव पर गये। अगले दिन उन्हें वापस नांगल राया पहुँचना आवश्यक था क्योंकि अगले दिन रविवार को प्रातः गुड़गाँव में एक नामकरण संस्कार कराने जाना था। बागपत रोड़ रेलवे स्टेशन के फाटक पर पहुँचते ही दिल्ली वाली गाड़ी छूट गई। भागते हुए फाटक और स्टेशन के मध्य पहुँचे ही थे कि गाड़ी वहाँ तक आ पहुँची। किसी ने चैन खींचकर गाड़ी रोक दी। यह जानते हुए भी कि टिकट नहीं है आप गाड़ी में बैठ गये ये सोचकर कि अगले स्टेशन पर उतरकर टिकट ले लेंगे। गाड़ी केवल 20 सैकेण्ड रूकती थी। उतरकर भागकर टिकट खिड़की पर पहुँचते ही गाड़ी चल दी। पुनः भागकर बिना टिकट लिये ही चढ़ना पड़ा। हर स्टेशन पर उतरकर टिकट नहीं ले सके। रात्रि को घर पर टिकट न लेने के अपराध बोध के कारण कि मैंने सरकार को 8 रूपये की हानि पहुँचाई है नींद नहीं आई। अगले दिन गुड़गाँव पहुँचकर नाम करण संस्कार कराया और वापसी के लिये गुड़गाँव स्टेशन पहुँचकर दिल्ली छावनी का टिकट ले लिया। पुनः किराया सूची पटल पर देखा कि 8 रूपये किराया कहाँ तक का है। गुड़गाँव से सराय रोहिल्ला का टिकट 8 रूपये का था। आपने 8 रूपये का टिकट लिया और फाड़कर फेंक दिया और उन्हें सन्तोष हुआ कि सरकार के 8 रूपये चुका दिये।

सत्य और ईमानदारी का फल

आर्यसमाज नांगल राया के नए भवन के लिए 1996 में पूर्व महानगर पार्षद स्व० राजेन्द्र तँवर के साथ में डॉ० जयदेव वर्मा, श्री जगमाल सिंह यादव और श्री भगवानदास लाला ज्ञान चन्द जिन्दल के घर दान लेने की इच्छा से पहुँचे। लालाजी ने 2100 रूपये दान दिया। भगवानदास जी ने बिना गिने रूपये जेब में डाल लिये और रसीद काटकर दे दी। राजेन्द्र जी ने कहा कि शास्त्री जी पैसे गिन तो लेते। भगवानदास जी ने कहा – लालाजी ने गिनकर ठीक ही दिये होंगे। फिर भी उन्होंने जेब से निकालकर गिने तो 2200 रूपये निकले। उन्होंने 100 रूपये का नोट उन्हें वापिस लौटा दिया तो लालाजी उन पर इतने प्रसन्न हुए और उनके हृदय में उनके और उनकी ईमानदारी के प्रति अपार श्रद्धा उमड़ पड़ी तथा श्रद्धा भाव से एक देसी घी का लड्डू जबरदस्ती खिला दिया। इससे पहले लालाजी का उनके साथ कोई परिचय नहीं था। अगले दिन वह रिक्शा में बैठकर उनके घर आये और उन्हें कहने लगे कि मैं आर्यसमाज को उतने रूपये का

दान देना चाहता हूँ जितना बाजार में किसी ने अधिकतम दिया हो। उस समय तक बाजार में लाला सूरजभान गुप्ता के बड़े पुत्र राम कुमार ने 25100 रूपये का दान दिया था। श्री भगवानदास ने उन्हें बता दिया और उन्होंने 25100 रूपये की राशि दान में दी। जिस व्यक्ति ने एक दिन पहले अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए 2100 रूपये की ही राशि दान में दी थी, उसी ने सत्य और ईमानदारी के वशीभूत होकर स्वेच्छा से घर आकर 25100 रूपये की राशि दान में दे दी यही सत्य और ईमानदारी का मधुर फल है।

नांगलराया आर्यसमाज की सदस्यता आपने दिसम्बर 1962 में ग्रहण की और तभी से निरन्तर समाज के किसी न किसी पद पर रहकर समाज की सेवा करते आ रहे हैं और साथ ही पुरोहित का कार्य भी गत 35 वर्ष से कर रहे हैं। आपके दो पुत्र हैं – श्री प्रमोद पँवार जिनका अपना व्यवसाय है। दूसरे पुत्र प्रवीण पँवार है जो गुड़गाँव में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कंप्यूटर इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। दो पुत्रियाँ हैं – बड़ी सुरक्षा पँवार जो नई दिल्ली नगर पालिका परिषद में कार्यरत हैं। छोटी पुत्री डॉ० अरूणा पँवार जिसका नांगलराय में ही 'आरूषी क्लीनिक' नाम से क्लीनिक है। आपकी धर्मपत्नी लीलीदवी भी 1962 से इस समाज की सदस्या हैं और कई बार समाज की अधिकारी भी रही हैं। नांगलराय स्त्री आर्यसमाज की श्रीमती लीला देवी कई वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहीं।

– डॉ० जयदेव वर्मा
प्रधान, आर्यसमाज नांगलराय

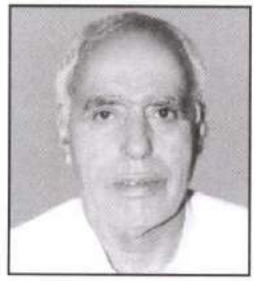

स्व. श्री रोहतास तंवर

जन्मतिथि : 1.01.1939
निधन : 29.9.2008
जन्मस्थान : WZ - 1420/2, नांगल राया, नई दिल्ली – 46
स्थाई पता : WZ - 1420/2, नांगल राया, नई दिल्ली – 46
व्यवसाय : सरकारी कर्मचारी
कार्यक्षेत्र : सी.जी.एच.एस.

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमति कृष्णा तंवर
पुत्र : राजपाल तंवर, तेजपाल तंवर, कुलदीप तंवर, प्रदीप तंवर

विशेष उपलब्धियाँ :

अनेक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित। हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा वर्ष 95–96 का साहित्यिक कृति पुरस्कार, कहानी संग्रह 'गिरगिट के रंग' को मिला।

अन्य प्रकाशनः–

नटक संग्रह–'कल्पना'।
उपन्यास–'जलते दीप' और काला आकाश'।
कहानी संग्रह–'माटी की आग', 'गिरगिट के रंग और अग्निपथ'।
लघुकथा सग्रह–'लघुकथांजलि', स्वतन्त्र लेखन।

फोन नं० – 28525215

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार)

साहित्यिक कृति पुरस्कार

१९९५ - ९६

श्री/~~श्रीमती~~-~~सुश्री~~ रोहतास तंवर

को उनकी गिरगिट के रंग (कहानी संग्रह)

नामक कृति के पुरस्कृत होने के

उपलक्ष्य में सम्मान स्वरूप यह प्रशस्ति-पत्र

सादर समर्पित किया जाता है।

सचिव
हिन्दी अकादमी, दिल्ली

अध्यक्ष
हिन्दी अकादमी, दिल्ली

तेजपाल सिंह

जन्मतिथि : 5–8–1947
जन्मस्थान : कस्बा करनावल, (मेरठ), उ.प्र.
शिक्षा : एम.एससी. (फिजिक्स) प्रथम श्रेणी मेरठ यूनिवर्सिटी से उत्तीर्ण की तथा बी.एड (सीआइई) दिल्ली यूनिवर्सिटी
पिता : श्री टीकाराम जी
माता : श्रीमती कटारी देवी
व्यवसाय : पूर्व प्रवक्ता (भौतिकी), शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार
विशेष : विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित तथा सम्पादक सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा विभिन्न राजकीय विद्यालयों में प्रवक्ता (भौतिकी) के रूप में कार्य किया। हिंदी मे विज्ञान साहित्य की सेवा की है और उनकी यह विज्ञान साहित्य आभा निरंतर जारी है।
प्रकाशन : बिखरे मोती, यशस्वी विभूतियाँ, भगवान बुद्ध तथा ऋषि दयानन्द का तुलनात्मक अध्ययन (शीघ्र प्रकाश्य) वैदिक ग्रन्थों में भौतिक विज्ञान

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम: श्रीमति हरबीरी देवी
पुत्र : श्री संजीव कुमार, (बी.टेक.एम.बी.ए)
श्री अश्विनी कुमार (एम.बी.ए., एम.लिव., एम.एस.सी.)
पुत्री : श्रीमती संगीता, एम.ए. (शिक्षा विशारद) वी.लिब

विशेष उपलब्धियाँ :
एक आदर्श माता के रूप में अपनी माताजी से आर्य समाज और वैदिक धर्म के सम्बन्ध में बाल्यकाल से ही शिक्षाऐं मिलती रही। विभिन्न आयोजनों में भी वे इन्हें अपने साथ ले जाना न भूलती थी।•

मन्त्रः

ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं, देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि, बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽसि ओजो मयि धेहि, मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

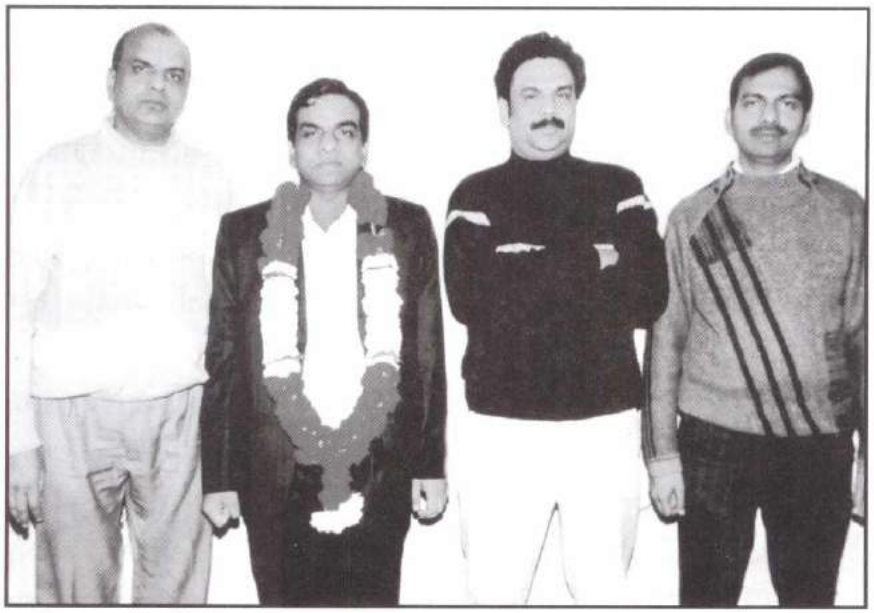

तत्कालीन प्रधान स्व० श्री सूरजभान गुप्ता के पुत्र (बाँये से) राम कुमार गुप्ता, श्री राम किशन गुप्ता, श्री देवदत्त गुप्ता (पप्पी) एवं श्री सुरेन्द्र गुप्ता ।

होम्योपैथिक ओषधालय के उद्घाटन समय (बाँये से) श्री राजेश प्रसाद शर्मा, श्री आनन्द, कु० श्रुति चौधरी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री भगवान दास, श्री जगमाल सिंह यादव, श्री सतीश तँवर, ठेकेदार चरण सिंह एवं अन्य।

ओ३म्

आर्यसमाज नांगलराया
के
72 वर्ष

18-8-96 को सत्संग भवन के शिलान्यास के समय प्रसन्न मुद्रा में श्री राजेन्द्र कुमार तँवर। आचमन करते हुए म० धर्मपाल, मंत्र पाठ करते हुए श्री यज्ञमुनि जी वानप्रस्थी व मंत्री श्री भगवान दास, साथ बैठे हैं प्रधान श्री जगमाल सिंह यादव व उप. मंत्री डा० भागमल शर्मा।

18-8-96 को सत्संग भवन के शिलान्यास के अवसर पर खड़े हैं पूर्व महानगर पार्षद श्री राजेन्द्र कुमार तंवर, मन्त्री श्री भगवान दास व महाशय धर्मपाल जी। दूसरी ओर खड़े हैं पूर्व विधायक श्री करण सिंह तंवर, पूर्व निगम पार्षद चो. भूपसिंह, श्री श्रवण कुमार चौधरी उपमन्त्री, डा० भागमल शर्मा।

आर्यसमाज नांगलरया के सत्संग भवन के शिलान्यास समारोह का मंच संचालन करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार तँवर। म० धर्मपाल जी का स्वागत करते हुए मन्त्री श्री भगवान दास। मंच पर विराजमान हैं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री श्रवण कुमार चौधरी, श्री सुभाष चौहान व स्वामी यज्ञमुनि जी।

आर्यसमाज नांगलरया के सत्संग भवन के शिलान्यास समारोह में मंच संचालन करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार तँवर। म० धर्मपाल (एम. डी. एच.) का स्वागत कर रहे हैं डा० भागमल शर्मा।

आर्यसमाज नांगलरया के सत्संग भवन के शिलान्यास समारोह का मंच संचालन करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार तंवर। म० धर्मपाल जी का स्वागत करते हुए चौ० भूपसिंह तँवर। मंच पर बैठे दिखाई दे रहे हैं दिल्ली सरकार के पूर्व विधायक श्री करणसिंह तँवर।

दानवीर अभिनन्दन समारोह दिनांक 1-6-97 का मंच संचालन करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार तंवर, मंच पर आसीन है चौ० भूपसिंह तँवर, मा. सत्येन्द्र सिंह, महा. खेमचन्द, चौ० रणधीर सिंह, चौ० अमर सिंह, चौ० हरबन्श सिंह। निगम मार्षद श्रीमती कमला मल्होत्रा, लोकसभा सदस्य श्रीमती सुषमा स्वराज, अनिल मित्तर, नीचे खड़े हैं मन्त्री श्री भगवान दास।

ओ३म्

आर्यसमाज नांगलराया के संस्थापक सदस्य

स्व० श्री माड़े सिंह

स्व० चौ० मीर सिंह

स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा

स्व० श्री देवदत्त वर्मा

स्व० श्री शीशराम जी

स्व० बाबू रूपचन्द

स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री

आर्यसमाज नांगलराय एक संक्षिप्त परिचय

यह समाज दिल्ली की पुरानी आर्यसमाजों में से एक है। इसकी स्थापना राष्ट्र की स्वाधीनता प्राप्त होने से सात–आठ वर्ष पहले हुई। इस समाज की गतिविधियाँ सन् 1939 से ही प्रारम्भ हो गई थीं। उस समय इसके वर्त्तमान भवन के बगल में स्थित शिव मन्दिर के प्रांगण में ही साप्ताहिक यज्ञ व सत्संग होने लगा। धीरे–धीरे भवन की आवश्यकता अनुभव होने लगी और 3 जून 1943 को लगभग 2000 गज भूमि जिसमें खेती होती थी चौ० तुलसीराम सुपुत्र श्री लेखा (जो यहाँ से तेड़ा गाँव में जाकर बस गये थे) से 1050/– रूपये में खरीदी गई थी। इसकी रसीद भी उर्दू भाषा में उपलब्ध है। (जिसकी फोटोस्टेट प्रति हिन्दी अनुवाद सहित दर्शनीय है)। रसीद से स्पष्ट होता है कि आर्यसमाज इससे पहले भी सक्रिय थी जैसा कि इसमें लिखा है कि आर्यसमाज के सदस्यों, सर्व श्री मीर सिंह, युधिष्ठिर वर्मा एवं देवदत्त वर्मा ने यह जमीन खरीदी और उनके हस्ताक्षर इस रसीद पर अंकित हैं। यह सदस्य संस्थापक सदस्यों में मुख्य रहे होंगे। इसमें तत्काल ही टीन शैड बनाया गया और उसीमें यज्ञ व सत्संग का आयोजन होता रहा। सन् 1945 में यहाँ एक सुन्दर भवन बनाया जिसका उद्घाटन दिल्ली के तत्कालीन उपायुक्त डॉ० महेन्द्र सिंह रणधावा, आई.सी.एस., डी.एससी. के कर–कमलों द्वारा हुआ। उस समय पंखा रोड़ से सड़क के दोनों किनारों पर गमले व फूलों से साज सज्जा की गई। सड़क पर आर्यसमाज के द्वार तक जाजम बिछाया गया। विशाल बैण्डबाजों के साथ मुख्य अतिथि का प्रवेश हुआ और आर्यसमाज भवन का विधिवत् उद्घाटन हुआ।

आर्यसमाज के संस्थापक

इस समाज की स्थापना में निम्न महानुभाव का योगदान है:–

स्व० चौ० माड़ेसिंह, (स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तँवर महानगर पार्षद के पूज्य दादा जी), स्व० चौ० जगराम (चौ० चरण सिंह ठेकेदार के पूज्य दादाजी) बाबू रूपचन्द जी (स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री के पूज्य पिताजी), स्व० श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार (श्री रमेश कुमार तँवर के पिताजी), स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा जी तत्कालीन उपायुक्त दिल्ली के निजी सचिव (आर्यसमाज के वर्त्तमान प्रधान डॉ० जयदेव वर्मा के पूज्य पिताजी) स्व० श्री गंगासहाय, स्व० श्री बिधी चन्द मिस्त्री जी, स्व० चौ० मीरसिंह (मा० सत्यपाल, श्री राजपाल सिंह तँवर और पृतिपाल सिंह के दादा जी)।

बाद में सन् 1945 में समाज में कुछ और विशिष्ट सदस्य जुड़ गये। इनमें स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री (जिनकी आयु उस समय मात्र 20 वर्ष थी) स्व० श्री पृथ्वीराज वर्मा, स्व० श्री तोखराम पहलवान मिस्त्री, स्व० श्री राम चन्द्र वर्मा, स्व० श्री चन्दन सिंह, स्व० श्री विष्णु स्वरूप वर्मा (श्री यशपाल वर्मा व दीपक वर्मा आदि के पिता जी), श्री रामानन्द (बड़का), स्व० श्री रामशरण दास वर्मा, स्व० श्री सूरजभान गुप्ता (राजधानी स्टोर)। भवन के उद्घाटन के समय स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा जी एवं स्व० श्री देवदत्त वर्मा जी ने 1500/– रूपये दान इकट्ठा करके दिये थे जो उस समय बहुत बड़ी राशि मानी जाती थी।

1955 में जो विशिष्ठ सदस्य इस आर्यसमाज के साथ जुड़े उनमें प्रमुख हैं:– वर्त्तमान वयोवृद्ध सदस्य श्री जगमाल सिंह

यादव, स्व० श्री श्रीराम दीवान, स्व० श्री देवकी नन्दन, स्व० सूबेदार चुन्नीलाल वाही, श्री चन्दन सिंह मिस्त्री, श्री ईश्वर चन्द्र, स्व० श्री भगत लेखराज, स्व० श्री चौथूराम डुडेजा, स्व० श्री हुकम चन्द डुडेजा, डॉ० तारा चन्द (टटीरी वाले) पं० रामचन्द्र शर्मा (पुरोहित), चौ० भूपसिंह तँवर (निगम पार्षद), स्व० श्री दलीप सिंह पटवारी, स्व० श्री लाल चन्द, स्व० श्री गुरदयाल, स्व० मा० ईश्वर सिंह।

वर्त्तमान यज्ञशाला का निर्माण

आर्यसमाज भवन का हाल मिडल स्कूल के संचालन हेतु अस्थायी रूप से दिल्ली के शिक्षा विभाग को सरकारी भवन बनने तक दिया गया था। यज्ञ करने के लिये पीछे का टीन का बरामदा प्रयोग होता था। सरकार भवन खाली नहीं कर रही थी। अतः इस यज्ञशाला का निर्माण सन् 1959 में हुआ जिसके सूत्रधार इस आर्यसमाज के तत्कालीन प्रधान श्री देवदत्त वर्मा (तहसीलदार) थे।

पुरोहित

इस समाज को यह गौरव प्राप्त है कि इस समाज के युवा सदस्य श्री हरकिशन सिंह शास्त्री ने 18 वर्ष की आयु से ही यज्ञ और संस्कार कराने प्रारम्भ कर दिये थे और अपने दिवंगत होने से (6.2.1996) एक वर्ष पूर्व तक निरन्तर यज्ञ कार्य करते रहे और पोरोहित्य कर्म करते हुए अपने कार्यकाल में इस आर्यसमाज में लगभग हर वर्ष प्रधान, उप–प्रधान व मंत्री के किसी न किसी पद को सुशोभित करते रहे। इसके पश्चात् समाज के पुरोहित का कार्य बीस वर्ष तक हरकिशन सिंह जी शास्त्री के साथ–साथ और उनके दिवंगत होने के उपरान्त अकेले ही समाज में तथा आस–पास के क्षेत्रों में यज्ञ, संस्कार व प्रवचन का कार्य श्री भगवानदास जी ही कर रहे हैं।

प्रचार कार्य

पं० सेवा राम आर्य आगरा निवासी लगभग सन् 1950 से ही आर्यसमाज दीवान हाल के ग्राम्य प्रचार विभाग से जुड़े हुए थे। और गाँवों, स्कूलों आदि में वैदिक प्रचार का कार्य बखूबी निभाते थे। सन् 1954 से आप अपना अधिकांश समय आर्यसमाज नांगलराय तथा आस–पास के स्कूलों व गाँवों में युवाओं को वैदिक नैतिक शिक्षा देते और उपदेश करते घूमते थे। आप सादे वस्त्र और सादा भोजन करते थे तथा नंगे पैर ही आते–जाते थे। यहाँ के आर्यवीर दल को भी आपने गति प्रदान की।

इस समाज का यह भी परम सौभाग्य रहा कि देश के प्रख्यात विद्वान व भजनोपदेशक प्रायः यहाँ के उत्सवों में वेद प्रचार करने आते रहे। जिनमें स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी भीष्म जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, चौ० पृथ्वी सिंह बेधड़क, चौ० वीर वीरेन्द्र सिंह, पं० शोभा राम प्रेमी, पं० प्रकाश वीर शास्त्री, स्व० ओम प्रकाश त्यागी, पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० रघुवीर सिंह शास्त्री, श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती, आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द जी), श्री मुन्शीराम जी, लाला राम गोपाल शालवाले, ब्रह्मानन्द जी की भजन–मण्डली, श्री शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, स्वामी सुधानन्द जी आदि उल्लेखनीय हैं। स्व० श्री ईश्वर सिंह जी ककरोला गाँव निवासी बहुत ही विख्यात भजनीक थे और समय–समय पर भजनोपदेश के लिये निस्वार्थ आते रहे।

छोटा भवन अधिक उपस्थिति

मुख्य भवन जिसके निर्माण में स्व० विधीराम मिस्त्री व स्व० श्री तोखराम पहलवान मिस्त्री का भरपूर सहयोग रहा। इस आर्यसमाज की स्थापना के समय दिल्ली में आर्यसमाजों की संख्या तीस से अधिक नहीं थी। उस समय के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति 70 से कम न रहती थी और तत्कालीन हाल (27 फुट X 12 फुट) ठसाठस भर जाता था जिनमें स्त्रियों व बच्चों की संख्या भी पर्याप्त होती थी। उत्सव वर्ष में कई बार होते थे और उपस्थिति चार अंकों में हो जाती थी।

आर्यवीर दल

स्न 1955 से 1970 तक का समय इस आर्यसमाज के आर्यवीर दल का स्वर्णकाल था। दिल्ली के आर्यवीर दल में यहाँ का आर्यवीर दल अग्रगण्य था। स्न 1960 से 1970 तक इस समाज के नवयुवक श्री संतोष कुमार दिल्ली आर्यवीर दल के महामन्त्री रहे। श्री सन्तोष कुमार भाषण–कला में पारंगत युवक थे और दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल की भाषण प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करते थे।

प्राकृतिक आपदाओं में योगदान

देश में आयी अनेक प्राकृतिक आपदाओं में इस आर्यसमाज ने सदैव बढ–चढ कर भाग लिया और विपुल दान राशि एकत्र कर पीड़ितों तक पहुँचाई और शिविरों में भी भाग लिया। उत्तरकाशी के भूकम्प में 15000/– रूपये की टीनें, लातूर विपदा में, उड़ीसा में समुद्री तूफान, गुजरात के भूकम्प में सुनामी पीड़ितों के लिये 36000/– रूपये की राशि सहायतार्थ भेजी गई। गुजरात में इस समाज के सदस्य डा० अजय आर्य और श्री ओम प्रकाश प्रेमी भी सहायता शिविर में गये थे।

इस समय सबसे पुराने सदस्यों में एक मात्र श्री जगमाल सिंह यादव विद्यमान है जो वर्ष 1955 से इस समाज के सदस्य बने और अब उनकी आयु लगभग 87 वर्ष है (जन्म तिथि 3.12.1925)।

वर्तमान भवन

इस भवन का शिलान्यास दिनांक 18 अगस्त 1996 को श्री करणसिंह तँवर (विधायक, दिल्ली छावनी) की अध्यक्षता में महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) ने किया। भवन का आकार 56 फुट X 43 फुट है और जो दो मंजिला है। आर्यसमाज नांगलराय के तत्कालीन अधिकारियों व कर्मठ कार्यकर्त्ताओं जिनमें श्री जगमाल सिंह यादव, श्री भगवानदास जी, डॉ० जयदेव वर्मा व श्री धर्मेन्द्र सिंह तँवर विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी सतत साधना और सफल नेतृत्व व सभी लोगों के प्रयास से आर्यसमाज का वर्त्तमान भवन अस्तित्व में आया। इस भवन के निर्माण हेतु मुख्यतः श्री राजेन्द्र कुमार तँवर (पूर्व महानगर पार्षद) के मार्ग दर्शन में पर्याप्त धन राशि एकत्र की गई। श्री तँवर अपनी गाड़ी में अपने पुत्र मेधावी तँवर के संचालन में समाज के अधिकारियों को साथ लेकर दूर–दूर कालोनियों में ले जाते थे। पहली मंजिल पूर्ण होते ही धनराशि समाप्त होगई

राजेन्द्र कुमार तँवर जी की प्रेरणा से दूसरी मंजिल भी साथ–साथ पूर्ण कराई गई। श्री राजेन्द्र तँवर ने अपने संबंधी श्री महेन्द्र सिंह वर्मा (M.S. Nursing Home, प्रीति विहार–पूर्वी दिल्ली) को प्रेरित कर निचले भवन के फर्श का पत्थर लगवाया और दरवाजे व खिड़कियाँ लगवाये। फर्श के पत्थर की कटाई और लगाई की लेबर का कार्य नीलगगन के मालिक श्री उमा शंकर के पुत्र अनिल ने अपने योगदान के रूप में करवाया। सभी दान दाताओं के नाम पत्थर पर लिखवा कर मुख्य द्वार पर लगे हैं। इस प्रकार श्री राजेन्द्र कुमार तँवर ने इस समाज के संस्थापकों में से एक, अपने दादा चौ० माड़े सिंह की परम्परा का पूर्णतः पालन कर अपने आपको उनका सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध किया।

इस आर्यसमाज के निर्माण व विकास में चौ० भूप सिंह तँवर (पूर्व निगम पार्षद) व दिल्ली छावनी विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री करण सिंह तँवर का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने अपने पास से तथा अपने सम्पर्कों से न केवल पर्याप्त धन ही एकत्र करवाया अपितु अपने मार्गदर्शन, सुझावों व प्रेरणा से समस्त कार्यकर्त्ताओं का उत्साह व मनोबल बनाये रखा जिसकी परिणति आज इस विशाल भवन के रूप में अस्तित्व में है।

आर्यवीर दल का पुनरूद्धार

कई दशाब्द से आर्यवीर दल की गतिविधियाँ उचित मार्गदर्शन के बिना शिथिल पड़ गई थी। सौभाग्य से एक प्रतिभाशाली नवयुवक का इस आर्यसमाज में आगमन हुआ जिसने अपनी लगन और उत्सुकता से घर–घर जाकर आर्ययुवकों को प्रेरित कर आर्यवीर दल में पुनः प्राण प्रतिष्ठा की और उन्हें मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण देकर समग्र दिल्ली में एक नयी पहचान दी। इस युवक ने साधनहीन प्रतिभासंपन्न छात्रों को निःशुल्क शिक्षण दिया, अपने सम्पर्कों से कम्प्यूटरों की व्यवस्था कर 'सर्वोत्कर्ष' नाम की संस्था बनाकर कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र के माध्यम से अनेक आर्यवीरों को प्रशिक्षित किया जिनमें से अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं में अच्छे वेतनमान में कार्यरत हैं। इस नवयुवक ने हिन्दी व संस्कृत पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर उन्हें महाभाष्य की सूक्तियाँ याद कराई। इस स्वनामधन्य युवक का नाम है डॉ० अजय आर्य जो प्रतिष्ठित फर्म में अहम पद पर विराजमान है। वर्तमान में श्री आर्य नाईजीरिया में हैं और वहाँ की भूमि को यज्ञ की सुगन्ध से सुवासित कर रहे हैं। आपने संस्कृत की प्रोफेसर एक विदुषी युवती डॉ० अरूणिमा से विवाह कर एक पुत्र रत्न राष्ट्र को समर्पित किया है। आपका सान्निध्य पाकर आर्यसमाज नांगलराय गौरवान्वित है।

आर्यसमाज नांगलराय की गतिविधियाँ

वर्तमान में आर्यसमाज नांगलराया अपने प्रधान डॉ० जयदेव वर्मा के नेतृत्व में विकास की राह पर अग्रसर है। डॉ० वर्मा जहाँ एक ओर कुशल प्रशासक, प्रबन्धक व

योग्य नेता हैं वहीं अपनी आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति अटूट निष्ठा और कर्त्तव्यपरायणता के प्रति अगाध समर्पण व कर्तव्यशीलता से इस समाज की चहुँमुखी उन्नति व प्रसिद्धि में वरदान सिद्ध हो रहे हैं। आपके नेतृत्व में आज आर्यसमाज नांगलराय को दिल्ली में अत्यन्त सम्मान प्राप्त है।

इस समाज द्वारा वर्तमान में संचालित होने वाली गतिविधियों का संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है। :–

1. प्रतिदिन दैनिक यज्ञ प्रातः 7.00 से 8.00 बजे तक व प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग 7.00 बजे से 9.00 बजे तक।
2. आर्यसमाज नांगलराय के स्थापना दिवस पर प्रति वर्ष जून माह में तीन दिवसीय यज्ञ, भजन व प्रवचन का आयोजन।
3. प्रति वर्ष शीतकाल में सात दिवसीय यज्ञ, भजन व वेद प्रचार व्यवस्था।
4. आर्यसमाज व अन्य संस्थाओं द्वारा समय–समय पर आयोजित सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी।
5. जनमानस में जागृति लाने हेतु समय–समय पर प्रभात फेरियों का आयोजन।
6. आर्यवीरदल की शाखा के माध्यम से युवाओं को प्रतिदिन शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक व सामाजिक विकास के लिये प्रशिक्षण।
7. गुरूकुलों, अनाथालयों, गौशालाओं व दीन–दुखियों की आर्थिक सहायता
8. धर्मार्थ होम्यौपैथिक औषधालय का संचालन (सोम, बुध, शनि –प्रातः 10.00 बजे से 12.30 बजे तक।
9. निःशुल्क अथवा नाममात्र शुल्क पर कम्प्यूटर की तकनीकी शिक्षा का प्रबंध।
10. शोक–सभाओं हेतु नाम मात्र शुल्क पर भवन प्रदान करना।
11. विधवाओं व गरीबों के लिये आधे शुल्क पर भवन आरक्षण, सामान्य तौर पर विवाह एवं सामाजिक आयोजनों के लिए हाल मामूली राशि पर उपलब्ध है।
12. यज्ञ, संस्कार व प्रवचन हेतु योग्य पुरोहित की व्यवस्था।
13. देश में आई अनेक प्राकृतिक आपदाओं में इस आर्यसमाज ने सदैव बढ चढ़ कर भाग लिया और विपुल धन राशि एकत्र कर पीड़ितों तक पहुँचाई और शिविरों में भाग लेती रही है।
14. सार्वदेशिक आर्यवीर दल का उप कार्यालय भी दल के उप संचालक श्री आजाद सिंह के मार्गदर्शन में कार्यरत है। श्री आजाद सिंह ही कम्प्यूटर केन्द्र 'सर्वोत्कर्ष' का बखूबी संचालन कर रहे हैं। और आर्यसमाज नांगलराय के सम्पर्कसूत्र की भूमिका के साथ–साथ आर्यसमाज नांगलराय को अपने अमूल्य सुझावों से उपकृत कर रहे हैं।•

नांगल राया के विकास में आर्य समाज का योगदान

नांगल राया का जन्म 98 वर्ष पूर्व में हुआ। इनके पूर्वज राजस्थान से आए थे। कृषि एवं पशु पालन इनका मुख्य व्यवसाय था। अपने उत्पादों के क्रय–विक्रय के लिए नाहरगढ़ (नजफगढ़) आते रहते थे।

मुगल काल में कुछ परिवार छावनी क्षेत्र में बस गए। 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के समय तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने छावनी क्षेत्र से हटा दिया। नांगल राया वासियों ने अपने खेतों में आश्रय लिया तथा वर्तमान नांगल राया का जन्म हुआ।

प्रारम्भ में ही हमारे पूर्वजों ने धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के लिए एक एकड़ भूमि रखी गई। जिसके आधे भाग पर मन्दिर का निर्माण तथा धर्मशाला बनाई गई। शेष आधे भाग पर 3 जून 1940 को आर्य समाज की स्थापना हुई।

महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से आर्य समाज में सामाजिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक गतिविधियाँ शुरु हुई।

प्रथम प्राथमिक विद्यालय आर्य समाज में आरम्भ हुआ तत्कालीन मुख्य अध्यापक श्री गरीब राम जी के नेतृत्व में एक योग्य शिक्षकों का दल था जिनमें प्रमुख श्री धर्मसिंह जी, श्री राम लुभाया जी, श्री राम किशन जी, श्रीमति संतोष, श्रीमति राजकुमारी आदि थे।

आर्य समाज के प्रांगण में उत्तम शिक्षकों के मार्गदर्शन में कुछ ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण हुआ जिन पर आज पूरे राष्ट्र को गर्व है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र और समाज की सेवा में लगाया उन्हीं में कुछ प्रमुख व्यक्ति हैं, स्व० लोकवीर सिंह, स्व० राजिन्द्र कुमार तंवर, स्व० विष्णु दत्त जी (सभी पूर्व महानगर पार्षद) स्व० भूपसिंह जी (पूर्व निगम पार्षद), श्री दत्त जी (पूर्व सेवा निवृत जनरल) श्री पृथ्वी राज सिंह साहनी (पूर्व मेयर), स्व० बालकिशन जी (प्रथम प्रधान मन्त्री, श्री स्व० जवाहर लाल जी के मुख्य अंगरक्षक), स्व० भंवर सिंह (समाज सेवक), स्व० संतोष कुमार, स्व० राधे श्याम अग्रवाल, स्व० हरि किशन जी, स्व० भवानी दत्त जोशी, संस्कृत आचार्य, आर्य समाज विद्यालय सदर बाजार।

द्वितीय एवं तृतीय पदों के व्यक्ति जिन्होंने आर्य समाज के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण की आज भी अधिकतर समाज सेवा में संलग्न हैं। कुछ प्रमुख नाम हैं – श्री मोहन सिंह जी, श्री परमानन्द जी, श्री सुरेन्द्र कुमार तंवर, श्री देवदत्त जी, श्री रमेश कुमार तँवर जी, श्री हरनन्द जी, श्री राजपाल जी, श्री राम दास जी, श्री ओमप्रकाश जी। अनेकों अनगिनत व्यक्तित्व हैं जिन्होंने आर्य समाज से प्रेरणा लेकर सामाजिक कार्यों में अपना जीवन लगा रखा है। नांगल राया को इन महान विभूतियों पर गर्व है।

शिक्षा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में आर्य समाज नांगल राया का योगदान रहा। भारत विभाजन के उपरान्त 1947–48 में नांगल राया से 32 व्यक्तियों ने आन्दोलन

कर गिरफ्तारियाँ दी जिनमें अधिकतर सरकारी कर्मचारी थे। गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन में भी आर्य समाज नांगल राया ने योगदान दिया। 1975 में आपात काल में सरकार की दमन कारी नीतियों के विरोध में अनेकों व्यक्तियों ने आन्दोलन कर गिरफ्तारियाँ दी। 1984 में इन्द्रा गांधी की हत्या के उपरान्त सिक्खों की हत्या के कलंक से नांगल राया को बचाया। नांगल राया में रहने वाले सिक्खों को सुरक्षा प्रदान करने में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

वर्तमान में आर्य समाज राष्ट्रीय चेतना जागृति करना तथा युवा वर्ग का चरित्र निर्माण जैसे कार्यों में अग्रसर है। समाज के सहयोग से भविष्य में भी अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहेगा ऐसी आशा है।•

— प्रभाषचन्द्र गुप्ता

देवता (३३ कोटि)

देवता :	३३ देवता हैं
८ वसुः	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र।
११ रूद्रः	प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय (ये दस प्राण हैं) और ग्यारवाँ जीवात्मा (इनके शरीर से निकलने पर मृत्यु होती है लोग रोते हैं इसी कारण इन्हें रूद्र अर्थात रूलाने वाला कहते हैं)
१२ आदित्यः	अर्थात् वर्ष के 12 महीने।
१ इन्द्रः	अर्थात् बिजली।
१ प्रजापतिः	अर्थात् यज्ञ।

देवताओं का देव महादेव परम पिता परमात्मा ३४ वं देवता है।

!! ओ३म !!

गुजरात भूकंप (महाविनाश) और आर्यसमाज नांगलराया

26 जनवरी 2001 प्रातः दूरदर्शन पर गणतन्त्र दिवस की परेड देखने की तैयारी में मैं अपने कमरे में पलंग पर बैठा टी.वी. देख रहा था और साथ ही चाय नाश्ते का इंतजार हो रहा था। पत्नी ऊपर रसोई घर में चाय नाश्ता बनाकर लगभग सीढियों से नीचे उतर रही थी। अचानक सिर में हल्का सा चक्कर आना महसूस हुआ कि अभी–अभी तो सब ठीक था अचानक तबीयत खराब होना समझ नहीं आया, इतने में ही टी.वी.पर हैड लाईन आई कि अभी– अभी गुजरात में जोरदार भूकंप आया है, फिर तो घर और आसपास चर्चा और हल्ला मच गया। सभी की एक जैसी प्रतिक्रिया सिर में चक्कर आना इत्यादि। फिर क्या था गणतंत्र दिवस की परेड में विघ्न पड़ गया, और उसे छोड़ हम सभी समाचार देखने में जुट गये। जैसे–जैसे समाचार आते गये वैसे–वैसे महाविनाश की खबर रोंगटे खड़े कर देती, सांय होते–होते तस्वीर साफ हो गई, भयंकर विनाश व जान माल की हानि ने दिल में दहशत पैदा कर दी।

फिर हम लोग रविवार को आर्य समाज नांगलराया में साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुये और सत्संग के बाद चर्चा का विषय रहा गुजरात और विनाश, सोचा कि कुछ किया जाये, अन्तरंग सभा मे निश्चय हुआ कि आर्य समाज के तत्वाधान में कुछ किया जाये। मैं स्वंय ओम प्रकाश प्रेमी, श्री अजय आर्य जी, श्री भगवान दास जी,

डा. जयदेव वर्मा जी आदि सभी सदस्यों ने निर्णय लिया। हम गुजरात जा कर राहत कार्य करेंगे। पहले भी प्राकृतिक आपदाओं में आर्य समाज की अहम भूमिका रही है।

आनन–फानन में मैं स्वंय और श्री अजय आर्य जी गुजरात जाने के लिये तैयार हो गये क्योंकि इतनी दूर जाने के लिये व्यवस्था करना एवं और लोगों से सम्पर्क करने में समय लगा और 31–1–2001 सांय चार बजे श्री अजय आर्य जी का फोन आया कि आज ही प्रस्थान करना है। सरकारी सेवा मे होने के नाते विभाग को भी बताना आवश्यक था और अगले दिन वेतन का दिन, फिर अचानक अपने साथी का ख्याल आया। छुट्टी का प्रार्थनापत्र एवं वेतन के लिये अपने साथी के नाम वेतन अथारिटी देकर हम तैयार हो गये।

लगभग दो घंटे में हम तैयार होकर – मैं स्वयं और अजय आर्य जी भी आजाद सिहं जी को लेकर ए–ब्लाक आर्य समाज जनकपुरी पहुंचे तो हमारे साथ जाने के लिये पांच साथी और पहुंच चुके थे जिनमे– श्री वीरेन्द्र आर्य, आर्यवीर दल रानी बाग, श्री सतपाल चावला जी रानीबाग आर्य समाज, सरदार हरभजन सिहं जी, मनोज जी यमुना विहार और उनके एक साथी जिन्होने पूरे कार्यक्रम (गुजरात) की फोटोग्राफी की। हम सात व्यक्तियों की टीम गुजरात चलने को तैयार थी। वहाँ से लगभग 9:30 बजे हमें टाटा सूमो के साथ स्वामी देवव्रत जी ने झंडी दिखाकर रवाना किया और आशीर्वाद दिया। दिल्ली जयपुर राजमार्ग पर, गाड़ी हमारी फर्राटे भर रही थी। अगले दिन ब्यावर में आर्यसमाज में 2 घंटे रुके। जिसमे शौच, स्नान और भोजन किया। आर्यसमाज ब्यावर ने अच्छी व्यवस्था की थी और फिर हम अपने गंतव्य की तरफ बढ़ चले, अगले दिन कच्छ गांधीधाम आर्य समाज में पड़ाव डाला और तुरंत समय गवांये बिना कुछ बाँस एवं बोरे मगंवाये और अस्थाई स्ट्रेचर बनाई लगभग छः–सात। कच्छ में ही सबसे अधिक तबाही थी। पता लगा हमें अंजार की ओर कूच करना है। लगभग एक घंटे बाद हम वहाँ पहुँचे तो महाविनाश की लीला दहशत भरी थी, लोग तबुंओं में रहने को विवश, ऊंची–2 इमारतें, अपार्टमेंट नीचे पिल्लर से टूटकर एक ओर झुक गये थे। अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं की ओर से राहतकार्य चल रहा था। अपनी गाड़ी पार्क कर हम भी स्ट्रेचर, स्पेशल बड़े–बड़े जूते, दास्ताने, मास्क एवं कपूर की टिकियाँ जो मास्क में रखी ताकि दुर्गन्ध ज्यादा तकलीफ न दे। अंजार में उस जगह पहुँचे जहाँ एक बाजार और बस्ती में स्कूल की ओर से बच्चों की परेड निकल रही थी। लगभग 300 से 400 की संख्या में बच्चे थे जो वहीं इमारतें गिरने से उसके मलबे में दफन हो गये। बाजार बस्ती सब कुछ एक हो गया और जमीन से लगभग 8–8 फुट ऊँचा मलबा ही रह गया था। जे.सी.वी. मशीनें मलबा हटा रही थीं और सड़ी गली लाशें जिनमें कीड़े रेंग रहे थे निकल रही थी। आर्मी के जवान भी कार्य कर रहे थे। कुछ सन्यासी आनन्द मठ गुजरात से थे। इनका कार्य केवल शव गाड़ियों में लेजाकर अंतिम संस्कार कराना था। हम भी सभी अपने–अपने स्ट्रेचर लेकर कार्य में लग गये, जब भी मशीन मलबा हटाती 2, 4 लाशें अवश्य निकलती। उनके परिजन भी वहाँ थे जो कपड़ों से अपनी लाशें पहचान रहे थे, पहली बार अपनी आँखों से तबाही का मंजर देखा। कोई गहराई में सीढियों के नीचे दबा था, कोई कहीं बाथरुम में। एक व्यक्ति को तो हमने मलबे में दबी स्टील की अलमारी से निकाला शायद वह कपड़े ले रहा होगा और हादसा हो गया।

हम सभी यही कार्य करते रहे। एक दिन तो शाम के पांच बजे आर्मी वाले एक इंसान को मलबे में आधा अधूरा छोड़कर चले गये थे क्योंकि वह घड़ी देखकर कार्य करते थे। उनके छोड़े हुये व्यक्ति को लगभग एक घंटे की मशक्कत के बाद हमने निकाला हालांकि वह मरा हुआ था परन्तु क्या उसे ऐसे ही छोड़ देना ठीक था? नहीं। इसी प्रकार हमने चार दिन तक अंजार में कार्य किया। सांय जब अंधेरा हो जाता तब हम लोग अपने ठहरने के स्थान पर पहुंचते, वहाँ जाकर स्नान डिटोल के पानी से कपड़े धोना ताकि कोई इन्फेक्शन न हो जाये और एंटीबायटिक दवा लेना। एक आर्य बन्धु ने अपनी बहुत बड़ी कोठी दे दी थी जिसमें अभी–अभी निर्माण हुआ था भूकम्प के कारण दरारें आई हुई थी।

फिर वहाँ से हम भुज के लिये रवाना हुये। रास्ते में कई बस्तियाँ ध्वस्त, मार्ग क्षतिग्रस्त। रास्ते में चौड़ी–चौड़ी दरारें। सांय हम भुज पहुँचे तो वहाँ भी वहीं मंजर। सभी कुछ मलबे में तब्दील हो चुका था। मालूम पड़ा कि यहाँ एक पुराना बाजार था (पुरानी दिल्ली की तरह)। अंधेरा हो चुका था, आर्मी का सख्त पहरा था। हमें आगे जाने से रोक दिया, रोकने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि यहाँ रात होते ही कुछ असामाजिक तत्व लूटपाट करते हैं। हमने अपना परिचय दिया कि हम आर्य समाज दिल्ली से राहत कार्य करने आये हैं तो उन्होंने अपनी सहमति दे दी और हम आगे बढे। देखा तो बुरा हाल। अगले दिन से फिर वही कार्य जो अंजार में किया था, इतने दिन बाद भी लाशें दफन हुई पड़ी थी। एक दो दिन हमने मिलकर शमशान घाट पर सांयकाल में सामूहिक अंतिम संस्कार भी किये, मन को बड़ा सकून मिला। एक दिन वहाँ ईश्वरीय चमत्कार देखने को मिला, एक गाय का बछड़ा टूटे हुये मकान में जो भूकम्प से खंडहर हो चुका था, बंधा हुआ था। माँ उसकी या तो मर चुकी थी या लापता थी। लगभग भूकम्प वाले दिन से लेकर उस दिन तक वह बछड़ा वहीं बंधा हुआ था। लगभग 10–12 दिन से अधिक समय हो गया होगा, न चारा न पानी और वह तो जन्मा भी लगभग 15–20 दिन पहले ही था। हमने उसे खोला तो वह पूँछ उठाकर बहुत तेजी से भागा। हम देखकर हैरान हो गये कि इतने दिन बाद भी इतनी शक्ति। ईश्वर को धन्यवाद दिया और कहा कि यह सब प्रभु की लीला ही है। तीन दिन कार्य करने के बाद हम वापस दिल्ली की ओर बढे ही थे कि थोड़ी दूर लगभग 50 कि० मी० दूरी के बाद एक खेत में पूर्व मुख्यमंत्री स्वः साहिब सिंह वर्मा जी एक खेत में खड़े दिखाई दिये, हमने अपनी गाड़ी उनके पास मोड़ दी और अभिवादन करके परिचय दिया कि दिल्ली आर्य समाज से हम लोग राहत कार्य के लिये आये थे सो अब वापस लौट रहे हैं। उन्हें हम से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई और हमें भी। उनके तंबू में कुछ देर बैठे। जल ग्रहण किया और बातचीत से मालूम पड़ा कि उन्होंने भूकम्प प्रभावित एक गाँव गोद लिया है उसे यहाँ बसाना है। यह सुनकर हम भी गदगद हो गये क्योंकि बहुत ही भलाई का कार्य था जो उन्होने अपने हाथ में ले रखा था। और फिर उनसे विदा लेकर हम दिल्ली प्रस्थान करने लगे। यह सब कार्य करके हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि हम कुछ समाज और देश के काम तो आये।

• ओम प्रकाश प्रेमी

यज्ञ के साकार रूपः

महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज के ईश्वर तथा वेदविषयक सिद्धान्तों व समाजोद्धारक कार्यक्रम से प्रभावित होकर अनेक मनुष्यों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन होते देखे गए, ज्ञान की आभा ने निरक्षर व्यक्तियों को भी समाज में सम्मानित स्थान उपलब्ध कराया, जीवन में पतित होने की चरम सीमा पार कर चुके मनुष्य भी इनसे प्रेरणा पाकर समाज में प्रष्ठिा के पात्र बने। महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ के अब तक के जीवनवृत्त पर दृष्टि डालने से उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि होती है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश में बागपत जिले के लुहारी गाँव में श्री धर्मसिंह एक साधारण कृषक परिवार के मुखिया थे जिनकी धर्मपत्नी का नाम मामकौर था। अशिक्षा एवं अभावों से ग्रस्त इनके ही परिवार में जून 1923 में एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम राम सिंह रखा गया। गाँव के अन्य बालकों की तरह स्थानीय विद्यालय से प्राईमरी स्तर की शिक्षा के साथ खेलते–खेलते पहलवानी करने लगे तथा पच्चीस वर्ष की आयु में सेना में भर्ती हो गए। लगभग पांच वर्ष उपरान्त पिताजी की मृत्यु एवं भाई की पत्नी के देहान्त होने के कारण इन्हें सेना की जाट रेजिमेन्ट की नौकरी छोड़नी पड़ी। यद्यपि सैनिक रामसिंह अभी तक अविवाहित थे परन्तु पिताजी की मृत्यु एवं भाई की पत्नी के देहान्त से द्रवित होकर इन्होंने विवाह करने के विचार को ही मन से निकाल दिया। सेना के सेवाकाल में जब भी रामसिंह अवकाश पर गाँव लौटते तो अपने आसपास के वातावरण में शून्यता का अनुभव करते थे अतः समय व्यतीत करने के लिए गीतावाचन करने लगे, कभी कभी आसपास के क्षेत्रों में होने वाले सांग–भजन के कार्यक्रम देखने–सुनने चले जाते। धीरे–धीरे उन्होंने फसलों के बाद ठाली हुए गाँव के लोगों को सांग में सुनी हुई रागनी सुनाते तो कभी–कभी कुछ बुजुर्ग लोगों की फरमाईश पर गीता का पाठ करने का उपक्रम शुरू कर दिया। उनके इन निरर्थक कार्यों को देख एक बुजुर्ग व निरक्षर व्यक्ति ने इन्हें एक पुस्तक उपलब्ध कराते हुए इसे पढ़कर सुनाने का आग्रह किया जिसे पढ़ते हुए युवा रामसिंह गंभीर चिंतन और जिज्ञासा में डूब जाता। इन्होंने एक माह तक इस पुस्तक का गहन अध्ययन किया, जिसमें कुछ समझ में आता तो कुछ के पढ़ लेने पर अनेक प्रश्नों से इनके मन में उबाल उठाने शुरू कर दिए। अब तो इन्होंने इस पुस्तक में लिखी बातों को ही लोगों को सुनाना प्रारम्भ कर दिया। इन्हें न तो अभी तक पुस्तक के नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' की जानकारी थी तथा न ही इसके रचयिता 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' अथवा आर्यसमाज की। पुस्तक में लिखी गयी बातों ने इनके जीवन में हलचल सी पैदा कर दी अतः निश्चय किया कि उधार में प्राप्त इस पुस्तक को लौटाकर अपने नियमित स्वाध्याय के लिए निजी पुस्तक खरीदी जाये। एक नयी 'सत्यार्थ प्रकाश'

पुस्तक खरीदकर एकाग्रमन से निरन्तर स्वाध्याय करते हुए अपने जीवन के बारे मे विचार करते।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती की लेखनी के जादू से युवा रामसिंह ने मन ही मन निश्चय कर प्रण लिया कि भविष्य में न तो कभी सांग देखूंगा, न ही रागनी गाऊँगा तथा शराब सेवन का परित्याग कर अपना जीवन महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार ढालूंगा। सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करते करते इन्हें अन्य ग्रन्थों की जानकारी भी मिली तथा जैसे–जैसे ये पुस्तकें उपलब्ध होती गयी तो इन्होंने उपलब्ध होने वाली सभी पुस्तकों का गहन स्वाध्याय किया। इस सम्पूर्ण प्रकरण में हम पायेंगे कि जिज्ञासु बनकर युवा रामसिंह एक अत्यंत सरल एवं सीधे मार्ग के पथिक बने। सत्यार्थ प्रकाश पाकर इसका स्वाध्याय करने के उपरान्त भी इस युवा को लगभग बीस वर्ष तक आर्यसमाज नामक संगठन की जानकारी नहीं हो पाई, ये तो किसी दिव्य–पुरूष द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के महासागर में ही गोते लगाता रहा।

एक दिन दिल्ली में केन्द्रीय आयुध भण्डार (सी.ओ.डी.) में कार्यरत इनके एक मित्र श्री रणजीत सिंह ने इन्हें बतलाया कि पश्चिमी दिल्ली स्थित असालतपुर गाँव में चौ. जीतराम के निवास पर यज्ञ तथा वेदकथा का आयोजन होना है अतः अपने उस मित्र के साथ दिल्ली में उस आयोजन में भाग लिया। इस आयोजन के लिए गुरूकुल कालवा (जींद) से दो ब्रह्मचारियों को साथ लेकर स्वामी सत्यपति परिव्राजक एवं गुरूकुल झज्झर से दो ब्रह्मचारियों को साथ लेकर आचार्य वेदानंद 'वेदवागीश' असालतपुर पधारे थे। चौ. जीतराम द्वारा निजी स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम में उपस्थित होने वाले उपरोक्त विद्वानों से ही हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में कैसे–कैसे दीवानों ने काम किया। दिल्ली के इस गाँव में चार दिन तक रामसिंह ने यज्ञ–पद्धति, यज्ञ के लाभों एवं वैदिक विद्वानों के सारगर्भित प्रवचनों से संचेतना प्राप्त की।

दिल्ली प्रवास के आठ दिन पश्चात रामसिंह ने अपने गाँव लौटकर प्रत्येक रविवार को यज्ञ करने–कराने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया। जन्माष्टमी आदि पर्वों पर भी प्रवचन आदि के विशेष कार्यक्रम करवाए जाने लगे जिनके आयोजन में चौ. जीतराम का प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त होता था। वर्ष 1973 से 1975 तक श्री योगानन्द वानप्रस्थी को अपने साथ लेकर गाँव के आस पास के क्षेत्रों में सघन प्रचार किया जाने लगा। धुन के धनी रामसिंह ने यज्ञ व वैदिक विद्वानों के भजनोपदेश से अनेक गाँवों में धूम मचा रखी थी । इस बीच वर्ष 1976 में पौराणिक पंडित माधवाचार्य तथा पंडित रामदयालु के बीच पौराणिक मान्यताओं को लेकर तीन दिन का एक शास्त्रार्थ छपरौली के बदरखा गाँव में हुआ। दोनों पक्षों ने अपनी–अपनी मान्यताओं को लेकर जोरदार तर्क प्रस्तुत किये किन्तु अंत में पुराणों की अनर्गल बातों के साथ झगड़े के वातावरण के बीच इस आयोजन का अन्त हुआ। निरन्तर ज्ञानवर्धन से उत्साहित होकर वर्ष 1976 में रामसिंह ने अपने खेतों के बीच यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार करवाया तथा घर छोड़कर खेतों में निवास करते हुए

देनिक यज्ञ की प्रक्रिया चलायी, निरन्तर स्वाध्याय किया तथा प्रचार कार्य को लक्ष्य बनाया।

फरवरी 1976 में रामसिंह ने निश्चय किया कि पुनः यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम पहले की अपेक्षा अधिक बड़े स्तर पर अपने ही गाँव में करवाया जाए परन्तु गाँव के लोग पूर्णतः इस कार्यक्रम के पक्ष में न होकर विरोध कर रहे थे। भला रामसिंह कुछ लोगों के विरोध से क्यों प्रभावित होते, मन में संकल्प कर ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि यह आयोजन निर्विध्न सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है तो वानप्रस्थी हो जाऊँगा। ईश्वर की अपार कृपा से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अपने संकल्प को यथार्थ रूप देते हुए रामसिंह ने स्वामी रामेश्वरानन्द जी से वानप्रस्थ–दीक्षा लेकर महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ के रूप में नवजीवन को प्राप्त किया। परिजनों तथा सम्बन्धियों ने वानप्रस्थ दीक्षा का खूब विरोध किया परन्तु स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने सभी को समझाते हुए कहा कि इनके जीवन का नवोदय होने जा रहा है, अब ये घर तथा समाज दोनों के हितों का पालन करेंगे।

महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ को निरन्तर स्वाध्याय करते हुए महात्मा आनन्दस्वामी के साहित्य को पढ़ना अधिक रूचिकर लगा तथा उनके द्वारा प्रस्तुत दृष्टान्तों के आधार पर समीपवर्ती गाँवों में प्रचार अभियान प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ के महत्व का प्रचार करने के उदेद्श्य से अपने गाँव में गुरूकुल लोवाँकला के स्वामी मानाचार्य के ब्रह्मत्व में एक वृहत यज्ञ का आयोजन किया जिसमें समीपवर्ती गाँव से हजारों लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की सफलता एवं महात्मा यज्ञमुनि वानप्रस्थ की कर्मठता से स्वामी मानाचार्य काफी प्रभावित हुए। एक योग्य आचार्य का सान्निध्य पाकर महात्मा यज्ञमुनि को एक नयी प्रेरणा मिली कि भविष्य में गुरूकुल के ब्रह्मचारियों को साथ लेकर स्थान–स्थान पर यज्ञ करने के महत्व का प्रचार करना चाहिए। उन्होंने अनेक स्थानों पर यज्ञ का प्रचार कार्यक्रम चलाते हुए गुरूकुल के सहयोग हेतु धन तथा अन्न एकत्र कर गुरूकुल को भेंट किया। स्वामी मानाचार्य चाहते थे कि वे अब यज्ञमुनि जी को अपने साथ रखें परन्तु यज्ञमुनि जी चाहते थे कि वे अपने स्थान पर रह कर ही प्रचार कार्य करें तथा जब भी स्वामी मानाचार्य ने यज्ञमुनि जी से आग्रह किया कि वे उनके साथ चलकर गुरूकुल को देखें। आचार्य की आज्ञा शिरोधार्य कर महात्मा यज्ञमुनि जी उनके साथ चल दिए तथा दो वर्ष तक गुरूकुल लोवाँकला में रहकर अपनी सेवाएं देते हुए गहन स्वाध्याय भी किया, इसी बीच महात्मा यज्ञमुनि जी कुछ अस्वस्थ हो गए अतः निश्चय किया कि रोगी के रूप में वे गुरूकुल की कन्याओं से अपने शरीर की सेवा न करने देंगे। अतः गुरूकुल से प्रस्थान कर अपने गाँव लौट आये तथा निर्णय किया कि अब इस कन्या गुरूकुल में नहीं जाऊँगा।

आर्यसमाज के उत्सव पर यजमान डा० जयदेव वर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला वर्मा एवं अन्य

वार्षिक उत्सव समय यज्ञ के यजमान स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी स्व० श्रीमती सुमित्रा देवी

पूज्यनीय लाला [illegible] द्वारा जिन्दा [illegible] उनकी
धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावतीदेवी की स्मृति में
ला. ज्ञानचन्द जिन्दल एवं धर्मपत्नी श्रीमती देवी,
एवं उनके सुपुत्र सुनील, अजय एवं
संजय जिन्दल ने 25100 रू आर्य समाज
मंदिर नांगल राय को धर्मार्थ दान दिए
दि - 16 - 5 - 1999

इस मुख्य द्वार का निर्माण
ला. श्री शिवचरण गुप्ता जी
एवं उनके सुपुत्र श्री राजेन्द्र गुप्ता
प्रधान नाँगल रया व्यापार मण्डल
द्वारा दिनांक 10-5-98 को कराया गया।

ओ३म्

इस भव्य भवन का शिलान्यास

महात्मा धर्मपालजी प्रधान आर्य केन्द्रीय

सभा दिल्ली के कर कमलों द्वारा

श्री करण सिंह तँवर विधायक दिल्ली सरकार

की अध्यक्षता में

दिनांक १८-८-९६ सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज नांगलराया के सदस्य

(जिनके चित्र उपलब्ध नहीं हो सके)

दिवंगत सदस्य

डॉ० ताराचन्द (टटीरी वाले)
श्री हुकम चन्द डुडेजा
श्री विधिचन्द मिस्त्री (संस्थापक सदस्य)
श्रीमती प्रेमदेवी डुडेजा
श्री देवकी नन्दन
मा० रघुराज शर्मा
श्री नेतराम
श्रीमती सावित्री देवी (इन्द्रा पार्क)
श्री अमर नाथ शर्मा (इन्द्रा पार्क)
श्रीमती चन्द्रावती (इन्द्रा पार्क)
श्री लाल चन्द
श्री सूरत सिंह दहिया (विजय एंक्लेव)
श्री रतन लाल डुडेजा
श्री नवनीत लाल
श्री चौथूराम डुडेजा
श्री राम दीवान
श्री दलीप सिंह
श्री चन्दन सिंह
श्री भँवर सिंह
मा० राम स्वरूप
श्री रणजीत सिंह
श्री ईश्वर चन्द्र
श्री डीघराम
श्रीमती उत्तम देवी
श्री रामकिशन (तेडावाला)
श्री अमर सिंह सुपुत्र श्री बाबू रूपचन्द
श्री देवी सिंह (पुरानी नांगल)
श्री हनुमान प्रसाद
श्री राम लाल
श्री जगदीश
श्रीमती गेंदो देवी
श्रीमती सोमती देवी
श्री महेन्द्रसिंह हलवाई
श्री सुरेन्द्र कुमार सोनी
श्री विजयपाल कटारिया
श्री अमर सिंह (सूजरा)
श्री गुड़मल सिंह तँवर
श्री चरण सिंह (बड़ौदिया)

निवर्त्तमान सदस्य

मा० देवदत्त (प्रिंसिपल)
श्रीमती कौशल्या देवी डी ब्लाक जनकपुरी
श्री तेजवीर शर्मा इन्द्रापार्क
मा० रणधीर सिंह मोघा
मा० दीपचन्द वर्मा
श्री अजीत कुमार
श्री विद्या सागर
मा० सन्तोष कुमार
श्री यशपाल बी ब्लाक जनकपुरी
श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी
श्री छेलूराम
श्री ओमवीर शास्त्री
मा० हंसराज
श्री रण सिंह
श्री शम्भूदयाल
श्री मायाराम
श्री फूलसिंह
श्री श्रवण कुमार बिश्नोई
श्री ब्रह्मानन्द शर्मा
श्री मोहन लाल (पलड़ी)
श्री सुरेश कुमार (पु० नांगल)
श्रीमती मौहर कौर (पु० नांगल)
मा० नवाब सिंह
श्री हरपाल सिंह
श्रीमती नीलम रानी जोशी
श्री जितेन्द्र सिंह तँवर
श्री सुधीर कुमार भटनागर
श्री जगदीश प्रसाद आर्य
श्रीमती उषा रानी
श्रीमती सरस्वती देवी
श्री रमेश कुमार भगत
श्री रमेश चन्द्र मल्होत्रा
श्री काशीराम राठी
श्रीमती नरेश भाटिया
श्री अशोक भाटिया
श्री सुरेश कुमार डी2ए/37ए
श्री रविदत्त शर्मा टेलर
श्रीमती सुषमा देवी
श्रीमती प्रेमवती तँवर
श्रीमती अनिता तँवर सुपुत्री श्री रमेश तँवर
श्री दृगपाल सिंह तँवर
श्री शिशुपाल तँवर
श्रीमती प्रेमदेवी तँवर
श्री धर्मेन्द्र सिंह तँवर
श्रीमती निशा तँवर
श्रीमती रानी डुडेजा
श्री सन्दीप डुडेजा
श्री सुनील कुमार मोघा
श्रीमती बसन्ती देवी
डा० वी. के. वर्मा
श्री चरण सिंह ठेकेदार
श्री रणवीर सिंह
श्रीमती कुसुमलता देवी
श्री हितेन्द्र सिंह
श्री तनुज तँवर
श्री मनीष कुमार तँवर
श्री मुकेश वर्मा
श्रीमती सुदेश देवी

सदस्यों का विवरण

क्र.स.	नाम	पिता/पति का नाम	स्थायी पता	फोन नम्बर	व्यवसाय	जन्मतिथि
1.	जगमाल सिंह यादव	स्व० श्री चिमनलाल यादव	डब्लूजैड 1391/32 नांगलराया	28520861	सेवा निवृत	03.12.1925
2.	भगवान दास	स्व० श्री हरकेश सिंह	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	28524068 9213494923	सेवा निवृत	20.01.1937
3.	लीला देवी	पत्नी श्री भगवान दास	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	28524068	गृहिणी	11.12.1937
4.	प्रमोद पँवार	पुत्र श्री भगवान दास	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	28524264	निजी व्यवसाय	13.08.1959
5.	पुष्पा पँवार	पत्नी श्री प्रमोद पँवार	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	28524264	गृहिणी	02.05.1962
6.	प्रवीण पँवार	पुत्र श्री भगवान दास	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	9811735177	सेवारत	06.10.1973
7.	सन्ध्या पँवार	पत्नी श्री प्रवीण पँवार	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	28524068	गृहिणी	23.12.1979
8.	सुरक्षा देवी	पत्नी श्री अरविन्द कुमार	डब्लूजैड 1254 नांगलराया	28520093 9312063187	सेवारत	20.06.1962
9.	डा० जयदेव वर्मा	स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	डब्लूजैड 311 ए/3 नांगलराया	28111030 9350904627	पशु चिकित्सक	18.09.1936
10.	कमला वर्मा	पत्नी डा० जयदेव वर्मा	डब्लूजैड 311 ए/3 नांगलराया	28111030	सेवा निवृत	01.01.1937
11.	डा० अजय आर्य	श्री डालचन्द	डब्लूजैड 1034 आर्यसमाज नांगलराया	9810807830	सेवारत	10.05.1971
12.	मनोज आर्य	श्री सुरेश राम	डब्लूजैड 1545 नांगलराया	28522635	छात्र	07.06.1986
13.	ओमप्रकाश प्रेमी	स्व० श्री कन्हैयालाल प्रेमी	डब्लूजैड 284 गली न.10 लाजवन्ती गार्डन	28520321	सेवारत	11.03.1959
14.	रामकिशन सिंह	स्व. बाबू रूपचन्द	डब्लूजैड 1303 ए नांगलराया	28525294	सेवा निवृत	04.02.1929
15.	राजेश प्रसाद शर्मा	स्व. श्री रघुबर दयाल	आरजैड 591/इ–7 गली न. 24, साधनगर–2, नई दिल्ली–45	25031043	सेवा निवृत	01.12.1941
16.	सतपाल सिंह	स्व० श्री हरीशचन्द्र	डब्लूजैड 1386 बी नांगलराया	28523477	सेवा निवृत	06.04.1943
17.	आशारानी	पत्नी श्री सतपाल सिंह	डब्लूजैड 1386 बी नांगलराया	28523477	गृहिणी	
18.	राजपाल सिंह	स्व० श्री हरिशचन्द्र	डब्लूजैड 1311 नांगलराया	28520592	सेवारत	12.03.1949
19.	यशोदा देवी	पत्नी श्री राजपाल सिंह	डब्लूजैड 1311 नांगलराया	28520592	गृहिणी	01.07.1956
20.	पृतिपाल सिंह	स्व० श्री हरिशचन्द्र	डब्लूजैड 1312 नांगलराया	28523967	सेवारत	19.05.1956
21.	पुष्पा देवी	पत्नी श्री पृतिपाल सिंह	डब्लूजैड 1312 नांगलराया	28523967	गृहिणी	
22.	अविनाश तँवर	श्री राजपाल सिंह	डब्लूजैड 1311 नांगलराया	28520592	सेवारत	12.03.1979
23.	रेनू तँवर	पत्नी श्री अविनाश तँवर	डब्लूजैड 1311 नांगलराया	28520592	सेवारत	

24.	प्रमोद तँवर	स्व० श्री पृथ्वीराज वर्मा	डब्लूजैड 346 नांगलराया	28112507 9717670953	सेवा निवृत	21.12.1948
25.	देवदत्त शर्मा	स्व० श्री तोखराम शर्मा	डब्लूजैड 346 डी नांगलराया	28112079	सेवा निवृत	08.03.1947
26.	रविदत्त शर्मा	श्री देवदत्त शर्मा	डब्लूजैड 346 डी नांगलराया	9999437402	निजी व्यवसाय	29.01.1968
27.	दीपक वर्मा	स्व० श्री विशन स्वरूप वर्मा	डब्लूजैड 347 नांगलराया	9810246704	निजी व्यवसाय	
28.	यशपाल वर्मा	स्व० श्री विशन स्वरूप वर्मा	डब्लूजैड 347 नांगलराया	28113725 9873311950	सेवारत	01.10.1950
29.	अशोक कुमार	स्व० मा० ईश्वर सिंह	डब्लूजैड 1253 नांगलराया	28520728	सेवारत	
30.	विमला देवी	पत्नी श्री अशोक कुमार	डब्लूजैड 1253 नांगलराया	28520728	गृहिणी	
31.	देव कुमार	स्व० मा० ईश्वर सिंह	डब्लूजैड 1302 नांगलराया	28523260	सेवारत	03.03.1961
32.	आरती देवी	पत्नी श्री देव कुमार	डब्लूजैड 1302 नांगलराया	28523260	गृहिणी	14.08.1964
33.	पूनम तँवर	पत्नी स्व० श्री विजय कुमार	डब्लूजैड 1302 नांगलराया		गृहिणी	17.04.1970
34.	इन्द्रकुमार	स्व० मा० ईश्वर सिंह	डब्लूजैड 1302 नांगलराया	28520025	निजी व्यवसाय	12.07.1973
35.	नरेन्द्र सिंह	स्व० श्री छतर सिंह	डब्लूजैड 1303 नांगलराया	9810503591	सेवारत	04.05.1967
36.	हरनन्द सिंह	स्व० श्री हरिकिशन सिंह	डब्लूजैड 1301 नांगलराया	28523583	सेवा निवृत	20.11.1947
37.	शकुन्तला देवी	पत्नी श्री हरनन्द सिंह	डब्लूजैड 1301 नांगलराया	28523583	गृहिणी	
38.	गौरव तँवर	श्री हरनन्द सिंह	डब्लूजैड 1301 नांगलराया	28523583	सेवारत	07.10.1984
39.	आनन्द वाही	स्व० श्री चुन्नी लाल वाही	डब्लूजैड 262 नांगलराया	28113451	अध्यापक	25.10.1950
40.	कमलेश वर्मा	स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	डब्लूजैड 311 ए/1 नांगलराया	9873370981	सेवा निवृत	20.11.1950
41.	रमेश तँवर	स्व० श्री देवदत्त वर्मा	डब्लूजैड 311 नांगलराया	9212538486 9582991102	निजी व्यवसाय	12.02.1945
42.	कमलेश तँवर	पत्नी श्री रमेश तँवर	डब्लूजैड 311 नांगलराया	28116970	गृहिणी	
43.	अनिता तँवर	पत्नी श्री भूपेन्द्र सिंह	डब्लूजैड 311 नांगलराया	25532102	अध्यापिका	19.02.1972
44.	ब्रह्म प्रकाश	स्व० श्री गुरूदयाल	डब्लूजैड 1389 नांगलराया	28522726	सेवारत	15.11.1964
45.	रिपुदमन सिंह	श्री सतपालसिंह	डब्लूजैड 1386 बी नांगलराया	28523477	निजी व्यवसाय	09.12.1969
46.	अनिता	पत्नी श्री रिपुदमन सिंह	डब्लूजैड 1386 बी नांगलराया	28523477	गृहिणी	
47.	राम दास आर्य	स्व० श्री मंगलदेव	डब्लूजैड 74ए/1 मोहन नगर	9312245509	सेवा निवृत	10.10.1947
48.	मधु आर्य	पत्नी श्री रामदास आर्य	डब्लूजैड 74ए/1 मोहन नगर	25392777	गृहिणी	

49.	प्रभात कुमार श्रीवास्तव	स्व० श्री डी.एन. श्रीवास्तव	डब्लूजैड 1116 नांगलराया	65349667	सेवारत	01.01.1961
50.	शोभना श्रीवास्तव	पत्नी श्री प्रभात श्रीवास्तव	डब्लूजैड 1116 नांगलराया	65349667	गृहिणी	31.10.1971
51.	प्रमोद कुमार	श्री हुक्म सिंह	डब्लूजैड 1252 सी/ए नांगलराया	28520829 9910115583	अध्यापक	03.07.1960
52.	सेवानन्द	स्व० श्री मेहर चन्द	डब्लूजैड 1252 ए नांगलराया	9711959959	सेवा निवृत	01.01.1942
53.	गजराज सिंह	स्व० श्री रामशरण	डब्लूजैड 1223 नांगलराया	28520353	सेवा निवृत	01.07.1946
54.	दीपक आर्य	श्री भारत वर्मा	डब्लूजैड 284 गली न. 10 लाजवन्ती गार्डन	28520321	छात्र	05.02.1985
55.	जय किशन	स्व० श्री लाल चन्द	डब्लूजैड 1388 नांगलराया		निजी व्यवसाय	26.07.1968
56.	ओम प्रकाश	स्व० श्री गुरदयाल	डब्लूजैड 1389 नांगलराया	9350261804	सेवारत	18.08.1956
57.	प्रेमलता	पत्नी श्री ओम प्रकाश	डब्लूजैड 1389 नांगलराया		गृहिणी	
58.	विजय कुमार	श्री रणवीर सिंह	डब्लूजैड 1252 ई नांगलराया	28522546	सेवारत	26.03.1967
59.	स्नेहलता	पत्नी श्री विजय कुमार	डब्लूजैड 1252 ई नांगलराया	28522546	गृहिणी	20.10.1966
60.	सुरेश पाल	स्व० मा० रघुवीर सिंह	डब्लूजैड 1228 बी नांगलराया	28524434	सेवारत	17.11.1968
61.	सुनीता	पत्नी श्री सुरेश पाल	डब्लूजैड 1228 बी नांगलराया	28524434	सेवारत	29.08.1973
62.	सतीश कुमार वर्मा	स्व० श्री ओममित्र वर्मा	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28520590 9968299470	निजी व्यवसाय	13.04.1958
63.	ज्योति नागपाल	पत्नी श्री नरेश नागपाल	डब्लूजैड 311/ए 3 नांगलराया	28520951	सेवारत	21.02.1963
64.	बालकृष्ण सिंह	स्व० नत्थू सिंह	डब्लूजैड 1306 बी नांगलराया	28522244	अध्यापक	02.01.1953
65.	आशा रानी	पत्नी श्री धर्मपाल	डब्लूजैड 350 ए 3 नांगलराया	28111696	गृहिणी	15.07.1955
66.	ध्रुव वर्मा	स्व० श्री जयप्रकाश वर्मा	डब्लूजैड 311 ए 2 नांगलराया	28113683	मेजर	
67.	सुनील कुमार तँवर	श्री ओम प्रकाश	डब्लूजैड 1334 नांगलराया	9868434445	निजी व्यवसाय	10.12.1972
68.	सुरेश कुमार	स्व० चौ० खजान सिंह	डब्लूजैड 349 बी नांगलराया	9818380112	निजी व्यवसाय	01.08.1956
69.	सत्य देव शर्मा	स्व० श्री तोखराम	डब्लूजैड 346 डी नांगलराया	28112079	सेवारत	
70.	शकुन्तला देवी	पत्नी स्व० श्री वेदमित्र वर्मा	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28522660	गृहिणी	23.02.1943
71.	डा० विनोद कुमार	डा० मोती राम वर्मा	डब्लूजैड 1310 नांगलराया	28520374	सेवारत	17.02.1964
72.	डा० अरूणा पँवार	पत्नी श्री शशिकान्त वर्मा	डब्लूजैड 1080 बी नांगलराया	9312801604	चिकित्सिका	29.11.1967
73.	संदीप कुमार	श्री केशव बिन्जोला	डब्लूजैड 1467 नांगलराया	9350969022	छात्र	
74.	सन्नी कुमार	श्री राम कुमार	डब्लूजैड 1436 नांगलराया	28520096	छात्र	
75.	रविन्द्र कुमार तँवर	स्व० श्री ओम मित्र	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28522646		

76.	मेघावी तँवर	स्व० श्री राजेन्द्र तँवर	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28520962		
77.	माया	पत्नी स्व० श्री राजेन्द्र तँवर	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28520962		
78.	भारती	पत्नी श्री मेधावी तँवर	डब्लूजैड 1550 नांगलराया	28520962		
79.	प्रभाष गुप्ता	स्व० श्री विरधी	डब्लूजैड 1318 डी नांगलराया	9810963933		
80.	अरूण कुमार (पालु)	स्व० श्री रामशरण वर्मा	डब्लूजैड 1055 नांगलराया	9873165808		
81.	गीता वर्मा	स्व० मा० राजेश कुमार	डब्लूजैड 1255 नांगलराया			
82.	कुसुम		डब्लूजैड 1255 ई नांगलराया	9818293221		
83.	प्रदीप आर्य	श्री नकुल प्रधान	डब्लूजैड 1554 नांगलराया			
84.	तेजपाल सिंह	श्री टीकाराम	डीए2ए/95ए जनकपुरी			
85.	आजाद सिंह	श्री भीम सिंह	डब्लूजैड 52 गली न.9 वीरेन्द्र सिंह	9650897544		
86.	उमेश आर्य	स्व० श्री देवी सिंह	टी 25 पुरानी नांगल	9210882287	निजी व्यवसाय	01.04.1958
87.	वीना आर्य	पत्नी श्री उमेश आर्य	टी 25 पुरानी नांगल	9210882287	गृहिणी	05.11.1958
88.	सतेन्द्र तँवर	श्री घनश्याम सिंह	डब्लूजैड 1113 डी नांगलराया			
89.	अनिल तँवर	श्री रमेश कुमार तँवर	डब्लूजैड 311 नांगलराया	9811233060		13.10.1974
90	अमित तँवर	श्री रमेश कुमार तँवर	डब्लूजैड 311 नांगलराया	9811466010		12.10.1974
91.	रविन्द्र कुमार तँवर	श्री छेलूराम तँवर	डब्लूजैड 1263 ए नांगलराया			
92.	कृष्ण पाल	चौ० तुलसी राम	डब्लूजैड 525ए/3 नांगलराया			
93.	लोकेश कुमार	श्री कृष्ण पाल	डब्लूजैड 525ए/3 नांगलराया			
94.	विभु सिंह	माता श्रीमती कमलेश	डब्लूजैड 311 ए/1 नांगलराया	9711377567		
95.	अखिलेश कुमार सिंह	श्री उदयभान सिंह	डब्लूजैड 311 ए/1 नांगलराया			
96.	रामकिशन गुप्ता	श्री सूरजभान	डब्लूजैड 1661 नांगलराया	9871895555		
97.	रेखा	पत्नी श्री जितेन्द्र सिंह तँवर	डब्लूजैड 1386ए नांगलराया			
98.	अरूणिमा	पत्नी डा० अजय आर्य	डब्लूजैड 1034 नांगलराया			
99.	कुलदीप तँवर	डा० रोहताश तँवर	डब्लूजैड 1420/2 नांगलराया		निजी व्यवसाय	
100.	सावित्री देवी	पत्नी श्री रामकिशन सिंह	डब्लूजैड 1303 नांगलराया	28525294	गृहिणी	
101.	वैभव वर्मा	स्व० श्री जयप्रकाश	डब्लूजैड 311/ए–2 नांगलराया	28113683	सेवारत	
102.	शकुन्तला सिंह	स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा	सी 6 बी/21 जनकुपूरी	25555542		

आर्यसमाज के दस नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं, वेद का पढ़ना, पढ़ना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिएँ।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहि किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहि।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

आर्यसमाज नांगलराया, नई दिल्ली–110046

अपने गाँव में स्वास्थ्य लाभ करते हुए यज्ञमुनि जी ने गुरूकुल प्रभात आश्रम में जाने का विचार बनाया जहाँ पर वर्ष 1984 तक लगभग पांच वर्ष तक ब्रह्मचारियों के बीच रहकर संस्कृत का पठन–पाठन के साथ नियमित स्वाध्याय भी किया। इस बीच फज़लपुर गाँव का एक ब्रह्मचारी गुरूकुल छोड़कर भाग निकला। आचार्य जी के आदेश पर यज्ञमुनि जी को उस ब्रह्मचारी की जानकारी लेने तथा समझाने के लिए फज़लपुर आना पड़ा जहाँ गाँव के अनेक परिचित लोगों ने इनसे अपने गाँव के आर्यसमाज की दुर्दशा की चर्चा की जिसमें हरिजनों ने सूअर पाल रखे थे तथा आग्रह किया कि यज्ञमुनि जी फज़लपुर में रहकर इस गाँव के आर्यसमाज का जीर्णोद्धार करवाएँ। आर्यसमाज के हित को दृष्टिगत रखते हुए महात्मा यज्ञमुनि जी ने लोगों के आग्रह पर विचार करते हुए इस सम्बन्ध में उनके समक्ष अपनी निम्नलिखित चार शर्तें रखी :–

1. आर्यसमाज के लिए एकत्र होने वाले धन को हाथ नहीं लगाऊँगा।
2. एकत्रित होने वाले धन की आय व व्यय का मासिक ब्यौरा सार्वजनिक ढंग से प्रस्तुत करना होगा।
3. प्रत्येक दिन यज्ञ अवश्य करना होगा।
4. उपरोक्त शर्तों के पालन न करने की स्थिति में एक माह के बाद इस स्थान से चला जाऊँगा।

समस्त ग्रामवासियों द्वारा इन शर्तों के पालन का आश्वासन दिए जाने के उपरान्त महात्मा यज्ञमुनि जी ने गुरूकुल प्रभात आश्रम में आकर आचार्य जी को सभी जानकारी देते हुए गुरूकुल से प्रस्थान की आज्ञा लेकर फज़लपुर को अपनी कर्मस्थली बना लिया। लगभग पांच–छः वर्ष के भीतर आर्यसमाज का वृहत निर्माण कार्य सम्पन्न करवाने के उपरान्त नवनिर्मित आर्यसमाज भवन में नियमित यज्ञ एवं उत्सवों के आयोजन किये जाने लगे। इसी क्षेत्र के अनेक निवासी अपने जीवनयापन के लिए दिल्ली में आ बसे थे, वे बार–बार यज्ञमुनि जी से आग्रह करने लगे कि पश्चिम दिल्ली के सागरपुर क्षेत्र में एक आर्यसमाज स्थापित होने जा रहा है जहाँ पर आप जैसे चरित्रवान एवं अनुभवी व्यक्ति की निगरानी में आवश्यकता है अतः इस कार्य की जिम्मेदारी भी महात्मा यज्ञमुनि जी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए सागरपुर (दिल्ली) में विशाल आर्यसमाज भवन का निर्माण करवाने में भरपूर योगदान दिया। अभी तक के अपने जीवनकाल में महात्मा यज्ञमुनि जी ने किसी भी स्थान पर निष्क्रिय रूप से रहना स्वीकार नहीं किया बल्कि उत्तर प्रदेश के फज़लपुर, लुहारी, सुन्हेडा, बड़के, तेड़ा, बिजरौल आदि अनेक क्षेत्रों में बढ़–चढ़ कर वैदिक धर्म की मान्यताओं का सघन प्रचार अभियान चला रखा है। इसी प्रकार दिल्ली के सागरपुर, नांगलराया, इन्द्रापार्क, राजनगर आदि क्षेत्रों सहित देश के विभिन्न राज्यों में भी महात्मा यज्ञमुनि जी सतत भ्रमण करते रहते हैं।•

– आजाद सिंह
उप–संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीरदल

सुरेन्द्र कपूर

भूतपूर्व प्रधानाचार्य डी.ए.वी, दिल्ली छावनी

50–55 वर्ष पूर्व अपने विद्यालय डी.ए.वी. दिल्ली छावनी से निवास स्थान पर वापिस आते समय आर्यसमाज मार्ग पर स्थित आर्यसमाज मन्दिर नांगलराया में कभी–कभी कुछ क्षण बैठ जाता। पिछले प्राँगण में कुछ बालकों की गतिविधि निहारता और एक गुरूकुल और आश्रम जैसा वातावरण पाकर रोमांचित हो उठता। मेरे ही सहयोगी एवंम् सहकर्मी आर्यवीर दल के संचालक श्री सन्तोषजी आर्यसमाज के प्राँगण में झंड़ा गाड़े आर्यवीर दल की कक्षा का संचालन करते मिलते जिन में कुछ विद्यार्थी स्कूल के तथा कुछ आर्य परिवारों के होते।

उन दिनों महात्मा हंसराज जन्मोत्सव सामूहिक रूपेण चित्र गुप्ता रोड़ पर मनाया जाता था। उस उत्सव में सम्मिलित हो पहाड़गंज बस स्टाप पर पहुँचते ही लाला रामगोपाल जी शालवाले लोक सभा सदस्य ने आवाज दी–सुरेन्द्र जी, कहाँ जा रहे हो? मुझे नांगलराया, आर्यसमाज मन्दिर में 3.30 बजे तक पहुँचना है। आर्य वीर दल का उत्सव है। सन्तोष जी ने बुलाया है। मैंने कहा–चिन्ता मुक्त होकर मेरे साथ हो लीजिए, मैं भी वहीं जा रहा हूँ। बस की पिछली सीट पर बैठ गए और केवल दस मिनट घर बैठ कर आर्यसमाज नांगलराया पहुँच गए। जहाँ सन्तोष जी बालक–बालिकाओं को सम्बोधित कर रहे थे। भजनोपदेशक पं० हरिशचन्द्र जी दो अन्य वक्ताओं के साथ मंच पर विद्यमान थे। लाला जी का फूलमालाओं से स्वागत हुआ। वक्ताओं ने समयानुसार वक्तव्य दिए। पं० हरिशचन्द्र जी ने भजनों द्वारा समा बांध दिया। लाला रामगोपाल जी शालवाले (बाद में स्वामी आनन्दबोध) ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन से आर्यवीरों में एक जान सी फूँक दी। एक लघु कवि सम्मेलन भी हुआ। सायंकाल तक कार्यक्रम चला। ऐसा था सन्तोष जी पर उनकी कार्यस्थली आर्यसमाज नांगलराया का प्रभाव।

एक बार ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी का लगभग एक सप्ताह तक रात्रि के समय आर्यसमाज के प्रांगण में कार्यक्रम चला जोकि अति अदभुत था। वे मंच पर कुछ मिनट लेट कर निद्रावस्था से उठ कर विचित्र प्रकार की ध्वनि (आवाज) में प्राचीन ऋषि मुनियों आदि के समान देव भाषा संस्कृत में सस्वर पाठ करते एवंम् उपदेश देते। दूर–दूर से जनता उमड़ पड़ती। आर्यसमाज प्रांगण एक आकर्षण का केन्द्र

बन जाता। वह दृश्य आज भी आँखों के सामने आ जाता है। नांगलराया में दिन भर यह सत्संग चर्चा का विषय बना रहा।

अन्तराल में आर्यसमाज के अधिकारियों के यत्नों के फल स्वरूप दो बड़े हालों का निर्माण हो गया। अब तो आध्यात्मिक गति विधियों के साथ साथ अन्य परोपकारी एवम् सामाजिक कार्यक्रम भी होने लगे है। डा० अजय जी ने तो आर्यसमाज नांगलराया की गति विधियों में क्रान्ति सी ला दी। न स्वयं सोना और न दूसरे को सोने देना। अपनी टीम में डा० अजय जी ने कई ब्रह्मचारियों को अपने साथ मिला लिया। श्री अजय जी की कार्यशैली अनूठी ही है। गत वर्ष समाज के ऊपरी हाल से एक भव्य, आयोजन हुआ। दिल्ली से सटे हुए नगरों के आर्यवीर दल एवम् उनके संचालकों ने भाग लिया। आर्य वीरांगनाएँ भी अपनी अपनी टोली के साथ सम्मिलित हुई। नाटक, भाषण, कविता, प्रश्नोंत्तरी प्रतियोगिताएं भी हुई। पारितोषिक वितरण किए गए। कार्यक्रम पूरा दिन चला जोकि एक यादगार बन गया। परम्पिता परमात्मा समाज की कार्यकारणी के सदस्यों को दीर्घ आयु प्रदान करें ताकि आर्यसमाज इनके संरक्षण में उन्नति के पथ पर अग्रसर होता हुआ 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उदेश्य पूरा कर सके। •

गीत

खोजता फिरा मैं तुझे बाहर प्रभू

खोजता फिरा मैं तुझे बाहर प्रभू।
लेकिन है छिपा हुआ अन्तर में तू।।

नाभि में कस्तूरी की सुगन्ध है बड़ी,
ढूँढ़ता है मृग उसे, भरे चौकड़ी,
पास में सुगन्ध, मृग भागे दूर–दूर।।१।।

दूध में मलाई है, पर दिखती नहीं,
बिना श्रम विधि, कभी मिलती नहीं,
दही डाल मथो, घृत मिलेगा जरूर।।२।।

मेंहदी की पत्तियों का हरा–हरा रंग,
लाल रंग कहाँ छिपा, देख सभी दंग,
लेप करो हाथ रचें, जैसे हो सिन्दूर।।३।।

साबुन से धोया तूने मल–मलके तन,
कभी नहीं धोया निज चंचल ये मन,
मन धुले, हटे दुष्ट कर्मो की धूर।।४।।

बोया नहीं बीज चाहते हैं फूल–फल,
कर्म हैं निकृष्ट, चाहते हैं फल अमल,
आम कैसे मिलें, जब बोया है बबूल।।५।।

यम–नियमों की करो नित्य पालना,
अष्ट अंग योग की भी करो साधना,
दिल के ही कौने में मिलेंगे ओ३म् भूः।।६।।

— भगवानदास

डॉ० अजय आर्य

मेरा जन्म दिनाँक 10 मई 1971 को उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद मुरादाबाद तहसील ठाकुरद्वारा पोस्ट आफिस शरीफनगर के एक छोटे से गाँव करनावाला खालसा में एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में हुआ। यह गाँव मेरे ही पूर्वजों द्वारा बसाया गया था और वहाँ से प्रारम्भ करने पर मैं इस वँश परम्परा की 25वीं पीढी में हूँ। मेरा परिवार परम्परा से ही क्षेत्र के सबसे सम्मानित व समृद्ध परिवारों में सम्मिलित किया जाता था और सदैव अपनी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, शालीनता, उदारता व विनम्रता के लिए प्रसिद्ध रहा है तथा 'प्रधान' इस नाम से ख्यात है। गांव के सभी रीति रिवाजों का शुभारम्भ सदैव से ही इसी परिवार से होता रहा है।

मेरी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव व निकटवर्ती गाँव पृथ्वीपुर गांवडी के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में हुई। मेरे पिता श्री डालचन्द स्कूल में अध्यापक थे। अतः किसान परिवार होने के उपरान्त भी घर पर पढ़ाई का अच्छा वातावरण प्राप्त हो गया। मेरी माँ श्रीमती मूर्तिदेवी वैसे तो बिना पढ़ी लिखी हैं किन्तु तीनों पुत्रों व दोनों पुत्रियों की शिक्षा के प्रति सदैव सतर्क रही हैं। परमात्मा की असीम कृपा तथा माँ की सतर्कता व तप का ही परिणाम है कि आज हम पांचों भाई–बहन अपने अपने कार्यक्षेत्र में भलीभांति सुस्थापित हैं। वैसे तो सदैव से ही हमारे परिवार में धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार आदि व अन्य कोई व्यसन नहीं रहे हैं किन्तु पिता के अनुशासन तथा माँ की सतर्कता ने हम भाई– बहनों के बाल्यकाल से ही उन सभी संभावनाओं को बन्द कर दिया था जिनकी उपस्थिति प्रायः व्यक्ति को कुमार्ग की ओर अग्रसर कर दिया करती है। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आगे की शिक्षा के लिए गाँव से 6 किलोमीटर दूर स्थित छोटे कस्बे ठाकुरद्वारा में सनातन धर्म हिन्दू इन्टर कालेज में प्रवेश दिलाया गया। गाँव से शहर की ओर बढ़ने की यह पहली अनुभूति थी। जहाँ बाल मन में इसका उल्लास था वहीं शहर के सुन्दर व चपल बच्चों का साथ मन में झिझक, लज्जा व कभी–कभी भय तथा हीन भावना भी पैदा करता था। शुद्ध गाँव की भाषा की पृष्ठभूमि से आने के कारण स्कूल में शहर के बच्चों के मुख से निकलने वाले अँग्रेजी के शब्द मन को और भी अधिक हीन भावना से ग्रस्त कर देते थे। कक्षा 6 में अँग्रेजी अक्षरों के साथ यह मेरा पहला परिचय था। अंग्रेजी वर्णमाला सीखने में ही 2 महीने लग गये। अस्तु शनै शनै शिक्षा आगे बढ़ी और कालेज में प्रवेश पाया। मुरादाबाद में रहकर रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हिन्दू कालेज से रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व वनस्पति विज्ञान विषयों के साथ स्नातक व के० जी० के० कालेज से रसायन विज्ञान व दर्शन शास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त कीं। पिता डाक्टर बनाना चाहते थे किन्तु मेरी रूचि प्रशासनिक सेवाओं की ओर थी। संयोगवश न पिता की इच्छा पूरी हुई और न मेरी। मेरी रूचि ने पिता की इच्छा पूरी न

होने दी और एक सड़क दुर्घटना ने मेरी इच्छाओं को भस्मीभूत कर दिया। सत्य यह है कि कोई राह न पाकर गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार कार्मिक प्रबन्धन के अध्ययन हेतु चला गया और वहां से कार्मिक प्रबन्धन में स्नातकोत्तर व दर्शन शास्त्र में पी० एच० डी० की।

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से कार्मिक प्रबन्धन में स्नातकोत्तर करने के बाद दिल्ली आ गया और 'जय भारत मारूति टूल्स' में कार्मिक विभाग में एक्जीक्यूटिव के तौर पर पहली नियुक्ति हुई। इसके बाद कम्पनी, स्थान, पद आदि बदलते रहे और वर्तमान में जब मैं अपना यह परिचय लिख रहा हूँ तो एक बड़ी यूरोपियन कम्पनी टी० जी० आई० में Group Head - Corporate Strategy (HR) के रूप में कार्यरत हूँ एवं नाईजीरिया में स्थापित हूँ। अस्तु.....

दिल्ली में मैं सन् 1997 के अन्त में आया और जुलाई 1998 में पहली बार आर्यसमाज नांगलराय के सम्पर्क में आया। परम्परा से मेरा परिवार पौराणिक था किन्तु माता पिता के चिन्तन व विचारों में संकीर्णता का लेशमात्र भी न था। मेरे बड़े भाई 10 वर्ष की अवस्था में ही अध्ययन के लिए गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) भेज दिये गये थे। उनके गुरूकुल में प्रवेश के साथ ही हमारे परिवार में आर्य विचारधारा का प्रवेश हुआ। माता पिता के खुले चिन्तन व विचारों ने इसे पल्लवित होने का अनुकूल वातावरण प्रदान किया। आर्यसमाज से इस प्रकार परिचय होने के बाद ही विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये एवं चिन्तन का दायरा व्यष्टि से हटकर समष्टि पर केन्द्रित होता चला गया। वैदिक साहित्य में रूचि, राष्ट्र के गौरवशाली अतीत में मान व उन रीति–रिवाजों, मान्यताओं व परम्पराओं के प्रति विरोध का भाव दिनोंदिन बढ़ता ही चला गया जो प्रचलित तो धर्म के नाम पर थीं किन्तु राष्ट्र की अवनति के लिए अन्तिम रूप से उत्तरदायी थीं। इस चिन्तन व विचारधारा का परिणाम था कि मैं अपने अध्ययनकाल में ही आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय हो गया। मुरादाबाद की स्टेशन रोड़ आर्यसमाज को केन्द्र बनाकर सन् 1990 से 1995 तक पहले आर्य कुमार सभा व बाद में आर्य वीर दल का संचालन करता रहा। इसके बाद हरिद्वार में 'ऋषि चेतना मंच' नाम से एक संगठन बनाकर शराब आदि के विरूद्ध आन्दोलन खड़ा किया जिसमें गुरूकुल कांगड़ी के छात्रों की मुख्य भूमिका रही। आर्यसमाज नांगलराय में सबसे पहले मेरा परिचय श्री भगवानदास जी से उनके घर पर हुआ। उनकी सरलता, आर्यसमाज की उन्नति के प्रति उनकी कामना व अपनत्व की भावना ने मेरे मन में आर्य समाज नांगलराय में आर्य समाज के कार्य की संभावना, वातावरण व सफलता के प्रति आश्वस्त होने के भाव पैदा कर दिए जो कार्य समाज के अन्य अधिकारियों से सम्पर्क होने पर पूर्ण विश्वास में बदल गए। मुझे दिल्ली में एक ऐसे स्थान की खोज थी जिसे केन्द्र बनाकर मैं आर्यसमाज के कार्य में अपना कुछ योगदान दे सकूँ। आर्यसमाज नांगलराय के सम्पर्क में आने से मेरी वह खोज पूरी हो चुकी थी। सौभाग्य से दिल्ली में मेरा परिचय का क्षेत्र तेजी से बढ़ता चला गया। कई ऐसे लोगों का सहयोग मिला जिन्होंने साथी, मार्गदर्शक, सहयोगी, शुभचिन्तक

आदि की भूमिकाएं निभाई और निरन्तर उत्साहवर्धन करते रहे।

दिल्ली के आर्य वीर दल की गतिविधियों में तो मैं सन् 1997 से ही सक्रिय हो गया था किन्तु आर्यसमाज नांगलराय में जुलाई 1998 से आर्यवीर दल का कार्य प्रारम्भ किया। समाज में आर्य वीर दल की शाखा प्रारम्भ होने के कुछ समय बाद ही शाखा में आर्य वीरों की संख्या 125 तक पहुँच गई और लम्बे समय तक निरन्तर यही संख्या बनी रही। इस शाखा की प्रसिद्धि का ग्राफ बहुत तेजी से बढ़ा। शाखा में आने वाले अधिकांश बच्चे गरीब परिवारों से सम्बन्ध रखते थे। अतः शाखा की नियमित दिनचर्या में बौद्धिक प्रशिक्षण व शारीरिक व्यायाम के साथ–साथ पठन पाठन को भी अनिवार्य बना दिया गया। पठन पाठन का यह क्रम पहले छोटे स्तर पर प्रारम्भ किया गया जिसका दायित्व मैंने स्वयं उठाया। सांयकालीन गतिविधियों का क्रम कुछ इस प्रकार था कि अपने कार्य स्थल से 7.00 बजे आने के बाद तुरन्त 7.00 बजे से 8.30 बजे तक आर्यवीर दल की शाखा का संचालन एवं 8.30 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक आर्यसमाज की यज्ञशाला में फर्श पर बैठकर पढ़ाई की कक्षाओं का संचालन। प्रातः 4.00 बजे जागरण के साथ कार्यालय जाने तक का सारा समय दैनिक दिनचर्या, संध्या, ध्यान, हवन व भोजन आदि बनाने में ही व्यतीत हो जाता था। कार्य की अधिक व्यस्तता व शारीरिक तथा मानसिक थकावट के कारण रात्रि में भोजन बनाने की शक्ति शेष नहीं बचती थी। अतः सायं का भोजन त्याग कर दूध व फलाहार पर आ गया और यह क्रम लगभग 6 वर्षों तक चला। दिल्ली की किसी आर्यसमाज में आर्यवीर दल के माध्यम से पठन पाठन कार्य पहला प्रयास था जो अत्यन्त सफल रहा। इसके बाद कई आर्यसमाजों ने इस परम्परा को अपनाया। पठन पाठन के इस प्रयोग की सफलता के अनुभव के बाद इसे और अधिक व्यवस्थित करने के उद्देश्य से आर्यसमाज परिसर में पठन पाठन की कक्षाएं चलाने के लिए वैतनिक व स्वयंसेवी शिक्षक की सेवाएं ली गई। सन् 2004 में जिस अमेरिकी कम्पनी में मैं कार्यरत था उसकी सहायता से आर्यसमाज परिसर में 'सर्वोत्कर्ष' नाम से एक निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ किया गया जिसका उद्घाटन स्वयं उस कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक श्री रतिन्द्र के० पुरी के द्वारा किया गया। यह कम्प्यूटर केन्द्र आर्यसमाज व आर्यवीर दल की गतिविधियों में अत्यन्त अहम सिद्ध हुआ। इससे न केवल आर्यसमाज नांगलराय की यशोवृद्धि हुई अपितु गरीब परिवारों से सम्बन्ध रखने वाले अनेक विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त हुआ। आर्यसमाज नांगलराय व यहां पर संचालित आर्यवीर दल की शाखा का यह गौरव है कि यहां से प्रेरणा पाकर व यहां पर संचालित गतिविधियों से लाभान्वित होकर अनेक साधनहीन विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल हुआ है और वे आज विभिन्न संस्थानों में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर स्थापित रहकर पूरी योग्यता व जिम्मेदारी के साथ अपना अपना दायित्व निभा रहे हैं। अस्तु.....

आर्यसमाज नांगलराया में रहते हुए जीविकोपार्जन हेतु कार्यस्थल पर व्यतीत समय के अतिरिक्त जो भी शेष समय

बचता था वह आर्यसमाज व आर्यवीर दल की गतिविधियों के लिए ही समर्पित रहा। आर्यसमाज नांगलराय में संचालित गतिविधियों का परिचय देश में आर्यसमाज के लगभग सम्पूर्ण विस्तार तक पहुँचा।

जहाँ देश की लगभग सभी आर्यसमाजों में एक ऐसा वातावरण बन चला है कि युवाओं के आर्यसमाज में प्रवेश के लिए सहायक गतिविधियों के संचालन की परम्परा समाप्त हो रही है। इतना ही नहीं आर्यवीर दल से सम्बन्ध रखने वाले युवाओं को कई आर्यसमाजों में सदस्यता तक नहीं दी जाती है वहीं दूसरी ओर आर्यसमाज नांगलराय में आर्यवीर दल की गतिविधियों को संचालित करने के लिए न केवल स्थान उपलब्ध कराया गया अपितु इन गतिविधियों के प्रोत्साहन व विस्तार के लिए यह समाज धन, संसाधनों व मार्गदर्शन के साथ सदैव तत्पर व समर्पित रही। निश्चित रूप से आर्य समाज नांगलराय के सभी सदस्य व अधिकारीगण न केवल प्रशंसा के पात्र हैं अपितु अन्य आर्यसमाजों के लिए एक प्रेरणा के रूप में भी प्रस्तुत हैं। यदि उस समयान्तराल में आर्यसमाज नांगलराय ने आर्यवीर दल की गतिविधियों के संचालन के माध्यम से किसी उपलब्धि को प्राप्त किया है तो उसके मूल में मात्र इस समाज के सभी सदस्यों का सहयोग, समर्पण, निष्ठा व मार्गदर्शन ही है अन्य सब कारण निमित्त मात्र हैं।

आर्यसमाज नांगलराय परिसर में लगभग 10 वर्षों तक मेरा स्थायी निवास रहा। इस दौरान मुझे न केवल सामाजिक क्षेत्र में एक पहचान मिली अपितु यहाँ रहते हुए अपने निजी जीवन में भी मुझे कई उपलब्धियाँ प्राप्त हुई। एक ओर जहाँ मेरे कार्य क्षेत्र में लगातार पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रही वहीं दूसरी ओर मन में नई नई महत्त्वाकांक्षी कार्य योजनाएं जन्म लेती रहीं। इन योजनाओं में वैदिक वांग्मय् के प्रचार प्रसार के लिए अत्याधुनिक संसाधनों के उपयोग संस्कृत भाषा को आधार बनाकर कम्प्यूटर के माध्यम से संस्कृत एडिटर के द्वारा संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं से सम्बन्ध करने की अति महत्वाकांक्षी योजना, प्राचीन वांग्मय् में प्रयुक्त समस्त तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली व परिभाषाओं की पहचान व खोज करके उन्हें आधुनिक विज्ञान में प्रयुक्त शब्दावली व परिभाषाओं के सन्दर्भ में व्याख्यायित करते हुए एक वृहत शब्दकोश बनाकर भविष्य में संस्कृत शब्दावली व परिभाषाओं के आधार पर विज्ञान की खोज को एक नई दिशा देना, वैदिक विचारों से ओत प्रोत युवाओं को तैयार करके देश की प्रशासनिक सेवाओं में भेजने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र चलाना। आदि आदि सम्मिलित हैं। इन में से लगभग प्रत्येक योजना पर कार्य प्रारम्भ भी हुआ किन्तु अन्य अनेकों कारणों से न तो इनमें आशानुरूप प्रगति हो पायी और न ही विशेष सफलता प्राप्त हो सकी। मन्द गति से इन योजनाओं पर कार्य अभी भी चल रहा है किन्तु उचित समय की प्रतीक्षा है जब पूरी शक्ति के साथ इन योजनाओं को गति देने की अनुकूलता प्राप्त होगी। परमात्मा की अनुकम्पा होगी तो शीघ्र ही यह प्रतीक्षा भी पूर्ण हो जायेगी।

आर्यसमाज नांगलराय में निवास करते हुए ही मैंने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। मेरी पत्नी डॉ० अरूणिमा गुरूकुल चोटीपुरा की स्नातिका हैं और चौधरी चरणसिंह

विश्वविद्यालय मेरठ से सम्बद्ध एस० डी० डिग्री कालेज मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में संस्कृत की प्रवक्ता हैं। डॉ० अरूणिमा के चरित्र व व्यक्तित्व में योग्यता व विद्वत्ता के साथ सत्यता, सादगी, सरलता, संघर्ष स्वाभिमान, सहृदयता व शालीनता का जो एक अत्यन्त सन्तुलित मिश्रण है उसकी तुलना ढूंढना सहज नहीं है। परमात्मा की कृपा से मुझे व मेरी पत्नी को एक पुत्र के माता–पिता होने का सौभाग्य प्राप्त है। परमात्मा उसपर कृपा व आप्तजन आशीर्वादों की वर्षा करें कि वह मेधावी बुद्धि होकर धर्म, कुल, समाज, राष्ट्र व विश्वमात्र का गौरव ऊंचा करे।

जहां तक मेरे सामाजिक कार्यों व परिचय का विस्तार जाता है उसका अधिकांश भाग आर्यसमाज नांगलराय से जुड़ा है। यह समाज अब तक के जीवन में मेरी कर्मस्थली रहा है। यदि मेरे अब तक के सामाजिक जीवन से आर्यसमाज नांगलराय को निकाल दिया जाए तो मेरे सामाजिक जीवन का अस्तित्व लगभग नगण्य हो जाता है। इस आर्यसमाज के अधिकारियों व सदस्यों से मुझे जो अपनत्व व स्नेह प्राप्त हुआ है उसकी उपमा ढूंढना सरल नही हैं। इस आर्यसमाज को केन्द्र बनाकर अधूरे रह गये पूर्वदर्शित कार्यों को पूरा करने की लालसा अभी भी उतनी ही बलवती बनी हुई है जितनी ये अपने उदगम् काल में थी। परमात्मा अनुकंपा करे कि नाइजीरिया से वापस लौट कर उक्त अधूरे कार्यों को पूरा करने की लालसा यथावत् बनी रहे इसके लिए परिस्थितियों की अनुकूलता व स्वास्थ्य तथा संसाधनों की सामर्थ्य प्राप्त हो और आर्यसमाज नांगलराय से पूरे विश्व में वैदिक दुदुंभि के घोष का स्वर गुंजायमान हो। •

सुरेन्द्र कुमार (सुरेश कुमार)

जन्मतिथि : 01.08.1956

जन्म स्थान : टटीरी (बागपत)

शिक्षा : एम. काम.

स्थाई पता : डब्ल्यू जैड–349 बी, नांगल राया, नई दिल्ली–110046

व्यवसाय : व्यापार

पत्नी का नामः श्रीमती सरोज देवी

पुत्र : एक (विनय कुमार)

पुत्री : एक (रचना)

अभिरूचि : आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ना। आप आर्यसमाज नांगलराय के सदस्य हैं और अपने घर पर नियमित रूप से दैनिक यज्ञ करते हैं। आप स्वभाव से विनम्र शान्त हैं। सेवा, सहयोग और श्रम आपके मूलमन्त्र हैं।

दूरभाष : 28111808

मो० : 9818380112

ओ३म्

एक उत्साही आर्यसमाजी, चरित्रवान राजनेता, सच्चे जनहितैषी,
पूर्व महानगर पार्षद स्व० श्री राजेन्द्र कुमार तंवर को
हमारा शत–शत नमन्

श्री राजेन्द्र कुमार तँवर

12.8.1939-26.11.1999

हम हैं आपके :–

धर्मपत्नी

श्रीमती माया देवी

पुत्र

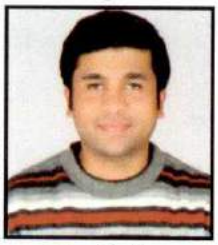

मेधावी तँवर

पुत्रवधू

श्रीमती भारती

पौत्र

मानिल

पौत्र

प्रखर

WZ- 1550, नांगलराया, नई दिल्ली - 110046

ओ३म्

100वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि

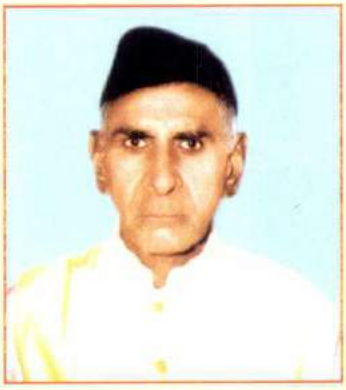

स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा
25.1.1912 – 26.11.2000

स्व० श्रीमती हीमती देवी
20.4.1915 – 6.5.2005

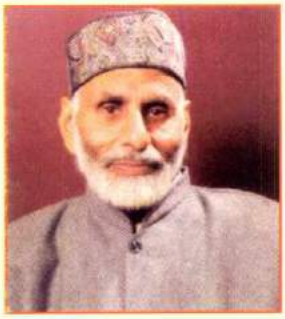

स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा
26.6.1938–30.3.2012

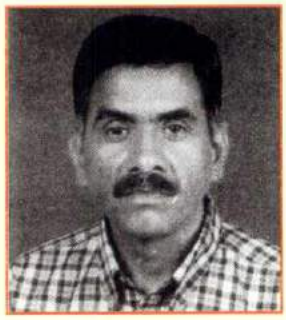

स्व० श्री जय प्रकाश
8.3.1948–3.3.2008

हम हैं आपके :-

डा० जयदेव वर्मा व श्रीमती कमला देवी
मेजर जनरल अनिल वर्मा व श्रीमती कविता वर्मा
श्रीमती शुभा वर्मा धर्मपत्नी स्व० श्री वेद प्रकाश वर्मा
श्रीमती सन्तोष वर्मा धर्मपत्नी स्व० श्री जयप्रकाश वर्मा

शकुन्तला सिंह व स्व० श्री चन्द्रपाल सिंह
प्रेमलता कपूर व श्री सरनदास कपूर
श्रीमती कमलेश

ओ३म्

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व० बाबू रूप चन्द्र जी
1900 – 1992

स्व० श्री बालकृष्ण तँवर ए.सी.पी.
27.10.1931 – 27.8.1990

हम हैं आपके :–

दृगपाल सिंह

श्रीमती शीतल

कु० ताँसी

ओ३म्

श्रद्धांजलि

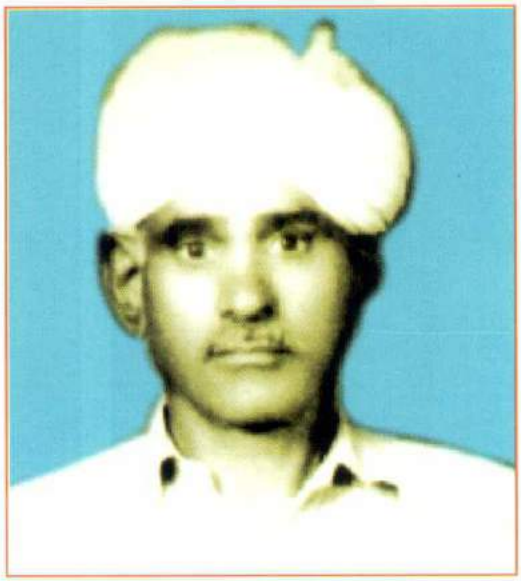

स्व० श्री तोखराम पहलवान

पत्नी श्रीमती भगवानी

पुत्र

श्री देवदत्त शर्मा
स्व० श्री सोमदत्त शर्मा
स्व० श्री ब्रह्मदत्त शर्मा
श्री राज कुमार शर्मा
श्री सत्यदेव शर्मा
श्री पृथ्वीपाल शर्मा

पुत्रियाँ

श्रीमती सावित्री देवी
श्रीमती चन्द्र कान्ता
श्रीमती सत्यावती

ओ३म्

आर्यसमाज नांगलराया
के
दिवंगत एवं वर्तमान
सदस्य

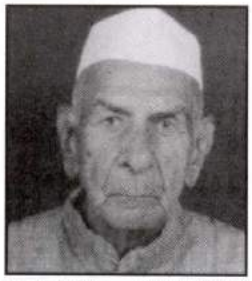

25.1.1912 – 26.11.2000

स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा

जन्मतिथि : 25–01–1912
जन्मस्थान : नांगल राया
शिक्षा : रामजस विद्यालय नं० 2, आनन्द पर्वत, दिल्ली
स्थाई पता : WZ-311/A, नांगल राया, नई दिल्ली–46
व्यवसाय : सरकारी नौकरी सेवा
निवृत : 25.1.1973
कार्यक्षेत्र : आर्यसमाज का प्रचार–प्रसार
परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमती हीमती देवी

उनके चार पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं :–

1. श्रीमती शकुन्तला – प्रभाकर
2. डा. जयदेव वर्मा – बी.वी.एस.सी. एण्ड एच.एन पी वी एम (पी जी)
3. स्व० वेद प्रकाश वर्मा – आर्किटेट, रुड़की
4. प्रेमलता कपूर – एम ए, डी पी एड
5. स्व० श्री जय प्रकाश वर्मा – बी ए, रजिस्टरार, डी एच बी
6. श्रीमती कमलेश – बी ए, बी एड
7. श्री अनिल वर्मा – (क) Higher Secondary - St. Xaviers School, Raj Hiwasharf, Delhi
   (ख) बी काम (आ.) – श्री राम कालेज, दिल्ली

ओ३म्

आर्यसमाज के संस्थापक सदस्य स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा

पिता श्री चरण में नम्र मेरा है नमन
नम्रता, सेवा, सच्चाई, सरल, सात्विक थे विचार
बैठ प्रभु की गोद नित करते स्मरण

माँ ठंडी छाँव है
तो पिता घना दरख्त

मेरे पिताजी स्व. श्री युधिष्ठिर वर्मा जी का जन्म 25.01.1912 को नांगल राया में हुआ था। गाँव में उन्हें बिश्म्बर दयाल के नाम से जाना जाता था। उनकी मृत्यु 26.11.2000 में हुई थी।

उन्होंने रामजस हाई स्कूल नं. 2, आनन्द पर्वत (काला पहाड़) से सन् 1928 में हाई स्कूल की परीक्षा पास की। उसके पश्चात् उन्होंने पंजाब के शिक्षा विभाग से Advanced Clerical Exam session-1929-30 में प्रथम श्रेणी में shorthand में distinction के साथ पास किया। यहाँ यह बताना उचित होगा उस समय आने जाने के साधनों का अभाव था बस, रिक्शा आदि नहीं थे, बच्चे नांगल से पैदल आनन्द पर्वत तक (पढ़ने के लिए) जाते थे।

पिताजी ने दिल्ली में ही नौकरी की। दिल्ली के Distt. Magistrate / Dy. Commissioner के निजी सचिव के तौर पर कार्यरत रहे। मुझे La Belle/डा. महेन्द्र सिंह रंधावा के नाम याद आते हैं। डा. रंधावा 1947 में भारत विभाजन के समय दिल्ली में ही कार्यरत थे। हम देवनगर में दो मंजिले कवाटर न. 31 में रहते थे जो कोने का नीचे का मकान था, इनके सामने निजी मकान थे। मुझे वह दिन याद आते हैं जब रात को हर–हर महादेव के नारे लगाते हुए बच्चे और स्त्रियाँ घरों की छतों पर बैठे रहते थे। कैसे भूल सकते हैं पिताजी का रात–रात भर ड्यूटी पर रहना और हम सबके लिए एक डरा हुआ माहौल। चीफ कमिश्नर A.D. Pandit, श्री A.N. Jha, श्री धर्मवीर, श्री विश्वनाथ आदि के साथ पिताजी ने निजी सचिव के तौर पर कार्य किया।

Metropolitian Council के Ex-Councellor श्री सरसुनिया के साथ भी कार्य किया और राजपत्रित पद से 25.1.1973 को सेवा से निवृत्त हुए।

रिटायरमेन्ट से पहले भी और बाद में भी उनकी दिनचर्या बहुत व्यस्त थी। स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और सैर उनकी दिनचर्या के अभिन्न अंग बन गए थे। शायद ही कोई ऐसा कार्यक्रम होता आर्यसमाज का जहाँ वह पैदल न पहुँचते। कितनी भी दूर जाना हो पैदल चलना उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

आर्यसमाज नांगल राया की स्थापना में पिताजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। न खाने की चिन्ता थी। माताजी बताती थी–छोटे भाई देवदत्त के साथ हर समय चन्दा इकट्ठा करने निकल जाते थे। जो समाज के लिए जमीन खरीदी गई उसमें दोनों भाईयों के हस्ताक्षर इस बात की गवाही देते हैं। उस समय उनकी आयु केवल 27 वर्ष की थी। श्री छैलू राम से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया। पहले रविवार का सत्संग हमारे घर पर ही होता था जिसमें दोनों भाई नियमित रूप से उपस्थित होते थे। श्री छैलू राम और श्री बिशनस्वरुप वर्मा आदि भी सत्संग में आते थे। उस समय यज्ञ की पुस्तकें भी उर्दू भाषा में होती थी।

अल्पायु में ही संसारिक उत्तरदायित्वों को बहुत अच्छे से निभाया क्योंकि दादाजी स्व. हरदेव सिंह जी का देहान्त 40 वर्ष की आयु में हो गया था जब पिताजी केवल 19 वर्ष के थे।

सभी को अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। शिक्षा के सम्बन्ध में वह बहुत ही जागरूक थे। इनके 4 पुत्र और 3 पुत्रियाँ है:–

1. श्रीमति शकुन्तला प्रभाकर
2. डा. जयदेव वर्मा – B.V.Sc. & A.H. N.D.P.V.M. (PG)
3. स्व० वेद प्रकाश वर्मा – Arch from Roorkee A.I.I.A.
4. श्रीमति प्रेम लता कपूर – M.A., D.P.E.
5. स्व. श्री जय प्रकाश – B.A. Registrar D.H.B.
6. श्रीमति कमलेश – B.A., B.Ed.
7. Maj Gen. Anil Verma B.Com. (Hon.) S.R.C.C.

इसके अतिरिक्त वह सबकी सहायता के लिए तैयार रहते थे। श्री रनबीर सिंह तोमर नारायणा वासी ने हमारे घर से Higher Secondary की ग्यारहवीं कक्षा की तैयारी हमारे यहां से की। वह रामजस S.S. No.2 में पढ़ते थे।

श्री मांगेराम हमारे मामा जी के लड़के श्री देवदत्त वर्मा जी के पुत्र भी कुछ समय तिमारपुर में हमारे यहां रहे और पढ़ाई की। वह किसी को भी शिक्षा से वंचित नहीं रहने देना चाहते थे। विभिन्न गुरुकुलों, अनाथ आश्रम में दान देते थे। ईश्वर द्वारा बनाई मनुष्य जाति को मानते थे। पिताजी उदार विचारों के थे।

अपने पुत्र, पुत्रियों का विवाह अपनी जाति एवं अंतरजातीय विवाह करने में जरा भी नहीं हिचकिचाते थे। आज भी लोग अंतरजातीय विवाह करते बहुत अधिक सोचते हैं। यह आर्यसमाज के विचारों को कार्यान्वित करने का साहस ही था जो उनकी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं दर्शाया। बिना दहेज के और बिना किसी प्रदर्शन के अपनी संतानों के विवाह करके बहुओं को बेटियों जैसा सम्मान दिया।

मेरे पिताजी और आर्यसमाज

मुझे यह तो ज्ञान नहीं कि उन्हें आर्यसमाज से लगाव का प्रेरणा स्त्रोत क्या था किन्तु जैसा कि आर्यसमाज की जमीन खरीद की रसीद से विदित होता है कि वह जवानी से ही आर्यसमाज से जुड़ गए थे।

आर्यसमाज नांगल राया में बालिका विद्यालय, श्री सुरेन्द्र सिंह रंधावा सुपुत्र डा. महेन्द्र सिंह रंधावा के नाम से library आरंभ की। आर्यसमाज नांगल राया के विस्तार में उनका बहुत ही बड़ा योगदान था।

आर्यसमाज से लगाव के कारण ही तिमारपुर में हमारे क्वाटर पर ही साप्ताहिक एवं विशेष आयोजन होते थे। विशेष वेदों का यज्ञ स्कूल की छुट्टियों में एक 2 सप्ताह का कार्यक्रम हमारे यहाँ हुआ करता था। स्वामी आनन्द भिक्षु, केवलानन्द आदि ब्रह्मा हुआ करते थे।

पूजनीय माता जी, पिता जी ने मथुरा में आर्यसमाज शताब्दि उत्सव में भी भाग लिया था। उनका कहना था कि आर्यसमाजी पहचान इन 3 कार्यों से होती

है संध्या, स्वाध्याय, सैर जिस पर उनका पूरा जीवन आधारित था। जिसके फलस्वरूप उन्होंने नियमित और दीर्घ जीवन जिया और हमारे प्रेरणा स्त्रोत बने।

मेरे पूज्य पिताजी स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा जी सरल स्वभाव स्पष्ट भाषी थे। उनमें सेवा भावना, आर्य समाज के प्रति अटूट आस्था थी। बिना पद की लालसा के आर्य समाज की गतिविधियों में विशेष योगदान करते थे। अनुशासन प्रिय थे। व्यसनों से कोसों दूर रहते थे। कभी कोई चलचित्र नहीं देखते थे। इस सम्बन्ध में मुझे एक संस्मरण याद आ रहा है। जब मेरी आयु 12–13 वर्ष की थी आसफ अली मार्ग पर डिलाइट सिनेमा हाल में देवानन्द और सुरैय्या की फिल्म लगी थी। मै भी पिता जी के साथ गया था। जैसे ही फिल्म शुरु हुई कुछ दृश्य अश्लील लगे पिताजी ने कहा चलो घर फिल्म नहीं देखनी और जिन्दगी में कभी भी चलचित्र नहीं देखा और हमें भी मना करते थे।

धूप गम की हम तक न पहुँचे कभी
साया बनके सामने खड़े होते पिता
जीवन में आती है दो राहें कभी
सही राह का इशारा कर देते हैं पिता

– जयदेव वर्मा
प्रधान

स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा

पूर्वजों की भांति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो

कोटि – कोटि नमन उन अलौकिक दिव्य आत्माओं को जिन्होंने अपनी शक्ति, सामर्थ्य से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए आर्यसमाज नांगल राया की स्थापना की।

परमपिता परमेश्वर उनकी संतानों को शक्ति एवं सामर्थ्य दें कि वह अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों द्वारा उनकी धरोहर को सुरक्षित रख सकें।

देवी रूप माता जी श्रीमती हीमती देवी एवं देव रूप पिता जी श्री युधिष्ठिर (बिशम्बर) जी के पूर्वजन्मों के प्रबल संस्कार होने के कारण वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार – प्रसार की ऐसी लगन लगी कि कार्य–व्यवहार के साथ–साथ यज्ञ, तप, ध्यान, साधना जीवन का अभिन्न अंग बन गया। अपने जीवन में अनेक बार चारों वेदों के यज्ञ किए। उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया। कथनी–करनी में कभी अन्तर नहीं किया। सरल व्यक्तित्व के धनी, सादा जीवन उच्च विचार रखने वाले श्री युधिष्ठर वर्मा कृत्रिमता से सदा दूर रहते थे। आर्य सिद्धान्तों में उनकी अपार श्रद्धा थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित पंच महायज्ञों को उन्होंने जीवन में विशेष स्थान दिया। स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, दान, ध्यान उनके जीवन के अभिन्न अंग थे। वर्षों तक घर में पारिवारिक, साप्ताहिक एवं स्त्री समाज के सत्संग कराकर सबको वैदिक विचारधारा के प्रचार

एवं प्रसार की प्रेरणा देते रहे। ' सर्वे भवन्तु सुखिनः ' की भावना को लिए उन्होंने सब कार्य धर्मानुसार एवं सत्य और असत्य को विचार करके किए। किशोर और तरुण बच्चों में धर्म, देश भक्ति, श्रद्धा, सेवा, दान के बीज बोने के लिए भिन्न–भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराते थे। मुझे आज भी बचपन की याद है जब लोहड़ी, संक्रान्ति के पर्वों पर हम सब बच्चे 'यज्ञ' के पश्चात मंत्रोच्चारण प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। पुरस्कार पाते थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' की परीक्षा देते थे। आर्यसमाज के सभी पर्वों एवं उत्सवों में सपरिवार सम्मिलित होते थे। अपने जीवन काल में जहाँ–जहाँ रहे 'आर्य समाज' की स्थापना कराई और समाजों को बनाने में तन–मन–धन से सेवा कार्य में जुटे रहे। अल्पायु में ही पिता के देहान्त के पश्चात परिवार एवं समाज की जिम्मेदारियों को निभाया मानसिक रूप से सबल एवं स्वस्थ रहकर प्रत्येक दुख को सहन किया और हमारे प्रेरणा स्त्रोत बने। उनके जीवन के अनेक संस्मरणों को शब्दों का रूप देना अत्यन्त कठिन लगता है।

माता जी हीमती देवी एवं पिता श्री युधिष्ठिर के धार्मिक विचारों का प्रभाव उनकी संतान पर पूर्णरूप से है। ज्येष्ठ पुत्र डा० जयदेव वर्मा अपनी शक्ति, सामर्थ्य, तन, मन, धन से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में भरपूर सहयोग कर रहे हैं। ईश्वर की कृपा से उनकी पुत्री कमलेश को भी 'आर्यसमाज' राजौरी गार्डन के विद्यालय में वैदिक सिद्धान्तों के प्रसार हेतु 24 वर्ष अध्यापन कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

ईश्वर उन सभी 'आर्य समाज' के संस्थापकों की भावी पीढ़ी को शक्ति तथा सामर्थ्य दे कि वे अपने पूर्वजों की भांति 'आर्य समाज' नांगल राया रूपी वृक्ष को अपनी लगन, श्रद्धा से सींचते रहे। वृक्ष इतना विशाल हो कि समस्त विश्व में इसके कार्यों की सराहना हो।

— कमलेश
सुपुत्री स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा

पंचायतन पूजा

मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव ।।7।।
तैत्तिरीयोपनिषद्

अर्थ — प्रथम माता मूर्तिमती पूजनीय देवता, अर्थात सन्तानों की तन मन धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता सत्कर्त्तव्य देवता। उसकी भी माता के समान सेवा करनी। तीसरा आचार्य जो विद्या को देने वाला है उसकी तन मन धन से सेवा करनी। चौथा अतिथि जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला जगत में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करें। पाँचवां स्त्री के लिये पति और पुरूष के लिये स्वपत्नी पूजनीय है।

ये पाँच मूर्तिमान देव जिनके संग से मनुष्यदेह की उत्पत्ति–पालन–सत्यशिक्षा–विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियाँ हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्त्ति को पूजते हैं वे अतीव वेदविरोधी हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११)

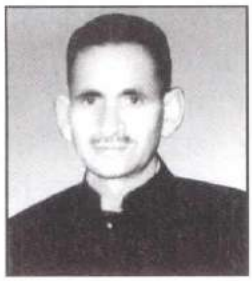

स्व० श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार

श्री देवदत्त वर्मा का जन्म पुरानी नांगल से उजड़कर नये–नये बसे नांगलराय गाँव में 24 दिसम्बर 1914 को हुआ। आप तीस हज़ारी न्यायालय में तहसीलदार के पद पर कार्यरत थे। आर्यसमाज नांगल राय की स्थापना के बाद बने भवन हेतु आपने अपने बड़े भाई स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा के साथ मिलकर 1500 रूपये की राशि एकत्र की थी। आप इस आर्यसमाज के कई बार प्रधान पद पर निर्वाचित हुए। आर्यसमाज का भवन मिडल स्कूल चलाने के लिये दिल्ली के शिक्षा विभाग को अस्थायी रूप से दिया हुआ था और आर्यसमाज के यज्ञ और साप्ताहिक सत्संग पूर्व की ओर बनी टीन में चलते थे। अतः वर्तमान यज्ञशाला का निर्माण 1959 में तत्कालीन प्रधान श्री देवदत्त तहसीलदार के मार्गदर्शन में हुआ। यज्ञशाला के नीचे कमरे बनवाए गए जिसमें महात्मा/उपदेशक आदि ध्यान लगा सकें। आप वैदिक सिद्धान्त के अडिग सिपाही और धुन के धनी थे। आर्यसमाज में आनेवाले अतिथि विद्वानों और सन्यासियों का भोजन आपके घर अवश्य होता था।

एक बार एक सन्यासी समाज में पधारे और उनका शाम का भोजन आपके घर होना निश्चित हुआ। दोपहर के समय उन्होंने बताया कि मैं भोजन उनके घर ही करता हूँ जिनके घर पर गाय होती है और आपके घर पर गाय नहीं है अतः आपके घर भोजन नहीं करूँगा। तहसीलदार साहब उसी दिन शाम से पहले गाय खरीदकर लाये और सन्यासी को शाम को भोजन कराया। उस दिन से निरन्तर आपके घर में गाय रही। 25.12.1976 को स्वामी श्रद्धांनद बलिदान दिवस के अवसर पर हर वर्ष की भांति शोभा यात्रा में भाग लिया। 28.12.1976 को किसी कार्य हेतु तीस हजारी न्यायालय गए थे। वहाँ उन्हे सीने में दर्द हुआ वह मोरी गेट डाक्टर के पास गए। उन्होंने उन्हें इर्विन (अब जय प्रकाश नारायण) हस्पताल जाने को कहा। वह स्वयं अकेले वहाँ गये किन्तु वहाँ भी कोई देख भाल नहीं हुई। वह तुरन्त टैक्सी से एम्स गए और लगता है वहाँ भी उन्हें उचित चिकित्सा नहीं मिली। वहां से भी टैक्सी की और चालक को घर का पता लिख कर दे दिया यदि कोई अनहोनी हो तो इन्हें वहाँ पहुचाँ दे। घर तो वह पहुंचे किन्तु घर पर ही उनके प्राण पखेरू उड़ गए। इससे उनके साहस और आत्म विश्वास का परिचय अवश्य होता है। भारत की राजधानी दिल्ली के नामी चिकित्सालयों की बदहाली और कुव्यवस्था पर गहरा खेद और रोष भी आता है। 28 दिसम्बर 1976 को उनके निधन के बाद भी उनके एक पुत्र श्री रमेश कुमार तँवर ने गाय पालन की परम्परा को निभाया और अभी भी श्री रमेश कुमार तँवर गाय के दूध और घी का ही घर में प्रयोग करते हैं।

– भगवानदास

संस्कार धुरन्धर

स्व० श्री हरकिशन सिंह शास्त्री

श्री हरकिशन सिंह शास्त्री इस आर्यसमाज के एक ऐसे अनमोल रत्न थे जिन्होंने अपनी 18 वर्ष की आयु (सन् 1942) से यज्ञ और संस्कार कराने प्रारम्भ किये और लगभग 53 वर्ष तक (वर्ष 1995) निरन्तर आस–पास के क्षेत्रों में कराते रहे। आपकी सबसे बड़ी विशेषता तो यह थी कि यज्ञ की दक्षिणा कभी निर्धारित नहीं की। जितनी भी दक्षिणा मिलती थी उसे आर्यसमाज नांगलराय को ही समर्पित किया करते थे। आपने अजमेर से (जहाँ उनके पिताजी स्व० बाबू रूपचन्द जी रेलवे मेल सर्विस में सर्विस करते हुए निवास करते थे) दसवीं प्रथम श्रेणी में पास की और वहीं से पिताजी की किताबों में से संस्कार विधि का स्वाध्याय किया था। सन् 1942 में ही एक बारात तेड़ा गाँव (जिला बागपत) से नांगल में सतरंडों के मोहल्ले में श्री धनश्याम सिंह के घर में आयी थी जिसमें इन पंक्तियों का लेखक भी (5 वर्ष की आयु में) आया था। पंडितजी किसी बात से अप्रसन्न होकर चले गये और संस्कार कराने से मना कर दिया । ऐसे संकट के समय में लगभग रात्रि के 12.00 बजे थे। संस्कार कराने वाला अन्य कोई पंडित गाँव में नहीं था। इस 18 वर्षीय बालक हरकिशन सिंह ने संस्कार कराने की हामी भर दी और संस्कार विधिपूर्वक सम्पन्न भी कराया। इस संस्कार से उनकी बड़ी सराहना हुई और संस्कारकर्त्ता के रूप में उन्हें नयी पहचान मिली।

आप इतने स्वाध्यायशील थे कि इनकी मेजपर पुस्तकों का अम्बार लगा रहता था और अस्वस्थ होने की दशा में भी निरन्तर स्वाध्याय करते रहते थे। सन् 1945 से लेकर सन् 1995 तक के 50 वर्ष की अवधि में लगातार समाज के प्रधान, मंत्री या कोषाध्यक्ष के पद पर बने रहे। इनमें भी लगभग तीस बार मन्त्री का पद सम्भाला। इस कारण लोग आपको "मन्त्री जी" के नाम से ही सम्बोधित करते थे। आर्यसमाज में आने वाले अतिथियों व विद्वानों का भोजन आपके घर अवश्य बनता था। घर में सदैव गाय होती थी। आप अपने समय का अधिकांश भाग आर्यसमाज के कामों में लगाते थे। आप विनम्र, शान्त, मृदुभाषी, सहयोगी, सेवाभावी वक्ता व स्वदेशी वेशभूषा से विभूषित व्यक्ति थे। हरकिशन जी के नाम से ही इस आर्यसमाज को दिल्ली की समाजों में प्रमुखतः जाना जाता था। आप सफाई पसन्द व अच्छे व्यवस्थापक भी थे। आप का निधन 6 फरवरी 1996 को हो गया।•

– भगवान दास

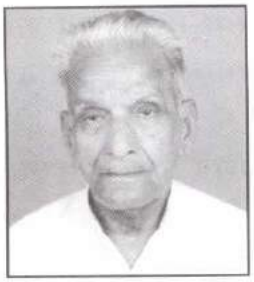

स्व० श्री सूरजभान गुप्ता
(सुपुत्र स्व. श्री हरनारायण)

जन्मतिथि : **3.10.1924**
निधन : **11.11.2002**
जन्मस्थान : गाँव गिलोट, जिला अलवर (राज.)
शिक्षा : मैट्रिक प्रभाकर
स्थाई पता : WZ - 1661, नांगल राया, दिल्ली आगमन – **1946**
व्यवसाय : सेवा C.O.D., **46** से **82** तक **(31.10.82)**
कार्यक्षेत्र : C.O.D. सीनीयर स्टोर कीपर

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम: श्रीमति भगवन्ती देवी
पुत्र : रामकुमार, रामकिशन, देवदत्त (पप्पी), सुरेन्द्र (पप्पू)
पुत्री : सावित्री देवी

विशेष उपलब्धियाँ :
आर्यसमाज में प्रवेश **1946**, में हुआ

प्रधान : श्री सूरजभान आर्यसमाज के विभिन्न पदों पर रहे। कई बार आर्यसमाज के प्रधान भी रहे। श्री हरकिशन सिंह का जब दो वर्ष के लिए आगरा में स्थानान्तरण हुआ तो समाज में यज्ञादि का संचालन भी आप करते रहे।

स्व० सूबेदार चुन्नी लाल वाही

जन्मस्थान : Lahore (Now in Pakistan)
शिक्षा : Graduation
स्थाई पता : WZ-262, Nangal Raya, New Delhi- 110046
व्यवसाय : He was Retired Army Officer

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम: Smt. Vidya Rani Wahi
पुत्र : Anand Wahi

विशेष उपलब्धियाँ :
Despite having no knowledge of hindi or Sanskrit, he was a stanch believer of Arya Samaj and its Principal.

Tried to associate Arya Samaj with social cause like education.

He educated from Govt. College Lahore, most reputed college before partition joined royal indian Army. He fought with British Troops in Second world war

Arya Samaj Nagal Raya made available its premicise for running the school. In the photograph, he is seen with director of education, on the opening of new school on the alternate land provided by the Village

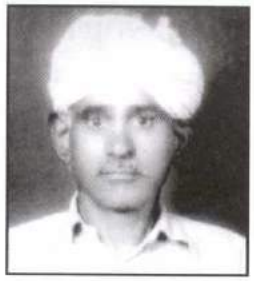

स्व० श्री तोखराम

जन्मतिथि : 01.12.1917
निधन : 14.09.1992
जन्मस्थान : झाड़सा, जिला : गुड़गाँव (हरियाणा)
शिक्षा : घर पर अभ्यास किया, अपनी डायरी लिख लेते थे
स्थाई पता : WZ - 346–डी ए नांगलराया, नई दिल्ली
व्यवसाय : नौकरी (सी. ओ. डी.) कार्यक्षेत्र : पार्ट टाईम में भवन निर्माण का कार्य

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमति भगवानी,
पुत्र : छ
पुत्रियाँ : तीन

विशेष उपलब्धियाँ :
यज्ञशाला निर्माण में श्रमदान, व्यायाम करना और दूसरो को कुश्ती के दाव सिखाना।

प्रधान : आप कई वर्ष तक आर्यसमाज के प्रधान भी रहे।

दूरभाष : 28112079

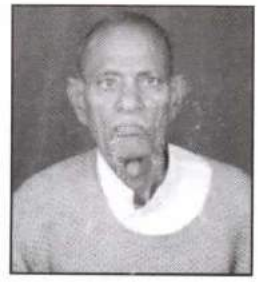

स्व० श्री गुरु दयाल

जन्मतिथि : 01–05–1931
जन्मस्थान : राजस्थान
स्थाई पता : WZ-1389A नांगलराया, नई दिल्ली
व्यवसाय : सरकारी नौकरी
कार्यक्षेत्र : सी. ओ. डी. दिल्ली

परिवार परिचयः
पत्नी का नामः स्व. सुरजो
पुत्र : तीन
पुत्रियाँ : दो

स्व० श्रीमती सुरजो

जन्मतिथि : 07–07–1940
जन्मस्थान : राजस्थान
स्थाई पता : WZ-1389A, नांगलराया, नई दिल्ली
व्यवसाय : गृहिणी
परिवार परिचय :
पति का नाम : स्व. गुरु दयाल
पुत्र : तीन
पुत्रियाँ : दो

मेरे पिता

स्व० श्री बाबू रूपचन्द जी

मेरे पिताजी स्व० श्री रूपचन्द्र जी का जन्म सन् 1900 में तथा देहावसान 2.10.92 को हुआ। आठवीं कक्षा तक शिक्षा पाई तथा 18 वर्ष की आयु में डाक विभाग में सर्विस की। 60 वर्ष की आयु में अवकाश प्राप्त किया। सारा जीवन राजस्थान में इसी सर्विस में बिताया। 3 दिन अजमेर रहते थे और 2 दिन दिल्ली रहते थे। इन दो दिन में पहले से ही मिस्त्री को बता जाते थे कि मेरे आने पर क्या काम करना हैं। इस तरह से सेवाकाल तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात समाज में कोई न कोई निर्माण का काम करते रहते थे। समाज मे तीन दुकानें, रहने के लिए किराए के मकान तथा सत्संग भवन बनवाया। इस तरह से समाज की आर्थिक स्थिति सुधारने में काफी काम किया। समाज के मेन गेट पर जो लोहे का गेट लगा हुआ है वह भी उन्होंने अपने पैसे से बनवाया था और उनकी इसपर नेम प्लेट भी लगी हुई है। इस तरह समाज के उन्नति के कार्यों में अपना संपूर्ण जीवन लगाया। आज कल जो यज्ञशाला बनी हुई है उसका निर्माण भी स्व० श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार के प्रधानत्व काल में उन्हीं के द्वारा स्व० तोखराम मिस्त्री के द्वारा करवाया तथा इसका लाल पत्थर भी जोधपुर से मंगवाया था।

इसी तरह मेरे बड़े भाई श्री हरीकिशन सिंह ने भी अपने सेवाकाल तथा सेवा निवृत्ति के बाद भी अपना जीवन समाज कल्याण के कार्यों में लगाया। दैनिक व साप्ताहिक हवन व वार्षिक अधिवेशन भी कराते थे। समाज में एक दो शादी भी करवाई। अपनी दक्षिणा भी समाज को दे देते थे। समाज की आर्थिक स्थिति में काफी योगदान किया। फरवरी 1996 में वे स्वर्गवासी हुए। गांव के लोग तो यहाँ तक कहने लगे थे कि समाज तो श्री रूपचन्द के परिवार का समाज है।

— राम किशन सिंह

ऋषि दयानन्दकृत ग्रंथ

1. आर्याभिविनय (सं० 1932)
2. सत्यार्थप्रकाश (सं० 1932–39)
3. काशी शास्त्रार्थ (सं० 1926 वि०)
4. सत्यधर्म विचार (सं० 1937 वि०)
5. पंचमहायज्ञविधि (सं० 1934 वि०)
6. आर्योद्देश्यरत्नमाला (सं० 1934 वि०)
7. संस्कारविधि (सं० 1932 वि०)
8. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (सं० 1933 वि०)
9. ऋग्वेदभाष्य (सं० 1934–40 वि०)
10. यजुर्वेदभाष्य (सं० 1934–39 वि०)

मेरे पिता

स्वः श्री कन्हैया लाल सांवरे

आपका जन्म 1920, मध्य प्रदेश के ग्राम दोबड़ा में हुआ। आपका जीवन बचपन से ही संघर्षपूर्ण रहा। बचपन में लगभग पांच वर्ष की आयु में ही माता–पिता का साया सिर से उठ चुका था, उस समय एक ऐसी महामारी फैली थी जिसमें गाँव के गाँव खाली हो चुके थे यानि 4 व्यक्तियों का संस्कार करके आये तो आठ वापसी में मरे मिलते थे। इनके बड़े भाई ने भी घर की तथा इनकी ओर ध्यान नहीं दिया। घर में कृषि कार्य था और गोपालन का कार्य भी था, लगभग 40, 50 गाय और बछड़े थे। घी, दूध की कमी घर में नहीं थी। लेकिन भाग्य को कुछ और ही मंजूर था, अतः आप घर छोड़कर शहर की ओर निकल पड़े। किसी ने अनाथालय मे भर्ती करा दिया और कुछ जीवन पढाई के साथ–साथ वहीं बिताया और फिर अजमेर राजस्थान से आपने गुरुकुल में विद्या ग्रहण की। उसके बाद आपने विभिन्न शहरों में व्यवसाय किया। देहरादून, हरिद्वार और भी कई शहर थे। आपने लाहौर में भी एक दुकान ली थी। उसके बाद आपने आर्मी में मेडिकल कोर ग्रुप नर्सिंग स्टाफ में नौकरी की और द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया। फौज में नौकरी के दौरान ही आपने सिंगापुर तक पानी के जहाज द्वारा यात्रा की। वहाँ से राजस्थान आये जो मध्य प्रदेश की सीमा से सटा हुआ है। पार्वती नदी के उस ओर मध्य प्रदेश तथा इस ओर राजस्थान है। आपको कुछ–कुछ याद था सो कोटा जिला के छवड़ा गुगोर में आये और जानकारी जुटाई तो वहाँ कुछ बिरादरी में जानकारी मिली। उन्होने बताया कि आपके मौसेरे भाई यहाँ से लगभग 30 कि.मी. दूरी पर तहसील छीपा वडौद गाँव देवरी जोध में रहते हैं। उन्हे साथ लेकर गाँव गये तो उनकी हालत काफी दयनीय थी सो परिचय करके आपने उनकी आर्थिक सहायता करते हुये उन्हें उठाया। आर्थिक अभाव में खेत गिरवी रखे हुये छुड़ाये और भतीजों के विवाह करने के लिये सगाई आदि कराई गई। उसके पश्चात 1947 में भारत पाक का बंटवारा हुआ, स्वतंत्रता संग्राम में भी आपने भाग लिया और युद्ध के पश्चात आपको मिलिट्री से रिलीज कर दिया। 1948 में आपने विवाह किया। विवाह के बाद फिर आपने शहरों की ओर कूच किया, परन्तु सफलता हाथ नहीं लगी। काम धन्धा नहीं चला, अतः फिर गाँव की ओर आये और इनके मौसेरे भाई के साथ रहते आपने लगभग काफी मेहनत से 40 वीघा भूमि जो ऊबड़–खाबड़ जंगल की तरह थी उसे कवर किया और कृषि कार्य आरंभ किया पर तीन वर्षो तक लगातार कृषि में हानि हुई। कभी अत्याधिक वर्षा, कभी सूखा आदि फसल नष्ट हो जाती। शायद कुदरत को यहाँ भी कुछ और मंजूर था सो आप गाड़ी बैल 40 बीघा जमीन ऐसे ही छोड़ आये और बंबई शहर की ओर रुख किया। फिर सिविल

आर्मी के अन्तर्गत डिफेंस में पूना और बंबई में नौकरी की। इस दौरान आपने पूना में उदासीन मत के एक तपस्वी मुनि रामटेकड़ी में गुरु धारण किया और तबादला होकर दिल्ली आ गये और COD दिल्ली कैंट में आप कार्य करते रहे। इस दौरान आपने हमारे मामा जी को भी आर्थिक सहायता की क्योंकि हमारे नाना जी ने भी उनकी आठवीं की पढ़ाई के बाद सहायता के लिये इंकार कर दिया था। फिर हमारे पिताजी ने हौसला बढाया और पढ़ाई जारी रखने को कहा और आर्थिक सहायता आदि भी करते रहे। मानवता, त्याग दूसरों की सहायता करना यह सब आपने सीखा वैदिक संस्कारों से और वैदिक संस्कार मिले गुरुकुल द्वारा प्राप्त शिक्षा से। आप आर्य समाज नांगलराया से जुड़े और प्रताप नगर तिहाड़ जेल के सामने से हर रविवार साप्ताहिक सत्संग में मुझे लेकर आते। फिर लाजवन्ती गार्डन 1962 में आपने 100 गज जमीन लेकर घर बनाया और आपकी लगन धार्मिक और सामाजिक कार्यो में काफी थी। आर्य भजनोपदेशक के नाम से जाने जाते रहे विभिन्न समाजो में पालम, हरिनगर आदि में आपका कार्यक्रम होता था। दिनचर्या भी आपकी अच्छी थी प्रातः 4. 30 बजे उठना, एक माला परमात्मा के नाम की बिना नागा किये और शौच स्नान से निवृत्त होकर फिर ईश्वर का ध्यान करना सी.ओ.डी. में दोपहर में लंच समय कथा वाचन और फिर सांय कार्य से आकर संध्या और भजन आदि में लीन रहना। आपकी मृत्यु 18 मई 1981 बुद्ध पूर्णिमा को प्रातः लगभग 8.00 बजे हुई ।

– ओम प्रकाश वर्मा (प्रेमी)

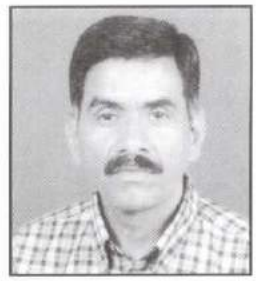

08.03.1948 – 03.03.2008

स्व० श्री जय प्रकाश वर्मा

जन्मतिथि : 08–03–1948
जन्मस्थान : करोल बाग, नई दिल्ली
मूल निवासी : नांगल राया, नई दिल्ली
शिक्षा : स्नातक दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री जय प्रकाश वर्मा जी ने बोर्ड ऑफ होम्योपैथिक सिस्टम ऑफ मेडिसन, दिल्ली में सेवा आरम्भ की और अन्त में रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने इस विभाग में 35 वर्षों तक सेवा की। कई खेल स्पर्धाओं में भाग लिया। वह दिल्ली स्टेट फुटबाल टीम के कप्तान थे। आर्य समाज परिवार में जन्मे आध्यात्मिक, सात्विक एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। योगाभ्यास एवं व्यायाम नियमित रूप से करते थे। वह प्राकृतिक सौंदर्य के प्रेमी थे। आपने देश के विभिन्न तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया। कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष करके अपने परिवार तथा दोनों लड़कों को अच्छी शिक्षा प्रदान कराई और उच्च पदाधिकारी बनाया। यह सब संस्कार उन्हें अपने पिता स्व० श्री युधिष्ठिर वर्मा एवं माता स्व० श्रीमति हीमती देवी से विरासत में प्राप्त हुए। उनका आकस्मिक देहांत पूरे परिवार के लिए सदमा है।

दयानन्द भक्त

स्व० श्री चोथू राम डुडेजा

आर्यसमाज नांगलराय के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर इसके पूर्व सदस्यों की सहभागिता एवं जीवन परिचय के सम्बन्ध में अतीत का इतिहास जुटाने के प्रयास में मान्य भगवानदास जी से मुझे पिताजी के जीवन परिचय की जानकारी भेजने का आग्रह उस समय प्राप्त हुआ जब हमारे परिवार का कोई जीवित सदस्य आर्यसमाज नांगलराय की सदस्यता सूची में नहीं पाया गया, बचपन से ही हमारे परिवार और मेरे प्रति आर्यसमाज के सभी सदस्यों का स्नेह रहा है अतः वे मेरे एवं परिवार के अन्य सदस्यों के सम्बन्ध में जानकारी रखते थे, विवाहोपरांत वर्तमान में मैं अपने परिवार और पति के साथ वीरेन्द्रनगर में रह रही हूँ अतः आर्यसमाज के आग्रह पर अपने दिवंगत पिता श्री चोथू राम जी के विषय में जानकारी उपलब्ध कराने में गौरव का अनुभव हो रहा है।

हमारा परिवार भारत के छः दशक पूर्व हुए विभाजन के इतिहास का साक्षी होने के साथ–साथ इसकी क्रूरता का शिकार भी बना था परन्तु समय बीतने के साथ ईश्वर की अपार कृपा से हमें स्वतंत्र भारत के नागरिक होने का गौरव प्राप्त हुआ। हमारे पिताजी श्री चोथूराम जी के दो भाई और एक बहन थी। सभी में अगाध स्नेह एवं भ्रातृभाव था। हमारे परिवार का अतीत वर्तमान पाकिस्तान के डेरा गाजीखां के दाज्जल गाँव में अत्यन्त निर्धनता में बीता क्योंकि हमारे पिताजी को अपने पूर्वजों से विरासत में कोई धन–सम्पदा प्राप्त नहीं हुई थी। उनके अपने परिवार में पाँच पुत्रियाँ तथा चार पुत्र थे तथा सीमित आय के कारण पूरे परिवार को अभाव का भागीदार बनना पड़ता था। सीमित आय और धनाभाव के उपरान्त भी उन्होंने कभी भी अपने परिवार के भरण–पोषण एवं शिक्षा–दीक्षा के साथ उच्च वैदिक संस्कार देने में कोई कसर नहीं रहने दी। भारत वर्ष में हमारा परिवार वर्ष 1953 तक हरियाणा प्रान्त के सोहना कस्बे में रहा परन्तु शीघ्र ही पिताजी के सैन्य सेवा के केन्द्रीय आयुध भंडार में सेवारत हो जाने के कारण दिल्ली के नांगलराय गाँव में हमारा स्थाई निवास बना तथा हमारे पिताजी जीवनपर्यंत इसी गाँव के निवासी व आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य बने रहे। यूँ तो विभाजन से पूर्व ही हमारे परिवार के सदस्य आर्यसमाज से जुड़ चुके थे परन्तु वहाँ हमें मुसलमानों के साथ साथ पौराणिक हिन्दुओं के कोप का भाजन बनना पड़ता था क्योंकि आर्यसमाज के मन्तव्यों और सिद्धांतो को जाने बिना पौराणिक लोग हमें नास्तिक मानकर हमारा बहिष्कार तक कर देते थे।

प्रातःकाल चार बजे जागकर बिस्तर छोड़ देना, ईश्वर भक्ति के गीत गाते हुए अपने नित्यकर्मों को करना वे कभी नहीं भूलते थे। उनके द्वारा नित्यप्रति गाये जाने वाले भजनों को परिवार के सभी सदस्यों ने कंठस्थ कर लिया था। दैनिक संध्या को उन्होंने अपने नित्यकर्म के रूप में इस प्रकार अपनाया हुआ था कि प्रातः एवं सायंकाल के भोजन करने से पूर्व संध्या

करने के अपने नित्यकर्म का जीवनपर्यंत निर्वहन किया। सायंकालीन संध्या के समय पिताजी के साथ परिवार के सभी सदस्यों के साथ–साथ पड़ोस में रहने वाले बच्चे भी हमारे खुले आँगन में पदमासन लगाकर बड़े ही श्रद्धाभाव से संध्यामन्त्रों का वाचन, भजन व आरती किया करते थे।

वे महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज में अपार निष्ठा रखते थे तथा वेद प्रतिपादित मर्यादाओं का पूर्णरूप से पालन करने में सदा उद्यत रहते थे। उनका सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के कार्यों के प्रति समर्पित रहा। आर्यसमाज द्वारा जब कभी भी स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस, बोधोत्सव, निर्वाणोत्सव अथवा स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान पर्व का आयोजन किया जाता तो वे इन अवसरों पर अपना वक्तत्व एवं श्रद्धांजलि अवश्य ही देते थे। वे आर्यसमाज नांगलराय के अनेक वर्षों तक प्रतिष्ठित कार्यकारिणी सदस्य रहे। उनकी कथनी और करनी में कभी अन्तर देखने को नहीं मिला। वे अत्यधिक धैर्यवान सादा प्रकृति वाले थे तथा मानव सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इन्हीं मानवीय गुणों के कारण सभी लोग अनके प्रति विश्वास एवं स्नेह का भाव रखते हुए भगतजी कहकर सम्बोधित करते थे। आर्य सन्यासी व वैदिक विद्वानों के सेवा–सत्कार के लिए सदैव उद्यत रहते थे। आर्यसमाज या घर पर इनके आगमन से श्रद्धानत होकर भोजन बनवाते जबकि हमारी माताजी श्रीमती प्रेमवती जो अत्यंत सरल स्वभाव की महिला थी को उन दिनों अंगीठी जलाकर भोजन पकाना पड़ता था। उस समय 53 वर्ष तक की आयु तक हमनें उन्हें रोगी अवस्था में बिस्तर पर लेटते नहीं देखा। किन्तु विधि के विधान और ईश्वर की निराली लीला ने 18 मई 1966 के दिन हमारे पूरे परिवार को उनकी छत्रछाया से वंचित कर दिया। हमारे भाई पहले से ही कड़ी मेहनत से अपनी कमाई के द्वारा पिताजी का भरपूर सहयोग करते थे तथा आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य में पूरी निष्ठा से पिताजी का हाथ बँटाते थे। उन्हें अब परिवार की देखभाल भी करनी पड़ी।

अपने अपने भविष्य और जीवन यापन के लिए हमारे परिवार के सदस्य नांगलराय को छोड़ अन्य स्थानों पर जा कर रहने लगे। जेसाकि मैंने उल्लेख किया, मैं अपने परिवार के साथ वीरेन्द्र नगर में रहती हूँ। मेरी बड़ी बहन श्रीमती लक्ष्मी देवी का अब देहान्त हो चुका है और उनका परिवार भी मेरे पड़ोस में ही रहता है, मेरे भाई यशपाल आर्य निकट ही शिव नगर में अपने परिवार सहित रहते हैं तथा हम सभी आर्यसमाज, बी ब्लाक, जनकपुरी के सदस्य हैं। सबसे बड़ी बहन श्रीमती कौशल्या तथा बड़े भाई श्री राजपाल जी कई दशकों से अपना निवास गुडगाँव में बना चुके हैं। हमारे परिवार के सभी सदस्य पूरी निष्ठा के साथ आर्यसमाज से जुड़े हुए हैं। श्री राजपाल जी तो अपने स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान व मंत्री रहे तथा आर्य केन्द्रीय सभा, गुडगाँव के भी दो वर्ष तक प्रधान रह चुके हैं।•

— श्रीमती प्रभा

ओ३म्

श्रद्धांजलि

स्व० चौ० मीर सिंह

1878 – 1963

स्व० श्री शिवनारायण सिंह

1904 – 1972

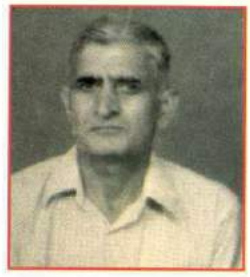

स्व० श्री हरीशचन्द्र

1920–1997

हम हैं आपके

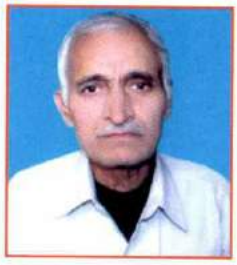

मा० सत्यपाल सिंह

राजपाल सिंह तँवर

पृतिपाल सिंह

With Best Compliments From :-

HARISH TUTORIALS

Class IX To XII B.Com. & C.A.

Sub. Maths, Physics, Chemistry, English, Accounts, Economics

Pol. Science, Social Science, Income Tax, Costing & Statistics

WZ-1095, Nangal Raya, New Delhi-110046

Phone : 9811239808

पावन स्मृति

श्री हरि सिंह वर्मा
(पूर्व अध्यापक)
31.01.1936 – 09.11.2011

सदैव सर्वत्र आपके गुणों की प्रशंसा सुनकर हम सभी गौरवान्वित होते रहे हैं। आपकी प्रथम पुण्य तिथि पर आपकी यादें ताजा कर हमारे आंसू एक बार फिर छलक आए हैं।

आपके आदर्शों पर चलने के संकल्प के साथ आपको भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रीमती वीरमती (पत्नी)
(हरिहर सर्विस स्टेशन–पैट्रौल पम्प)
ड़ीलर हिन्दुस्तान पैट्रोलियम, अ० मण्ड़ी
टटीरी, जिला बागपत (उ० प्र)

श्री वीरेन्द्र सिंह (पुत्र)
प्रवक्ता–वाणिज्य

श्रीमती शारदा देवी (पुत्रवधू)
अध्यापिका

राघव प्रताप (पौत्र)
बी.डी.एस. छात्र

प्रदीप तँवर (दामाद)
सोफ्टवेयर इंजीनियर

श्वेता सिंह (पोती)
एम.एस.सी. (बायोकैमिस्ट्री)

श्री प्रदीप कुमार (पुत्र)
प्रवक्ता – गणित

श्रीमती सविता (पुत्रवधू)
प्रवक्ता – अंग्रेजी

रूद्र प्रताप सिंह छात्र

विश्रुती (पोती)
बी.टेक. छात्रा

डब्ल्यू० जैड० 310–सी, नांगल राया, नई दिल्ली–110046

ओ३म्

श्रद्धांजलि

स्व० श्री रघुबीर सिंह

स्व० श्रीमती शान्ति देवी

स्व० श्री सतीश कुमार

हम हैं आपके

नरेन्द्र सिंह

योगेन्द्र सिंह

गौरव कुमार

शुभ कामनाओं सहित

सौजन्य

बद्रीवास बायोटेक (प्रा० लिमिटेड)

रूडकी (उत्तराखण्ड)

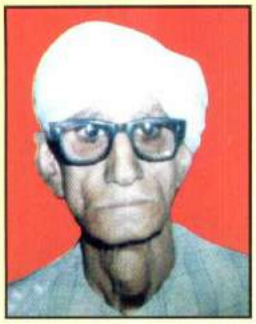

स्व० श्री खजान सिंह
1912—1999

स्व० श्रीमती दया वती
1926—2010

With Best Compliments From :-

CAPTAIN

Captain Industries

Mfrs. of Copper winding wire

Office :-

E-20, Naraina Vihar, New Delhi- 110028
Tel : 011-25895393

Works :-

Plot No. 40, Sector-5, SIDCUL, Haridwar, Uttarakhand.
Tel. : 01334-239436, 09319068889, Fax : 01334-239435
E-mail : captainindustries@yahoo.com

स्व० श्री शिव नरायण सिंह

जन्मतिथि : 1904

जन्म स्थान : नांगल रया

शिक्षा : दसवीं कक्षा

स्थाई पता : डब्ल्यू जैड – 1311, नांगल रया, नई दिल्ली–110046

व्यवसाय : लगभग 28 वर्ष अजमेर पुलिस में कार्यरत रहे एवं 6 वर्ष केन्द्रिय रिजर्व पुलिस बल से 1962 में रिटायर हुए । 16.01.1972 को स्वर्गवास हुआ।

पत्नी का नाम: स्व० श्रीमती बिरमी देवी

पुत्री : स्व० श्रीमती प्रेम वती

आर्य समाज के कई बार उप–प्रधान एवं उप–मंत्रि पद पर रहे। प्रभु भक्ती के भजन गाना एवं हारमोनियम बजाना उनकी रूचि थी।

दूरभाष : 9888905704

– राजपाल सिंह

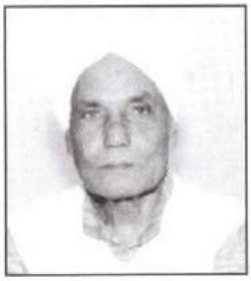

स्व० महाशय देवी सिंह आर्य

जन्मतिथि : Jan 1912
देहान्त : 24-08-2004
जन्मस्थान : ग्राम बादली, जिला झज्जर, हरियाणा
शिक्षा : निजी स्वाध्याय (ऋषि ग्रंथों का)
स्थाई पता : टी–25, पुरानी नांगल, दिल्ली छावनी – 10
व्यवसाय : व्यापार
कार्यक्षेत्र : आर्य सिद्धान्तों का प्रचार हरियाणा एवं दिल्ली में

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमती मोहर कौर
पुत्र : चार (सुरेश कुमार आर्य, डा. सुरेन्द्र कुमार आचार्य, वीरेन्द्र कुमार शास्त्री, उमेश कुमार आर्य)
पुत्रियाँ : दो (विमला देवी, राजवन्ती स्नातिका कन्या गुरुकुल हाथरस)

विशेष उपलब्धियाँ :

1. सन् 1964 तक गाँव के आर्य समाज के मन्त्री के रूप में प्रचार एवं युवकों की आर्य समाज में दीक्षा

2. गोरक्षा आन्दोलन एवं हिन्दी आन्दोलन में सक्रिय योगदान के रूप में जेल यात्रा

1964 से आर्य समाज नांगल राया के सम्मानित सदस्य एवं अधिकारी के रूप में सेवा

अभिरुचि :

1. विद्वान एवं आर्य सन्यासियों की सेवा सुश्रूषा।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा/दिल्ली से प्रचारकों को समय समय पर आमन्त्रित कर प्रचार कराना।
3. स्कूल न जा पाने वाले बच्चों को रात्रि में आर्यसमाज में बुलाकर पढ़ाना।
4. छात्रों को अपनी दुकान से बिना किसी लाभ के साधन उपलब्ध कराना।
5. परिवार में आर्य सिद्धान्तों के संचार हेतु अपने पुत्र पुत्रियों को गुरुकुल में पढ़ाना
6. अपने पुत्र पुत्रियों की सशर्त बिना दहेज शादियां करना तथा अन्यों को भी बालिका शिक्षा,बाल विवाह विरोध एवं दहेज विरोध के लिए प्रेरित करना।
7. दहेज के रूप में बस की छत पर छुपा कर रख दिए गए सामान को उतरवाकर सड़क पर ही छोड़ आना उनके जीवन में आदर्शों को साकार रूप में जीने का सुन्दर उदाहरण है।

दूरभाष : 011–45642879
मोबाईल : 9210882287

स्व० श्री साधु राम नारंग

जन्मतिथि : 01–01–1933
जन्मस्थान : पाकिस्तान, गाँव साहुवाला, जिला मुजफ्फर पुर
शिक्षा : बी ए, डी टी एल, एल एल बी
स्थाई पता : 1646/सी, नांगल राया, नई दिल्ली – 110046
व्यवसाय : सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी
परिवार परिचय :
पत्नी का नाम: सावित्री नारंग
पुत्र : तीन
पुत्री : एक

विशेष उपलब्धियाँ :

शौर्य चक्र
श्री साधु राम नारंग, सी ओ ग्रेड–।।। जी० ओ० – 8331

20, 21 जुलाई 1970 को गढ़वाल की पहाड़ियों में आई अभूतपूर्व बाढ़ से जान–माल की भारी क्षति हुई। अधिकतर पुल नष्ट हो जाने तथा सड़क के कई जगह से बिल्कुल टूट जाने के कारण मार्ग संचार बिल्कुल अस्त–व्यस्त हो गया था। मुख्य स्थान से तीव्र गति के साथ संचार व्यवस्था के पुनर्स्थापन के लिए आवश्यक था कि मालारी–सुमना क्षेत्र से उपलब्ध सभी साधनों को ऋषिकेश–जोशीमठ–बद्रीनाथ सैक्टर में लाया जाए। इस ध्येय की पूर्ति के लिए श्री साधु राम नारंग को यह जन काम सौंपा गया कि वे अपनी पायनीयर कम्पनी को मालारी–सुमना सैक्टर से हटाकर ऋषिकेश–जोशी–मठ–बद्रीनाथ सैक्टर में लगा दें। इस अधिकारी ने साधनों को वहाँ तक पहुँचाने का कार्य सांग्रामिक आधार पर आयोजित किया और अपने कठिन परिश्रम, कर्त्तव्य परायणता तथा नेतृत्व से अपने साथ काम करने वालों को प्रेरित किया, जो कमर में रस्सियां बांधे काम कर रहे थे और तूफान से उमड़ती हुई नदी में धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे और श्री नारंग हर मौके पर मार्ग दर्शन कर रहे थे। जब तक सब काम करने वाले नदी को पार करके सुरक्षित स्थान तक नहीं पहुंच गये तब तक वे वहीं डटे रहे। फिर उन्होंने इसी विधि से अपने साथियों को गहरी तंग घाटियों और मार्ग अवरोधों को पार कराया और एक सप्ताह से भी कम समय में अपने ध्येय की प्राप्ति में सफल हुये।

इस कार्यवाही में श्री साधु राम नारंग ने उच्च कोटि की वीरता का परिचय दिया।

दूरभाष : 9528522041
मोबाईल : 9560235504
दिनांक : 27–01–2012

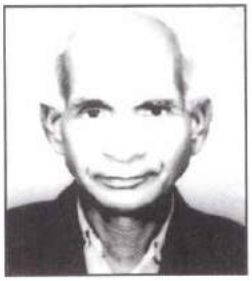

स्वः श्री पृथ्वीराज वर्मा

(सुपुत्र स्व. श्री हरदेव सिंह)

जन्मतिथि : 12.8.1918

निधन : 4.9.1989

जन्मस्थान : नई दिल्ली

शिक्षा : स्नातक बी.ए.

व्यवसाय : सरकारी नौकरी

पता : WZ-546/1, नांगलराया, नई दिल्ली

कार्यक्षेत्र : पंचायत ऑफिसर (सुपरिन्टेन्डेन्ट)

परिवार परिचय :–

पत्नी : श्रीमति शान्ति देवी

पुत्र : श्री प्रमोद

विशेष उपलब्धियाँ :–

अनेको धार्मिक स्थानों के निर्माण हेतु सहयोग। विनम्र सेवाभावी व सहयोगी। कई बार आर्यसमाज नांगलराया के प्रधान रहे।

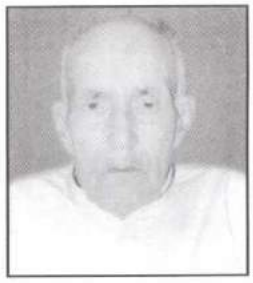

स्व० चौ० रामचन्द्र जी

आप इस समाज के वरिष्ठतम् सदस्य थे। आपका जन्म 18.9.1918 को नांगल राय गांव में हुआ। देहान्त 31.12.2012 को 93 वर्ष से अधिक आयु प्राप्त करने के बाद हुआ। आपने प्रथम श्रेणी में मेट्रिक की परीक्षा रामजस स्कूल से 1935 मे पास की। आपने अपनी सरकारी सेवा एम.बी.एस. में क्लर्क के रूप में की और 1976 में कार्यक्रम अधिकारी के पद से सेवा निवृत्त हुए। आप लाहौर मे भी कई वर्ष तक सेवा के दौरान रहे। आप एक ईमानदार, परिश्रमी व सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। धैर्य, साहस और पुरुषार्थ आप में कूट–कूट कर भरे थे। अनेक बार आर्यसमाज नांगलराया के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित रहे। केवल धोती धारण कर नियमित रूप से यज्ञ व सत्संग में आते थे।

स्व० श्री लेख राज

जन्मतिथि : 24.12.1916
मृत्यु : 24.04.1985
जन्म स्थान : पंजाब पाकिस्तान
व्यवसाय : सी.ओ.डी. दिल्ली कैन्ट –110010
पत्नी का नाम : श्रीमती भोली बाई

7.8.1940-27.6.1997

स्व० डॉ० भागमल शर्मा

आर्मी मेडिकल कोर में काम करते थे। समाजिक व धार्मिक कार्यो में बढ़चढ़ कर काम करते थे। आर्यसमाज के उत्साही कार्यकत्ता थे। कई बार अधिकारी भी रहे हैं।

धुन के धनी

स्व० मा० ईश्वर सिंह तँवर

मा० ईश्वर सिंह जी का जन्म 11 जनवरी 1934 में पिता स्व० श्री छतर सिंह और माता श्रीमती छोटी देवी के घर में हुआ। आपका शरीर सुन्दर सुडौल और रंग गोरा था। आपने 1953 में हाई स्कूल पास करने के बाद 1954 में अजमेर से बेसिक ट्रेनिंग प्राप्त की और 1955 में दिल्ली नगर निगम में अध्यापक के पद से अपनी सेवायें प्रारम्भ की । आप अच्छे शिक्षक के साथ अनुशासन प्रिय और अपने शैक्षिक कर्त्तव्य के प्रति सदैव सजग रहे। आपने अपना अधिकांश शिक्षक जीवन नरायणा स्कूल में बिताया। आप अपने मधुर स्वभाव और स्पष्टता के लिये प्रसिद्ध थे। नरायणा से ही आप 31.1.1994 को प्रधान अध्यापक के रूप में सेवा निवृत हुए और शेष सारा समय समाज सेवा और बिरादरी की प्रगति में लगाया। कई बार आप भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष श्री राजनाथ जैसे प्रतिष्ठित नेताओं से अपने कार्यों के लिये सराहे गये और सम्मानित हुए। आप सन् 1955 से ही आर्यसमाज नांगलराया के सदस्य थे और कई बार उप–प्रधान पद पर सुशोभित हुए और आर्यसमाज की प्रगति में अहम भूमिका अदा की। आप लगभग 1 वर्ष तक कैन्सर से पीड़ित रहे और अन्ततः 11.02.2012 को आपका निधन हो गया।•

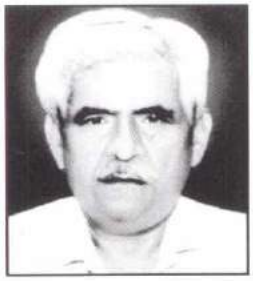

स्व० श्री विष्णु स्वरूप वर्मा

हमारे पिताजी स्व० श्री बिशन स्वरूप वर्मा का जन्म 10 मार्च 1923 को ग्राम नांगलराया में हुआ था। उनके माता–पिता यानि हमारे दादा–दादी जी का देहान्त उनके बाल्यकाल में ही हो गया था और उनकी परवरिश उनके बड़े भाई यानि हमारे ताऊजी श्री रामदास जी ने की थी।

आप बहुत ही प्रतिभाशाली थे और आपने स्नातक की उपाधि रामजस स्कूल न० 2 आनन्द पर्वत दिल्ली से प्राप्त की थी। उस समय संसाधन पर्याप्त न होने के कारण गाँव से स्कूल तक पैदल ही जाते आते थे।

बाल्यकाल से ही आप धार्मिक प्रवृत्ति से ओत–प्रोत थे और परमेश्वर में प्रगाढ़ आस्था रखते थे। नियमित रूप से यज्ञ करना उनकी दिनचर्या का एक अटूट हिस्सा था। नांगलराया आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष के पद पर रहते हुए आपने हर कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। आर्यसमाज नांगलराया में आप महामन्त्री के पद पर भी कार्यरत रहे।

आप केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में कार्यरत थे। सलाल हाईडल प्रोजेक्ट जो चिनाव दरिया कश्मीर में है, उनके संरक्षण में बना था और आप वहाँ पाँच साल तक डेपूटेशन पर रहे थे। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्यामो देवी है। आपके पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

आप अपनी कर्त्तव्य परायणता व निष्ठा से विद्वानों व अतिथियों का हर संभव सत्कार करते थे। विशेष कर जब भी आर्यसमाज में समारोह होता था। आपने अपने संस्कारों में अपने सभी पुत्र पुत्रियों को भी भलीभांति ढाला और वह आज भी आपके संस्कारों का पालन कर रहे हैं और करते रहेंगे। आपके जीवन में राग द्वेष व घृणा का कोई भी और कहीं भी स्थान नहीं था और सभी को मानवता से प्रेरित किया। आप अपने अन्तर्मन से भजन लिखते और गाते भी थे।

आप दिनांक 5 अप्रैल 1993 को अन्तिम गति को प्राप्त हुए और अपने पीछे अपने जीवन काल में अर्जित किए अपार संस्कारों की एक लम्बी कड़ी छोड़ गए जिसमें आज भी आपका पूरा परिवार पूर्ण आस्था रखता है और वचनबद्ध है कि आपके द्वारा विरासत में मिले इन संस्कारों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलाते रहेंगे।

दीपक वर्मा
डब्ल्यू० जैड० 347, नांगलराया, नई दिल्ली–110046
मे० : 9810246704, दूरभाष : 011–28113725

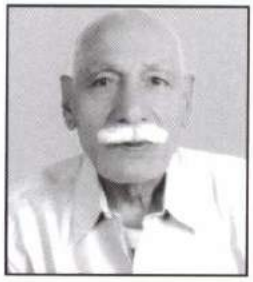

श्री जगमाल सिहं यादव

जन्मतिथि : 25–05–1925
जन्मस्थान : गाँव–कैथाला, जिला – बुलन्द शहर, यू. पी.
शिक्षा : हाई स्कूल, एल. डी. वी. इन्टर कॉलेज, अनूप शहर, यू. पी.
स्थाई पता : WZ-1391/32A ,नांगलराया, नई दिल्ली
व्यवसाय : सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट सर्विस (रिटायर्ड)
कार्यक्षेत्र : दिल्ली किशनगंज रेलवे ऑफिस और दिल्ली से बम्बई, वेस्टर्न रेलवे फारिन अकाउन्टस ऑफिस मे ऑफिस रिकार्ड और स्टेशन के ओरोजनती रिकार्ड, केश बुक आदि चैक कर उनमे आई कमियों का निपटारा करना

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : स्व. इमरती देवी
पुत्र : स्व. यशपाल सिहं (एडवोकेट)
पुत्रियाँ : सारन्धा एवं चन्द्रप्रभा

विशेष उपलब्धियाँ :
सरन्धा–एम. बी. डी. मॉडल स्कूल (मान्यता प्राप्त) पांचवी पास सागरपुर स्कूल चला रही है। चन्द्रप्रभा–पीतम पुरा (घर की जिम्मेदारी)

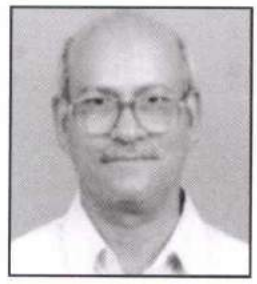

श्री देवदत्त शर्मा

जन्मतिथि : 04–03–1947
जन्मस्थान : गुड़गाँव (हरियाणा), गाँव–झाड़सा
शिक्षा : स्नातक (बी. ए.)
स्थाई पता : WZ-346 D, नांगलराया, नई दिल्ली–110046
व्यवसाय : 15 वर्ष वायु सेना में, 18 वर्ष कैनरा बैंक (विशेष सहायक)

परिवार परिचय :–
पत्नी का नाम : श्रीमति रेवती
पुत्र : रविदत्त एवं सुरेन्द्र
पुत्री : किरण
दूरभाष : 28112079

भारत की ऋतुएँ

बसन्त –चैत, बैशाख। मार्च, अप्रैल।
ग्रीष्म –ज्येष्ठ, आषाढ। मई, जून।
वर्षा –श्रावण, भाद्रपद। जुलाई, अगस्त।
शरद् –आश्विन, कार्तिक। सितम्बर, अक्टूबर।
हेमन्त –मार्गशीर्ष, पौष। नवम्बर, दिसम्बर।
शिशिर –माघ, फाल्गुन। जनवरी, फरवरी।

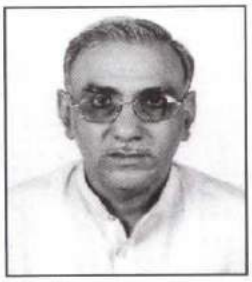

श्री आजाद सिंह

जन्मतिथि : 14 दिसम्बर 1948
जन्म स्थान : गांव किंसरेटी, जिला रोहतक, हरियाणा
शिक्षा : बी० काम (प्रथम)
स्थाई पता : वी. बी. 204, पथ सं. 9, वीरेन्द्र नगर, नई दिल्ली–110058
व्यवसाय : दिल्ली सरकार से सेवा–निवृत्त राजपत्रित अधिकारी
कार्यक्षेत्र : दिल्ली प्रशासन कर्मचारी महासंघ में महामन्त्री, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली में महामन्त्री, आर्य केन्द्रिय सभा, दिल्ली राज्य में मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अन्तरंग सदस्य आदि आदि, वर्तमान में सार्वदेशिक आर्यवीर दल में उप–प्रधान संचालक
पत्नी का नाम : श्रीमती सावित्री देवी
पुत्र : संजीव एवं नीतिश
पुत्रवधुएं : श्रीमती रीना एवं श्रीमती नीतू
पुत्री : श्रीमती कविता

विशेष उपलब्धियाँ : सार्वदेशिक आर्यवीर दल के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में सेवा कार्य एवं आपदा राहत कार्यों में योगदान, दिल्ली एवं मुम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य/आर्यवीर महा सम्मेलनों में भागीदारी एवं सेवा कार्य हमारे पूज्य पिता श्री महात्मा आनन्द मुनि वानप्रस्थी आर्यसमाज के अनेक आयोजनों में वर्ष 1965 से भाग लेते रहे हैं। इस क्षेत्र के पूर्व महानगर पार्षद श्री लोकवीर सिंह एवं श्री राजेन्द्र तंवर, पूर्व निगम पार्षद एवं पश्चिमी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री भूप सिंह जी से अति निकट सम्बन्ध रहे।

पश्चिमी दिल्ली के आर्य समाजों में सबसे पुरानी एवं बड़ी आर्यवीर दल की शाखा के आर्यवीरों ने अनेक सराहनीय सेवा कार्य किए हैं।

आप के द्वारा राजकीय सेवा से निवृत्ति के उपरान्त आर्यसमाज नांगल राया में सर्वोत्कर्ष के माध्यम से संचालित कम्प्यूटर सेन्टर एवं सार्वदेशिक आर्यवीर दल के मुख्यालय के लिए पूर्णकालिक अवैतनिक सेवाएं निरन्तर उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

दूरभाषः 25500038 मोबाईल : 9650897544

श्री राज पाल सिंह

जन्मतिथि	:	08–01–1948
जन्मस्थान	:	नांगलराया, नई दिल्ली
शिक्षा	:	एम. ए. (ईको)
स्थाई पता	:	WZ-1311, नांगलराया, नई दिल्ली – 110046
व्यवसाय	:	सेवानिवृत्त अधिकारी (31–01–2008)
कार्यक्षेत्र	:	कोषाध्यक्ष
परिवार परिचय	:	आर्य परिवार – पिताजी श्री हरीश चन्द जी (पूर्व मन्त्री) आर्यसमाज, नांगलराया
पत्नी का नाम	:	श्रीमति यशोदा रानी (आर्य परिवार से, गऊ सेवा में अटूट आस्था)
पुत्र	:	अविनाश तंवर (बी.ई. इलैक्ट्रानिक्स, अमैरिकन कम्पनी में इन्जीनियर के पद पर कार्यरत)
पुत्री	:	सीमा सिंह

1969 में दिल्ली यूनिवरसिटी से बी.एस.सी. (जैनरल) उत्तीर्ण करने के पश्चात 1970 में सी आर पी एफ (केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल) में सब इन्सपैक्टर पद पर कार्यरत हुए। 1978 में इन्सपैक्टर के पद पर गृह मंत्रालय के कार्यालय 'राष्ट्रीय अपराध रिकार्डस व्योरो' में तैनात। यह कार्यालय में रहते हुए भारतीय पुलिस में रिकार्ड कम्पयूट्रिकरण करने में योगदान किया। लगभग 25 वर्ष तक क्लास 1 राजपत्रित अधिकारी पद पर कार्यरत रहे। 15 अगस्त 1996 में राष्ट्रपति द्वारा पुलिस मेडल द्वारा सम्मानित किया गया। आर्यसमाज नांगलराया के कोषाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। पहले भी कई वर्ष इस पद पर कार्य किया है।

(संलग्न पुलीस मैडल)

D.O. No.11019/13/96-PMA Cell

गृह सचिव
HOME SECRETARY
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

K. PADMANABHAIAH

New Delhi - 110 001.

Dated 26th January, 1996.

My Dear Singh,

I am very happy to inform you that the President has been pleased to award you the **Police Medal for Meritorious Service.** I send you my heartiest congratulations and trust that you will maintain your devotion to the cause.

Yours sincerely,

(K. PADMANABHAIAH)

Shri R.P. Singh,
[redacted] Staff Officer,
N.C.R.B.,
New Delhi.

श्री पृति पाल सिंह

जन्मतिथि : 19.05.1956
जन्मस्थान : नांगल राया, नई दिल्ली
शिक्षा : बी.ए.
स्थाई पता : डब्लू जेड 1312, नांगल राया, नई दिल्ली – 46
व्यवसाय : निजी सचिव, ग्रामीण विकास मंत्रालय
कार्यक्षेत्र : मंत्री, पिछले 8–10 वर्षों से कोषाध्यक्ष
परिवार परिचयः
पत्नी का नामः पुष्पा रानी
पुत्र : आशीष
पुत्रियाँ : वंदना, प्रतिभा, ज्योति

मंत्री, आर्य समाज नांगल राया

हमें आर्यसमाज के संस्कार विरासत में मिले हैं। हमारे दादा जी स्व. मीर सिंह जी (जन्म 1885, मृत्यु 1960) हैड मास्टर रिटायर हुए थे। वो आर्यसमाज नांगल राया की स्थापना से ही सदस्य थे और यज्ञ आदि में हमेशा भाग लेते थे।

हमारे पिताजी स्व. हरीश चन्द जन्म 1920, मृत्यु 1996 भी सरकारी नौकरी करते थे और आर्यसमाज नांगल राया के सदस्य/मंत्री/प्रधान रह चुके थे। वो हमेशा 3 बजे सुबह उठ जाते थे। अपने नित्य कर्म करने के पश्चात् 4 बजे घूमने के लिए जाते थे। 4–6 बजे घूमने के बाद आर्यसमाज में यज्ञ में भाग लेते थे। सरकारी सेवा से रिटायर होने के बाद उन्होनें घर पर ही नित्य यज्ञ करना शुरु कर दिया था। नित्य यज्ञ में हमारी माता जी जो अनपढ़ थी उनके साथ यज्ञ करती थी। यज्ञ करने की वजह से ही हमारी माता जी को सारे मंत्र याद हो गए थे। हमारे घर पर इतने हवन के पात्र/हवन कुंड/हवन पुस्तक होती थी जितनी आर्यसमाज में भी नहीं होती थी।

हमारे पिताजी ने रिटायरमेंट के बाद भी शमशान घाट 40,000 रु. खर्च करके शेड बनवाया था जिसके खम्भों पर मंत्र (गायत्री मंत्र/प्रार्थना उपासना मंत्र आदि) लिखवाकर पत्थर लगवाये थे।

हम तीन भाई हैं। बड़े भाई श्री सत्यपाल सिंह, एक हैड मास्टर रिटायर हुए है। वो भी नित्य समय पर यज्ञ में भाग लेते हैं। उनका परिवार आर्यसमाज के कार्यक्रमों आदि में भाग लेते हैं।

दूसरा भाई श्री राजपाल सिंह जी है। वो भी सरकारी सेवा से राज्य Gazetted Officer (Director) रिटायर हुए हैं। वो आजकल आर्यसमाज नांगल राया के कोषाध्यक्ष है। वो और उनका परिवार भी हमेशा यज्ञ आदि में भाग लेते है।

मैं पृति पाल सिंह भी सरकारी सेवा में गृह ..... में निजी सचिव (Gazetted Officer) हूं। मैं आजकल आर्यसमाज नांगल राया का मंत्री भी हूं। पिछले करीब 8–10 वर्षों से आर्यसमाज नांगल राया का कोषाध्यक्ष रह चुका हूं। मैं भी हर शनिवार व रविवार आदि को आर्यसमाज के यज्ञ आदि में भाग लेता हूं। मेरा परिवार भी हर आर्यसमाज के कार्यक्रम में भाग लेते हैं।

हमारे तीनों भाईयों के घरों में कम से कम एक बार हर महीने यज्ञ जरुर करते हैं।

डा. जयदेव वर्मा

(सुपुत्र स्व. श्री युधिष्ठिर वर्मा)

जन्मतिथि : 18–09–1936

जन्मस्थान : नांगलराया, नई दिल्ली

शिक्षा : B.V.Sc. & Att. (पंजाब विश्वविद्यालय), पंजाब पशु चिकित्सक कॉलेज, हिसार N.D.P.V.M. (IVRI) LMDVA, L.M.V.A.

स्थाई पता : WZ - 311 A/3, नांगलराया, नई दिल्ली–110046

व्यवसाय : पशु चिकित्सक–दिल्ली सरकार में

कार्यक्षेत्र : 1959–1994 तक कार्य किया और प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी के पद से सेवा निवृत्त हुए

परिवार परिचय :

पत्नी का नाम : श्रीमति कमला देवी वर्मा (B.A., B.Ed.) पूर्व अध्यापिका (N.D.M.C.)

पुत्रियाँ : ज्योति नागपाल एवं प्रीति कपूर (M.Com., B.Ed., B.H.M.S. Delhi)

विशेष उपलब्धियाँ :

प्रारंभिक शिक्षा नांगलराया से ही आरंभ की, 5–8 कक्षा रामजस स्कूल न. 2, आनन्द पर्वत से की। मैट्रिक– तीमारपुर और प्रि–मेडिकल , दिल्ली कॉलेज जो अब डा. जाकीर हुसैन कॉलेज है से की। बी. वीएससी और ए. एच. (पंजाब विश्वविद्यालय), पी.बी. वेटी. कॉलेज, हिसार से 1959 में प्राप्त की– कॉलेज की हाकी टीम के सदस्य–चार साल रहे। और 58.59 में पंजाब विश्व विद्यालय के हाकी टुरनामेन्ट ग्रुप बी जो के टैकनीकी कालजो का था वो जीता और उस टीम का Secty. होने का गौरव प्राप्त था।

सेवा निवृत्ति के पश्चात दिल्ली क्षेत्र में एक NGO संस्था बनाकर कई वर्षो तक विभिन्न क्षेत्रों में पशु चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया और अब भी उन में भाग लेते रहते हैं। 1997 व 1998 में Delhi Vety. Association के निर्वाचित Secty. होते हुए कई Seminars का आयोजन किया। कई वर्ष तक Metro-Vet नाम के समाचार पत्र का सम्पादन किया। D.V.A. के सदस्यों की Directory प्रकाशित करने में बहुत योगदान किया। Delhi Vety. Council के भी 16–11–2000 से 18–6–2004 तक निर्वाचित सदस्य के पद पर काम किया।

आकाशवाणी और दूरदर्शन पर अपने पशु चिकित्सा विषय से सम्बन्धित अनेक बार चर्चा में भाग लिया। "चौपाल" कार्यक्रम में कई बार भाग लिया। यह Prof. Satellite द्वारा कई राज्यों में प्रसारित होता था।

आर्य समाज से बचपन से जुडे रहे। सेवा निवृति के पश्चात आर्यसमाज नांगल राया से पूरी तरह जुडे हुए है। कई बार मंत्री/प्रधान के पद पर कार्य किया। समाज में दोनों भवनों के निर्माण में योगदान दिया और बाहर से योगदान इकट्ठा कराने में भी पूरा योगदान दिया।

2005 में आर्यसमाज के सभी सदस्यों की Directory भी प्रकाशित कराई।

दिल्ली सरकार में 1959–1994 तक लगभग 34 वर्ष नौकरी की। पशु चिकित्सक के तौर पर दिल्ली के प्रतिष्ठित चिकित्सालयों में कार्यरत रहे जिसमें मुख्य – अलीपुर, करोल बाग, संसद मार्ग जो अब मोती बाग में स्थित है। पदोन्नति के पश्चात मुख्य कार्यालय में राजपत्रित पद पर कुशलतापूर्वक अपने कार्य को अन्जाम दिया और 30.9.1994 को 58 वर्ष की आयु में सेवा निवृत हुए।

आर्य समाज नांगल राया में सक्रिय होते ही पहले तो समाज को पंजीकृत करने की प्रक्रिया आरंभ कर 1997 में समाज का पंजीकरण कराया। इसी वर्ष समाज का Audit/Balance Sheet, C.A. से कराना आरंभ कराया। यहां हम श्री नरेश राणा C.A. का आभार व्यक्त करते हैं जो 1997–98 से हर वर्ष समाज का Audit निःशुल्क कर रहे हैं और समाज के कार्यों में व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर योगदान करते रहते हैं। 28.2.2002 को उदयपुर जाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह वर्ष सत्यार्थ प्रकाश के रचना के 100 वर्ष पूरे होने पर निकाली भव्य शोभा यात्रा के भागी बने।

27.2.2002 को साबरमती एक्सप्रैस के डिब्बे नं० 5–6 को भीड़ ने आग लगा दी जिस से 59 कार सेवकों की जलने से मृत्यु हो गई। उस दिन हम उदयपुर में ही थे। इस के पश्चात ही गुजरात में साम्प्रदायिका दंगे शुरु हो गए।

– डा. जयदेव वर्मा

अनुपम सहयोगी

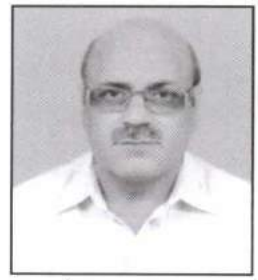

श्री अशोक कुमार तँवर

श्री अशोक कुमार तँवर का जन्म पिता मा० ईश्वर सिंह और माता श्रीमती कृष्णा देवी के घर में नांगल राया गाँव में 2 मई 1958 को हुआ। आपने बी.ए. की डिग्री लेने के पश्चात इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया और बी.एस.ई.एस. दिल्ली में अधिशाषी अभियन्ता के पद पर कार्यरत हैं। आप अपने पिता के तुल्य हंसमुख, मिलनसार, सहयोगी स्वभाव के धनी हैं। आप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के साथ–साथ धार्मिक, सामाजिक व बिरादरिक कामों को भी सुचारू रूप से कर रहे हैं। आप आर्यसमाज नांगलराय के काफी अरसे से सदस्य हैं और आर्यसमाज के निर्माण कार्यों में अपने निजी और अपने सम्पर्कों से पर्याप्त धनराशि जुटाने में सहयोगी रहे हैं। जब भी कभी आर्यसमाज के समक्ष कोई समस्या आती है तो अपने उपयोगी सुझावों व दान से हमें उपकृत करते रहते हैं। निराशा नाम का शब्द आपकी डिक्शनरी में नहीं है और अपने प्रेरणात्मक मार्गदर्शन से निरन्तर आर्यसमाज के अधिकारियों का उत्साह बढ़ाते रहते हैं।

दूरभाषः 28520728
मोबाईल : 9350316308
ई–मेल : ashoktanwar@relianceadd.com

श्री राजपाल सिंह डुडेजा

आपका जन्म 1.1.1941 को पाकिस्तान के गाँव दाज़ल जिला डेरागाजीखां में पिता श्री चौथूराम जी व माता श्रीमती प्रेमदेवी के घर में हुआ। देश विभाजन के बाद आप गुडगाँव में स्थायी शिविर में 2–3 माह रहे। फिर सोहना में 5 वर्ष मार्च 1954 तक रहे। तदुपरान्त नांगल राय गाँव में आकर रहने लगे। आपके पिता श्री चौथूराम जी तभी आर्यसमाज नांगलराय के सदस्य बन गये और सपरिवार समाज में आना प्रारम्भ कर दिया। आप चार भाई – श्री रामलाल, श्री राजपाल, श्री यशपाल व श्री रतन लाल तथा चार बहिनें श्रीमती कौशल्या देवी, श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्रीमती जयदेवी, प्रभा कुमारी और सुदेश कुमारी सभी आर्य विचार धारा से ओत प्रोत हैं। 1969 तक नांगलराय के भवन में ही किराये पर रहे और अपना योगदान देते रहे। श्री राजपाल सिंह इस समाज में अनेक बार पुस्तकाध्यक्ष व कोषाध्यक्ष भी रहे। श्री रतन लाल सिर में कैन्सर होने से अल्पायु में ही चल बसे। श्री राजपाल सिंह 1969 में गुडगाँव रहने लगे और यहाँ आर्यसमाज सेक्टर 4 में सदस्य बन गये और तीन वर्ष तक जून 2002 से जून 2005 तक इस समाज के प्रधान रहे। एक वर्ष गुड़गाँव आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान पद पर भी अगस्त 2004 से अगस्त 2005 तक विराजमान रहे। इनके एक भाई श्री यशपाल आर्य आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी में गत 5–6 वर्ष से कोषाध्यक्ष के पद को सुशोभित कर रहे हैं। श्रीमती प्रभा इनकी बहिन भी आर्यसमाज बी ब्लाक स्त्री समाज की उपप्रधान हैं। शेष बहिनें श्रीमती जयदेवी एवं श्रीमती सुदेश कुमारी अपने परिवार सहित इस समाज की सदस्या हैं।

श्री राजपाल सिंह के चचेरे भाई श्री सन्तोष कुमार दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल के महासचिव थे और नांगलराय आर्यसमाज के आर्यवीर दल को इन्होंने दिल्ली के शिखर पर पहुँचाया था। श्री संतोष कुमार के नांगलराय छोड़ने के उपरान्त श्री राजपाल सिंह ने कई वर्षों तक इस शाखा का नेतृत्व किया।

– भगवानदास

ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

अर्थ – हे ब्रह्मसूत्र! तू यज्ञोपवीत है। तुझे यज्ञ–कार्य के लिये ही ग्रहण करता हूँ। मैं आज स्वयं को यज्ञोपवीत में बांधता हूँ।

श्री ओम प्रकाश वर्मा (प्रेमी)

ऐसा लगता है कि मेरे पूर्व जन्म में कोई अच्छे कार्य या कर्म रहे होंगे जिससे मैं इस जन्म में आर्य समाज जैसी धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ। मेरे पिता स्वः श्री कन्हैयालाल जी बड़े धार्मिक एवं सामाजिक व्यक्ति थे। वह मुझे बाल्यकाल से ही अपने साथ अनेको कार्यकमों में ले जाया करते थे। पहले हम प्रताप नगर, तिहाड़ जेल के सामने किराये पर रहते थे, वहाँ से आर्य समाज नांगल राया आते थे। उस समय साईकिल ही अच्छी सवारी थी सो बच्चों की अगली सीट पर बैठा मुझे हर रविवार को अपने साथ यहां समाज में लेकर आते। उसके बाद 1962 मे अपना घर बना लिया तो और आर्य समाज के निकट हो गये। आर्य समाज का कोई भी कार्यकम हो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस (25 दिसम्बर) या कोई जलसा मुझे पिताजी अवश्य अपने साथ ले जाते। हर कार्यकम बड़ी धूमधाम से और पूरी लगन और अच्छी संख्या में सम्पन्न होता था। कहीं भी बस जाती तो पूरी भर कर जाती। पहले पुरानी इमारत थी और एक बाहर की तरफ बड़ा हाल था वो रविवार को तो पूरा भर जाता था, अंदर की तरफ मैदान था तो उसमे ये कुछ विशेष कार्यकम होते तो अच्छी संख्या रहती।

एक संस्मरण मुझे अच्छी तरह से याद है गो हत्या के विरोध में दिल्ली में एक आन्दोलन चला था जिसका नेतृत्व आर्य समाजों द्वारा किया गया था। शायद यह 1965 की बात है। मेरी उम्र 5 वर्ष की थी सो पिताजी के साथ मुझे भी इस कार्यकम में जाने का अवसर मिला। आर्य समाज नांगल राया से बस द्वारा हम पुरानी दिल्ली पहुंचे और वहां एक विशाल जलूस निकला और दोपहर 2.30 बजे रामलीला मैदान में एक विशाल जनसभा में तब्दील हो गया। हम मंच के पास ही थे । भगदड़ मच गई फिर मालूम पड़ा कि गोलियो से मंच पर जो भी संत समाज था और आंदोलन के नेता आदि थे गोलियों का निशाना बने। अकस्मात् सैकड़ों साधु सन्तों को मौत के घाट उतार कर उनकी लाशें जंगलों में फिकवा दी गई। उस समय कांग्रेस का ही शासन था। किस प्रकार उस आन्दोलन को कुचला गया बड़ी निर्ममता और बेशर्मी के साथ, दुख होता है। लेकिन हमें तो परमात्मा बचाने वाला था सो हम लघुशंका के बहाने बाहर आ गये। उस आन्दोलन की तुलना स्वामी रामदेव जी के आन्दोलन से की जा सकती है जो काले धन की वापसी के लिये रामलीला मैदान में पिछले वर्ष

किया गया था। अभी भी कांग्रेस का शासन था और आधी रात को पुलिस का बर्बर अत्याचार किसी से छिपा नहीं है और स्वामी रामदेव जी भी आर्यसमाजी हैं। इस आन्दोलन को देखकर मुझे 1965 का गो हत्या विरोधी आन्दोलन की याद ताजा हो गई थी।

दिसम्बर 1991 मे डा. मुरली मनोहर जोशी द्वारा एकता यात्रा निकाली गई। 26 जनवरी 1991 में लालचौक श्रीनगर कश्मीर में तिरंगा ध्वज फहराने का कार्यकम था। इस कार्यकम में भी दिल्ली से हम बस द्वारा कश्मीर गये हालांकि जम्मू से आगे नहीं जाने दिया गया। कुछ प्रतिनिधि ही हवाई मार्ग से गये और श्रीनगर जाकर ध्वज फहराया। उस समय भी परिस्थितियाँ प्रतिकूल थी। सिक्ख आतंकवाद पंजाब में फैला हुआ था। हमें 24 जनवरी रात्रि प्रस्थान करना था जो उसी दिन आंतकियो ने एक बस को निशाना बनाया। यह सूचना टी.वी. के माध्यम से सांय मालूम पड़ी लेकिन जाना था होसले बुलंद थे सो गये फिर पंजाब मार्ग बदल कर बाईपास देहरादून से हमें निकाला गया। उस समय मेरे पास विश्व हिन्दू परिषद की अपने इस क्षेत्र की जिम्मेदारी थी सो 1992 में अयोध्या स्थित विवादित ढ़ांचा जब गिरा तो सौभाग्य से हम वहीं थे।

फिर उसके बाद गुजरात की भूकंप त्रासदी हुई। उसमें भी मुझे सेवा करने का आर्य समाज नांगल राया द्वारा मौका मिला। इसी पुस्तिका में कुछ जानकारियाँ मैने लिखी हैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भी स्वयं सेवक के नाते जुड़ा हुआ हूँ। लगभग 15 वर्षो तक अखिल भारतीय सी.जी.एच. एस. कर्मचारी संघ में एक जिम्मेदार नेता के नाते कार्य किया। एक बार लगातार नौ दिन तक भूख–हड़ताल की 24–24 घंटे तो कई बार भूख–हड़ताल पर रहे। हमने उस दौरान सरकार को झुकाया और उपलब्धी प्राप्त की। अंत में ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मेरा जीवन देश, धर्म और समाज कार्यो में ही बीते। मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कमला देवी वर्मा जी आर्यसमाज के कार्यो में निरंतर मेरा सहयोग करती हैं। मेरा पुत्र पवन कुमार और पुत्रियाँ यशोदा एंव रेखा आर्यवीर दल में रहकर पले और बढे हैं।

जब आये ससांर मे, जग हंसा, हम रोये !
ऐसी करनी कर चलो, हम हंसें जग रोये!!

ओम प्रकाश प्रेमी
डब्ल्यू० जैड० – 284,
गली नं० 10,
लाजवन्ती गार्डन,
नई दिल्ली– 110046

ओ३म्

श्रद्धांजलि

स्व० पं रामस्वरूप जी

स्व० श्रीमती भगवान देई

श्रीमती सावित्री शर्मा

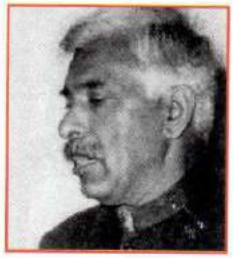

स्व० पं विष्णुदत्त शर्मा

स्व० पं० ब्रह्मदत्त वात्स्यायन

स्व० पं शिवदत्त शर्मा

स्व० डा० आलोक शर्मा

डा० अरविंद शर्मा

डा० अतुल शर्मा

स्व० श्री सार्थक शर्मा

हम हैं आपके :–

श्रीमती कमलेश
मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) श्रीदत्त शर्मा
पं० अशोक शर्मा
पं० मनीष वात्स्यायन

श्रीमती मंजु शर्मा
पं० राजीव शर्मा
पं० सन्दीप शर्मा
पं० सचिन शर्मा

Buying GOLD/SILVER made easy By clicking of mouse

- No risk of theft
- No risk of impurity
- Minimum cost of holding
- Delivery in Dmat Account

OUR SERVICES

- EQUITIES
- DERIVATIVES
- COMMODITIES
- CURRENCY DERIVATIVES
- INSURANCE
- MUTUAL FUND
- IPOs
- ONLINE TRADING
- DP SERVICES
- ADVISORY SERVICES
- RESEARCH
- DEDICATED PCG DESK

तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्

VISHWAS

Member: NSE, BSE , MCX, NSEL & CDSL

आपके सुदृढ़ विश्वास का आधार

www.vishwasfincap.com

Free Open your Dmat/Trading Account Now

NO AMC, under BSDA* Scheme (By:-SEBI)

* (Basic Sarvices Demat Account)

Attrtactive Scheme for DSA, Remiser and Sub-brokers....

WZ-310, NANGAL RAYA, DELHI CANTT. N.D-46. PH:. 011-47115555-75, 9212187004/05/06. Email:- marketing@vishwasfincap.com

Ch. Chaman Singh Mogha

Best Wishes From

pugmark™

the print people

Pugmark Printworx Pvt. Ltd.

A Complete Solution of Printing

131 C, 1st Floor, Naraina Ring Road, Near Behl Hospital,
New Delhi-110 028, India • Tel. : 011-25775449
H/P : +91 9891455634 • email@pugmark.org.in • www.pugmark.org.in

Ch. Bhagwan Dass

Great Printers

A House of Quality Works

Wedding Cards • Invitation Cards • Letter Heads • Leaflet / Flyers • Self Ink Stamps • Business Cards • Books / Journals • Digital ID Cards • Stickers / Labels • Publicity Material • Flex • Banner • Hoarding • Calendars • Vinyl Banner • Offset Printing • Posters • Signages • Magazines • Catalogues • Digital Printing • Radium Board • Screen Printing • Digital Photostat • Corrugated Boxes • Computers Stationary • Printed Self adsive tape

WZ-82A, MOHAN NAGAR,
PANKHA ROAD, NEW DELHI- 110046

Ph.: 28520140, 9810404707 e-mail : greatprinters82@gmail.com

Best Wishes From :

Unique Graphics

Specialists in :

e-Book Designing & Publishing
Data Conversion & Transformation
Digital, Offset & Screen Printing
Books, Magazines, Office Stationery
Decorated Coffee Mugs, Jute Bags,
Conference Material, Pens, Pads,
Gift Items, Diaries, Calenders,
Stickers, Pamphlets etc.

UG-2, Kirti Shikhar, District Centre, Janakpuri, New Delhi-110058
Tel # 25612414, 9810512414, 9810483738
Email : vijay@ugindia.com

श्री राजेश प्रसाद शर्मा

जन्मतिथि : 1–12–1949 (एक दिसम्बर उन्नीस सौ इकतालीस)
जन्मस्थान : बनबोई, गुलावठी, जि० बुलन्द शहर (उ० प्र०)
शिक्षा : 12वीं (विज्ञान) विद्युत और यान्त्रिक ईंजिनियरिंग, डिपलोमा
स्थाई पता : आर०जैड० 561/ई–7, गली नं० 24, साधनगर–।।, पालम, नई दिल्ली–45
व्यवसाय : नौकरी की थी अब पैन्शनर
कार्यक्षेत्र : योग सिखाना

परिवार परिचय
पत्नी का नाम : श्रीमती बीना शर्मा
पुत्र : 1 (श्री नितिन कुमार)
पुत्री : 1(श्रीमति दिव्या)

विशेष उपलब्धियाँ :

पतंजलि योग संस्थान हरिद्वार से 2005 में योग शिक्षक प्रमाणित अभिरुचि : लगभग 22 वर्ष भारतीय सेना की ई०एम०ई० कोर में दूर संचार विभाग में सेवा की। उसके बाद लगभग 14 1/4 वर्ष पुनः रक्षा मंत्रालय में दूर संचार विभाग में सेवा की। नौकरी के पश्चात ही पहले आर्य समाज इन्द्रा पार्क से जुड़ा और फिर 1999 अथवा 2000 से नांगल राया समाज में

दूरभाष : 25031043 मो. : 9811583131

श्री प्रभाष चन्द्र गुप्ता

जन्मतिथि : माघ शु. प. वि. सम्वतः 2002 (वसंत पंचमी)
जन्मस्थान : रिवाड़ी
शिक्षा : B.Sc., B.Ed.
स्थाई पता : WZ-1318 D, नांगलराया, नई दिल्ली–110046
व्यवसाय : सेवा निवृत्त शिक्षक
कार्यक्षेत्र : नांगलराया, नई दिल्ली

परिवार परिचय :
पत्नी का नामः श्रीमति बिमला देवी
पुत्र : दिनेश, आदेश एवं रितेश

विशेष उपलब्धियाँ :

विदेशों में शिक्षा गोष्टियों में भाग लिया, स्कूल स्तर की शिक्षा आर्य समाज के विद्यालयों से प्राप्त की।

भोजन के समय की प्रार्थना

ओ३म् अन्नपतेअन्नस्य नो देहिअनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

अर्थः हे अन्न के स्वामिन् प्रभो! हमें अन्न दो जो रोगरहित और पुष्टिकारक हो। आप अन्नदाता का कल्याण करें। दोपाये (मनुष्यों) और चौपाये (पशुओं) में तेज धारण करो।

श्री लोकेश कुमार

जन्मतिथि : 5–4–1975
जन्मस्थान : नांगलराया, नई दिल्ली
शिक्षा : बी.ई. (सिविल)
व्यवसाय : स्वकार्यरत हैं
पता : WZ-525, A/3, नांगलराया, नई दिल्ली
कार्यक्षेत्र : वास्तु परिष्करण

परिवार परिचय :–
पत्नी : श्रीमति शैलजा
पुत्र : आर्यन
पुत्री : वंशिका

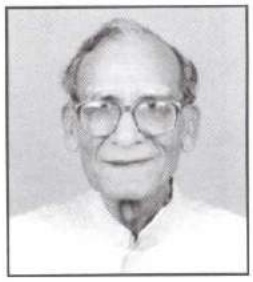

श्री रामकिशन सिंह

जन्मतिथि : 04–02–1929
जन्मस्थान : नांगलराया, नई दिल्ली
शिक्षा : बी. ए.
स्थाई पता : WZ-1303 A, नांगलराया, नई दिल्ली
व्यवसाय : अवकाश प्राप्त कर्मचारी (28–02–1987 से)
कार्यक्षेत्र : आर्य समाज नांगलराया की गतिविधियों में भाग लेना

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमति सावित्री देवी
पुत्र : तीन
पुत्री : एक

शान्ति पाठ

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

शान्ति गीत

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व में जड़ चेतन में।। शान्ति.....
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में, और शूद्र के हो तन–मन में।। शान्ति....
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीव मात्र के तन में मन में, और प्रकृति के हो कण कण में ।। शान्ति....

वैदिक संस्कारों से अनुप्राणित

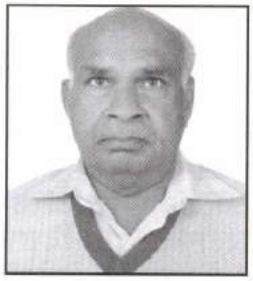

श्री राम दास आर्य

जन्मतिथि : 10.10.1947
जन्मस्थान : प्रतापगढ़ (यू.पी.)
शिक्षा : एम.ए.
स्थाई पता : WZ - 74 I/1, गली नं. 1, मोहन नगर, नई दिल्ली–46
व्यवसाय : भारत सरकार में उप सचिव के पद से सेवा निवृत्त
परिवार परिचय :
पत्नी का नाम : श्रीमति मधू
पुत्र : दीपक कुमार
पुत्रियाँ : 4 (तीन की शादियाँ हो चुकी है)

विशेष उपलब्धियाँ :

मेरे पिताजी स्व. श्री मंगल देव ने आर्य समाज मंदिर में सन् 1954 से 1986 तक सेवक का कार्य किया और परिवार सहित आर्य समाज मंदिर में ही रहते थे। उस समय आर्यसमाज मंदिर में और प्राइमरी स्कूल नांगल राया में पहली कक्षा से पांचवी कक्षा तक की पढ़ाई हुआ करती थी। कुछ कक्षायें आर्यसमाज मंदिर में और कुछ कक्षायें प्राइमरी स्कूल नांगल राया में लगा करती थी। मैंने पहली से चौथी कक्षा की पढ़ाई यहीं से पूरी की थी।

स्व. पंडित सेवा राम जी जो कभी चप्पल या जूता नहीं पहनते थे, नांगल राया के कुछ विद्यार्थियों को एकत्र करके आर्यसमाज मंदिर में प्रतिदिन सन्ध्या कराया करते थे और धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। कुछ समय पश्चात् आर्य वीर दल की स्थापना हुई और यही बच्चे उसमें भाग लेने लगे। स्व. श्री संतोष कुमार जी डी.ए.वी. स्कूल, दिल्ली कैन्ट में अध्यापक थे, सायंकाल को प्रतिदिन आर्यवीर दल की शाखा चलाया करते थे। लगभग सभी आर्य वीर आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में आया करते थे। उस समय ऋषि बोधोत्सव और निर्वाणोत्सव में सभी आर्य वीर राम लीला मैदान में एक या 2 दिन पहले ही पहुँच जाया करते थे और संचालन में अपनी सेवा करते थे। प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को श्रद्धानन्द के जलूस में आर्य समाज के सदस्य और आर्य वीर पैदल चलते हुए झूम–झूम कर गाते थे जो देखते ही बनता था। आर्य समाज में रहते हुए मुझे भारत सरकार की नौकरी मिली और मैं उप सचिव के पद पर सेवानिवृत हुआ। आर्यसमाज में मैं कोषाध्यक्ष और पुस्तकाध्यक्ष के पदों पर रहा। 1986 में स्वयं का गृह बनने पर पिताजी सहित अपने नए घर में रहना प्रारम्भ किया।•

पूर्व सांख्यिकीय निदेशक

श्री सेवानन्द

श्री सेवानन्द जी का जन्म 2 जनवरी 1942 को मेरठ जिले (अब बागपत) के गाँव फजलपुर (सुन्दर नगर) के एक गरीब परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम चौ० मेहरचन्द और माता का नाम श्रीमती रामप्यारी था। आपका विवाह टटीरी गाँव के चौ० बेगराम की पुत्री राजकली के साथ हुआ। आपका इकलौता पुत्र संजीव कुमार एक परिश्रमी व प्रतिभाशाली नवयुवक है जिसने नेताजी सुभाषचन्द्र तकनीकी संस्थान से 1995 में इलैक्ट्रानिक्स एवं संचार विषय में डिप्लोमा किया और इस समय वह अल्ट्रेण्टा इण्डिया (प्राइवेट) लि० नोयडा में निदेशक (इंजी.) के पद पर कार्यरत है।

श्री सेवानन्द ने आर्य विद्यालय तेड़ा (बागपत) से 1958 में प्रथम श्रेणी में मैट्रिक किया और वजीफा प्राप्त किया। 1960 में जे. एच. एम. आई. कालेज बड़ौत से प्रथम श्रेणी में इण्टरमीटिएट और 1962 में आगरा विश्वविद्यालय जाट वैदिक कालेज बड़ौत से बी. एस. सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की और 20 रूपये मासिक वजीफा पाया। वर्ष 1964 में इसी कालेज से एम. एस. सी. (स्टेटिस्टिक्स) प्रथम श्रेणी में और 100 रूपये मासिक वजीफा प्राप्त किया और आगरा विश्वविद्यालय में पाचवाँ स्थान प्राप्त किया। स्कूल और कालेज घर से काफी दूर होने के बावजूद आप प्रायः पैदल अथवा साईकल पर जाते–आते थे। घर पर दिया, मिट्टी के तेल की डिबिया, लालटेन तथा लैम्प की कम रोशनी में पढ़कर ही आपने अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद अगस्त 1964 में लुधियाना विश्वविद्यालय के अबोहर में प्रादेशिक फल अनुसन्धान केन्द्र में स्टेटिस्टिकल असिस्टैंट के पद पर नौकरी प्रारम्भ की। 17 फरवरी 1965 में खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय में तकनीकी सहायक के शासकीय पद पर नियुक्त हुए। 18 मार्च 1967 मे योजना मन्त्रालय के स्टेटिस्टिक्स विभाग में सीनियर इन्वेस्टीगेटर, 30 दिसम्बर 1976 को इसी मन्त्रालय में सहायक निदेशक के पद पर, 1 नवम्बर 1989 को पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार वन सर्वेक्षण विभाग में उप–निदेशक के पद पर आसीन हुए। 29 मार्च 1993 को आप उपर्युक्त विभाग में संयुक्त निदेशक तथा 1 नवम्बर 1997 को सांख्यिकीय एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में निदेशक के पद पर सुशोभित हुए। निदेशक के पद से ही आप 31 जनवरी 2002 को सेवानिवृत हुए। 7 अगस्त 2002 से 6 नवम्बर 2003 तक आपने एप्लाइड आर्थिक अनुसंन्धान राष्ट्रीय परिषद में मानदेय पर वरिष्ठ सलाहकार के पद पर कार्य किया।

इस समय श्री सेवानन्द जी समाज सेवा में सलंग्न है और आपका दरबार सिविल पेन्शनर्स सम्बन्धी मामलों में सुझाव और हर प्रकार की सहायता के लिये खुला है। जरूरतमन्दों और सांख्यिकीय/गणित के निर्धन छात्रों की सहायता बिना किसी शुल्क के आप करते रहते हैं। आप आर्यसमाज नांगलराय के सदस्य हैं। शान्ति शिक्षा समिति फजलपुर (सुन्दर नगर), वैदिक शिक्षा विकास समिति, बड़का जो अपने गाँव में कन्या इन्टर कालेज भी चला रही है के आजीवन सदस्य हैं। आपने गाँव फज़लपुर में शिव मन्दिर के निर्माण के लिये 1,01,100 रूपये की राशि दान में दी। शान्ति देवी कन्या हाई स्कूल फज़लपुर में एक कमरे के निर्माण के लिये 40,000 रूपये तथा चौ० धर्मसिंह कन्या इन्टर कालेज बड़का के भवन निर्माण हेतु 18,100 रूपये की राशि प्रदान की है।

श्री सेवानन्द जी 24 मई 1980 से नांगलराय के मकान न० डब्ल्यू जैड 1252 ए में स्थायी निवास बना कर रह रहे हैं।•

श्री कृष्णा पाल

जन्मतिथि : 31–12–1946
जन्मस्थान : गाँव–सूजरा, जिला–बागपत
शिक्षा : 12वी पास इलाहबाद बोर्ड
व्यवसाय : रिटायर्ड
पता : WZ-525, A/3, नांगलराया, नई दिल्ली
कार्यक्षेत्र : डाक विभाग

परिवार परिचय :–
पत्नी का नाम : श्रीमति सुभद्रा देवी
पुत्र : लोकेश कुमार एवं विकेश कुमार
पुत्री : तरुणेश्वरी

यज्ञांपवीय मंत्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

अर्थ – वेदोक्त कर्म में अधिकारी बनने के लिये इस ब्रह्म–सूत्र को जो परमात्मा के ज्ञान प्राप्ति का सूचक है, शुद्ध ज्ञान की सूचना करने वाला है, जो ईश्वर से स्वभाव–सिद्ध उद्दिष्ट है, पूर्वकाल से चला आता है, आयु के लिये विशेष हितकारी है, ऐसे 'ब्रह्मसूत्र' को मैं बॉधता (धारण करता) हूँ। ईश्वर करे कि यह निर्मलता का बोधक, यज्ञोपवीत बल और तेज देने वाला हो।

श्री राजेन्द्र सिंह तँवर

मेजर जनरल सर्वेयर
जनरल आफ इण्डिया

आपका जन्म 15.9.1949 को हुआ पिता चौ० रामचन्द्र जी (वरिष्ठ आर्यसमाज सदस्य) थे। आप ने हाई स्कूल रामजस स्कूल आनंद पर्वत से 1965 में किया। 1970 में बी.एस.सी. इंजीनियर (सिविल) परीक्षा डिस्टिंक्शन के साथ पास की। आपने एम एप्लाइड साइंस (रिसर्च) आस्ट्रेलिया मे भी 2 वर्ष तक सेवायें प्रदान थी। पी.जी. डिप्लोमा जी एस यू एस (कोडेस्ट्रल) से किया। आई.टी.सी. नेटवर्क पी.जी.डिप्लोमा (आटो कम्पोजीशन) में किया। आई. आई. टी. रूड़की से इंजीनियनर, एस.डब्लू.एस.टी. आई हैदराबाद से किया। इसके अतिरिक्त आपने एफ.आई.ई.,एफ.आई.एस., एम.आई. एस.जी. सिविल इन्जीनियर (भारत) मेन इंजीनियर काउन्सिल ऑफ इण्डिया से पास किये। आप भारत के महासर्वेक्षक में मेजर जनरल के पद से सेवा निवृत्त हुए। आप एक शान्त, विनम्र, सौम्य स्वभाव के धनी है। परिश्रम, सेवा, पुरूषार्थ आपके जीवन के मूलमन्त्र हैं। आपका मूल निवास डबलू जैड–1263, नांगल राय, नई दिल्ली–110046 में है।

डॉ० विनोद कुमार

जन्मतिथि : 30 जून 1964
जन्म स्थान : सूजरा, जिला बागपत (उ० प्र०)
शिक्षा : एम.एस.सी., एम.फिल., पी. एच.डी
स्थाई पता : ग्राम व पोस्ट–सूजरा जिला–बागपत (उ० प्र०), पिनकोड–250601
व्यवसाय : अध्यापन

पत्नी का नाम : अंजू
पुत्र : तन्मय मेधावी

दूरभाष : 28530374
मो० : 9868442929
e-mail : vkmedhavi65@gmail.com

भोजन की समाप्ति पर प्रार्थना

ओ३म् मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्सत्यस्य।
नर्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।

अर्थः मूढ़ अज्ञानी तो अन्न को व्यर्थ प्राप्त करता है। सच कहता हूँ वह उसका घातक ही होता है, क्योंकि वह न तो राजा का पालन करता है और न ही बन्धु का। सच तो यह है कि अकेला खाने वाला केवल पापमय होता है।

चौ० अमर सिंह तँवर

जन्मतिथि : 15.6.1927
जन्मस्थान : राम नगर (1912 में झोपड़ियों में निवास, 1914 में रामनगर गमन, 1947 में नांगल मे मकान बनायें।
शिक्षा : तितरौदा में बेगराम मास्टर से शिक्षा प्राप्त की
स्थाई पता : WZ - 1222, नांगल राया, दिल्ली आगमन – 1946
व्यवसाय : कृषि

परिवार परिचय :
पत्नी का नाम: श्रीमति सावित्री देवी
पुत्र : श्री सतपाल सिंह, श्री कृष्णपाल सिंह, राजेन्द्र कुमार, संजय कुमार
पुत्रियाँ : कमलेश, कान्ता

विशेष उपलब्धियाँ :
गाँव में शादी–विवाहों में व्यवस्था व निरीक्षण, मार्गदर्शन, समस्या–समाधान रस्म रिवाज की विशेष जानकारी, शादी विवाहों में प्रमुख की भूमिका,आपने बताया कि अजादी से पहले दिल्ली का हाईकोर्ट लाहौर में था।

दूरभाष : 28523506
मोबाईल : 9560559902

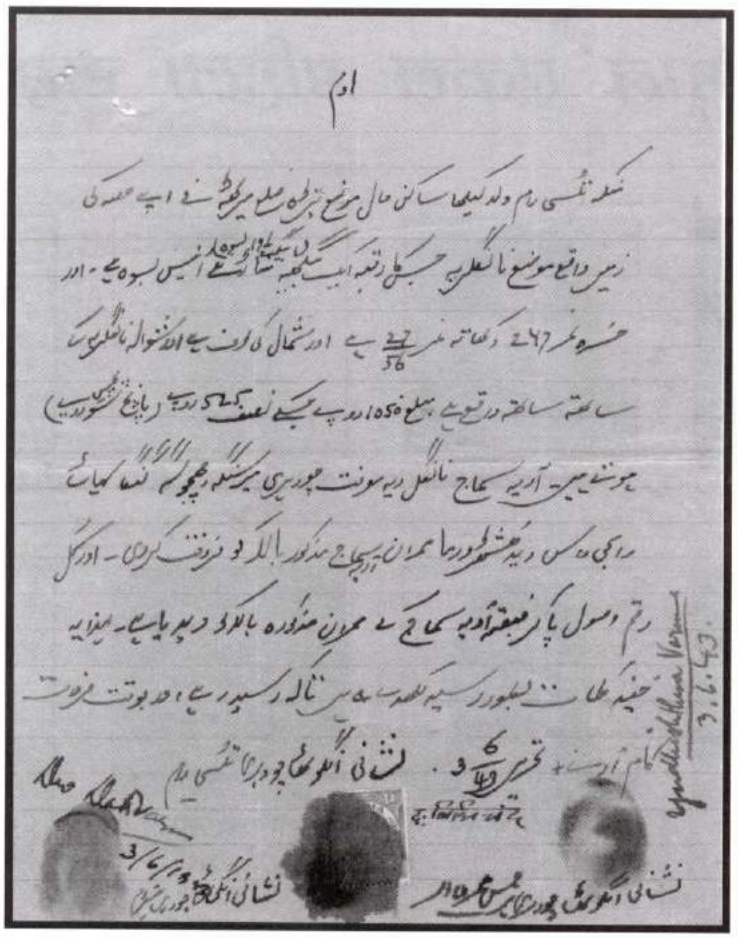

लिपि अंतरण

मैं कि तुलसीराम वल्द लेखा साकिन मौजा हाल मौजा तेड़ा जिला मेरठ ने अपने हिस्से की जमीन वाकैं मौजा नांगलरया जिसका रक्बा एक बीघा साढ़े उन्नीस विस्वा है। बीघा १६ (१/२) विस्वा है। और खसरा नम्बर २४७ खाता नम्बर २७/५६ है और शुमाल कि तरफ है और शिवालय नांगलराया के साथ–साथ वाकै है मुबलिग १०५०/– रूपया जिसके निस्फ ५२५/– रुपया पांच सौ पच्चीस रुपया होते है आर्यसमाज नांगलरया मार्फत चौधरी मीर सिंह, छज्जू सिंह, गंगा सहाय, राम जी दास, युधिष्ठिर वरमा मेम्बरान आर्यसमाज मजकूर बाला को फरोख्त कर दी। और कुल रकम वसूल पाकर कब्जा आर्यसमाज के मेम्बरान मजकूरा बाला को दे दिया है। लिहाजा चंद कलमात बतौर रसीद लिख दी है ताकि रसीद रहे और बवक्त जरूरत काम आवे।

तहरीर ३–६–४३
Deo Datt Verma
निशानी अंगूठा चौ० हरजस नम्बरदार
निशानी अंगूठा चौ० सीसराम

निशानी अंगूठा चौ० तुलसीराम
द: विधिचन्द

Yudhishthra verma
3-6-43

वर्तमान एकल महिला सदस्य

श्रीमती सुरक्षा

डा० अरूणा पँवार

श्रीमती आशा रानी

श्रीमती शकुन्तला वर्मा

श्रीमती रेखा तँवर

श्रीमती कुसुम

श्रीमती नरायणी देवी

श्रीमती कमलेश

श्रीमती पूनम

श्रीमती ज्योति नागपाल

श्रीमती माया देवी

श्रीमती गीता देवी

श्रीमती अनीता तँवर

वर्तमान दम्पति सदस्य

श्री रामकिशन सिंह एवं श्रीमती सावित्री देवी

डा० जयदेव वर्मा एवं श्रीमती कमला वर्मा

श्री भगवानदास एवं श्रीमती लीला देवी

मा० सत्यपाल सिंह एवं श्रीमती आशा रानी

श्री राजपाल सिंह एवं श्रीमती यशोदा

श्री अशोक कुमार तँवर एवं श्रीमती विमला देवी

श्री हरनन्द सिंह तँवर एवं श्रीमती शकुन्तला देवी

श्री पृतिपाल सिंह एवं श्रीमती पुष्पा

श्री इन्द्रकुमार तँवर एवं श्रीमती योगिता

श्री प्रमोद कुमार पँवार एवं पुष्पा पँवार

श्री प्रवीण पँवार एवं श्रीमती सन्ध्या पँवार

श्री विजय कुमार एवं श्रीमती स्नेहलता

श्री पी.के. श्रीवास्तव एवं श्रीमती शोभना श्रीवास्तव

श्री ओमप्रकाश एवं श्रीमती प्रेमलता

श्री अखिलेश सिंह एवं श्रीमती विभुसिंह

श्री सुरेश कुमार एवं श्रीमती सुनीता

श्री ओमप्रकाश प्रेमी एवं श्रीमती कमला देवी

श्री रमेश कुमार तँवर एवं श्रीमती कमलेश तँवर

श्री अविनाश तँवर एवं श्रीमती रीना तँवर

श्री देवकुमार तँवर एवं श्रीमती आरती देवी

श्री रामदास आर्य एवं श्रीमती मधु आर्य

श्री रिपुदमन सिंह एवं श्रीमती अनिता

दिवंगत सदस्य

श्री रूप चन्द

श्री राम चन्द्र

श्री रामशरण दास वर्मा

श्री ओम मित्र वर्मा

श्री तोख राम पहलवान

श्री हरिशचन्द्र

डा० भागमल शर्मा

मा० ईश्वर सिंह

श्री किशोरी लाल शर्मा

श्री सूरजभान गुप्ता

श्री युधिष्ठिर वर्मा

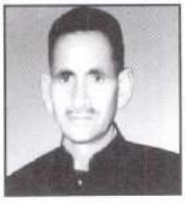
श्री देवदत्त वर्मा तहसीलदार

श्री पृथ्वी राज वर्मा

श्री विष्णु स्वरूप वर्मा

श्री माडे सिंह

श्री राजेन्द्र कुमार तँवर

श्री भूप सिंह तँवर

श्री चुन्नी लाल वाही

श्री शीश राम

श्री हरि किशन सिंह

श्री भगत लेखराज

श्री मीर सिंह

श्री गुरदयाल

महाशय देवी सिंह आर्य

श्री विजय कुमार

वर्तमान पुरूष सदस्य

श्री देवदत्त शर्मा

श्री रविदत्त शर्मा

श्री सत्यदेव शर्मा

श्री प्रमोद कुमार तँवर

श्री सुरेश कुमार

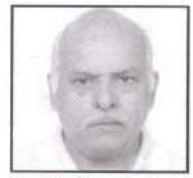
श्री दीपक वर्मा

श्री यशपाल वर्मा

मा० बाल किशन सिंह

श्री सूरजभान गुप्ता

श्री मेधावी तँवर

मा० तेजपाल सिंह

मा० प्रमोद कुमार

मा० आनन्द वाही

मा० गजराज सिंह

श्री जय किशन

श्री नरेन्द्र कुमार तँवर

श्री ब्रह्म प्रकाश

श्री अरूण कुमार

श्री गौरव

श्री अनिल तँवर

श्री अमित तँवर

श्री कुलदीप सिंह

श्री मनोज आर्य

श्री सन्दीप

श्री जगमाल सिंह यादव

श्री राजेश प्रशाद शर्मा

डा० अजय आर्य

मेजर ध्रुव वर्मा

श्री वैभव वर्मा

श्री रामकिशन गुप्ता

श्री सेवानन्द

श्री सतीश कुमार वर्मा

डा० विनोद कुमार

श्री रविन्द्र पाल

श्री कृष्ण पाल

श्री लोकेश कुमार

श्री रविन्द्र शर्मा

1956 से आर्यसमाज नांगलराया के अधिकारी

वर्ष	तिथि	प्रधान	उप–प्रधान	मंत्री	उप–मंत्री	कोषाध्यक्ष	पुस्तकाध्यक्ष	आडीटर	भण्डारी
1956	00.01.1956		श्री विष्णु स्वरूप वर्मा			श्री हरकिशन सिंह			
	11.07.1956		श्री हरकिशन सिंह						
1957		श्री पृथ्वी राज	श्री हरकिशन सिंह			श्री संतोष कुमार			
1958	02.10.1958		श्री हरकिशन सिंह						
			श्री दलीप सिंह			श्री सूरज भान			
1959		श्री हुकम चन्द	दलीप सिंह			श्री राजपाल डुडेजा			
1960		श्री रूप चन्द	श्री चुन्नी लाल वाही	श्री हरकिशन सिंह	श्री जगमाल सिंह	श्री लेख राज		डा० ताराचन्द	
1961	28.10.1961	श्री राम दीवान	श्री जगमाल सिंह	श्री हरकिशन सिंह	श्री दलीप सिंह	श्री सूरज भान	श्री कर्तार सिंह	श्री चुन्नी लाल	
1962	11.09.1962	श्री हरकिशन सिंह	डा० तारा चन्द	मा० रघुराज शर्मा	मा० हंस राज	श्री सूरज मान	श्री राज पाल		
1963	11.09.1963	श्री हरकिशन सिंह	श्री चुन्नी लाल वाही	मा० रघुराज शर्मा	श्री भगवान दास	मा० हंसराज	श्री राजपाल		
1964	21.10.1964	श्री रूप चन्द	श्री हरकिशन सिंह	मा० रघुराज शर्मा	श्री फूल सिंह चौहान	श्री भगवान दास	श्री राज पाल	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1965		श्री रूप चन्द	श्री हरकिशन सिंह	मा० रघुराज शर्मा	श्री फूल सिंह चौहान	श्री भगवान दास			
1966	12.01.1966	श्री लेख राज	श्री अमर नाथ	श्री हरकिशन सिंह	श्री रघुराज शर्मा	श्री भगवान दास	श्री राज पाल	श्री दीप चन्द	श्री फूल सिंह
1967	26.11.1967			श्री रघुराज		श्री भगवान दास			
1968	17.05.1968	श्री लेखराज भगत	श्री सूरज मान	श्री हरकिशन सिंह	श्री रघुराज शर्मा	श्री राज पाल	श्री संतोष कुमार		श्री मंगल देव
1969	24.07.1969	श्री रामचन्द्र वर्मा	सू. चुन्नी लाल वाही	श्री रघुराज शर्मा	श्री देवदत्त	श्री भगवानदास	श्री अजीत कुमार		
			श्री सूरज मान						
1970		श्री राम चन्द्र	सू० चुन्नी लाल वाही	श्री रघुराज शर्मा		श्री भगवान दास			
	16.09.1970	श्री शिवनरायण सिंह	मा० देवी सिंह	श्री हरकिशन सिंह	श्री रघुराज	श्री राम दास	श्री नवाब सिंह		श्री मंगलदेव
					श्री अजीत कुमार		श्री सत्यपाल सिंह		
1971		श्री शिवनरायण सिंह	मा० देवी सिंह	श्री हरकिशन सिंह	श्री रघुराज	श्री राम दास	श्री नवाब सिंह		श्री मंगलदेव
					श्री अजीत कुमार		श्री सत्यपाल सिंह		
1972	26.05.1972	श्री लेख राज	सू० चुन्नी लाल	श्री हरकिशन सिंह	श्री भगवानदास	श्री राम दास	श्री कृष्ण लाल	श्री रघुराज शर्मा	श्री मंगलदेव
			मा० देवी सिंह		श्री संतोष कुमार				
1973		श्री लेख राज	सू० चुन्नी लाल	श्री हरकिशन सिंह	श्री भगवानदास	श्री राम दास	श्री कृष्ण लाल	श्री रघुराज शर्मा	श्री मंगलदेव
			मा० देवी सिंह		श्री संतोष कुमार				
1974		श्री लेख राज	सू० चुन्नी लाल	श्री हरकिशन सिंह	श्री भगवानदास	श्री राम दास	श्री कृष्ण लाल	श्री रघुराज शर्मा	श्री मंगलदेव
			मा० देवी सिंह		श्री संतोष कुमार				
1975	16.06.1975	श्री हरीश चन्द	श्री सूरजमान	श्री रघुराज	श्री भगवानदास	श्री राम दास	श्री सत्यपाल सिंह	श्री सूरज मान	श्री मंगलदेव
			श्री चुन्नीलाल वाही						
1976	26.051976	श्री देवी सिंह	श्री देवदत्त	श्री सूरजमान	श्री हरकिशन सिंह	श्री अजीत कुमार	श्री रामदास	श्री दलीप सिंह	
			श्री राम चन्द्र		श्री रघुराज				
1977	31.07.1977	श्री पृथ्वी राज	श्री चुन्नी लाल	श्री राजेन्द्र प्रसाद	श्री सूरज भान	श्री अजीत सिंह	श्री राम दास	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
			श्री राम चन्द्र		श्री भगवान दास				
1978	26.07.2978	सू० चुन्नी लाल	म० देवी सिंह	श्री रघुराज शास्त्री	श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी	श्री अजीत सिंह	श्री राम दास	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
			श्री लेख राज						

1979	09.08.1979	श्री राम चन्द्र	श्री लेख राज श्री छैलूराम	श्री हरकिशन सिंह	श्री जगदीश वर्मा	श्री अजीत सिंह	श्री राम दास	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1980	19.09.1980	श्री राम चन्द्र	श्री लेख राज	श्री रघुराज शास्त्री	श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी	श्री अजीत सिंह	श्री राम दास	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1981	18.09.1981	श्री देवी सिंह	श्री सूरज भान श्री रूप चन्द	श्री अजीत सिंह	श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी श्री रघुराज शास्त्री	श्री सूरज भान	श्री रामदास	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1982	10.10.1982	श्री पृथ्वी राज	श्री लेख राज	श्री भगवान दास	श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी श्री हरकिशन सिंह	श्री अजीत सिंह	श्री रतन लाल	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1983	26.06.2983	श्री पृथ्वी राज	श्री देवी सिंह श्री लेख राज	श्री भगवान दास	श्री रतन लाल	श्री अजीत सिंह	श्री भीष्म गोस्वामी	श्री दलीप सिंह	श्री मंगलदेव
1984	23.09.1984	श्री युधिष्ठिर वर्मा	श्री ओम मित्र	श्री हरकिशन सिंह	श्री सूरज भान गुप्ता	श्री अजीत सिंह	श्री सत्य पाल	श्री रघुराज	श्री मंगलदेव
1985									
1986	04.05.1986	श्री पृथ्वी राज	श्री हरकिशन सिंह			श्री भगवानदास			
1987	26.04.1987	श्री युधिष्ठिर वर्मा	श्री ओममित्र	श्री हरकिशन सिंह	श्री भगवानदास	श्री सूरजभान गुप्ता	श्री सत्यपाल	श्री राम दास	
1988									
1989				श्री हरकिशन सिंह					
1990				श्री हरकिशन सिंह					
1991		श्री सूरज भान		श्री रघुराज शर्मा		श्री भगवानदास			
1992		श्री सूरज भान		श्री हरकिशन सिंह	श्री रघुराज शर्मा	श्री भगवानदास			
1993		डा० जयदेव वर्मा	श्री जगमाल सिंह	श्री भगवानदास	डा० रोहतास तवँर	श्री रघुराज शर्मा			
1994	10.04.1994	श्री जगमाल सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री धमेन्द्र सिंह	डा० भागमल शर्मा	श्री राम किशन	श्री देवदत्त शर्मा		
1995		श्री जगमाल सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री धमेन्द्र सिंह		श्री रामकिशन			
1996		श्री जगमाल सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री धमेन्द्र सिंह	श्रीमती लीला देवी	श्री रामकिशन			
1997	11.04.1997	डा० जयदेव वर्मा	श्री सूरज भान	श्री भगवानदास	डा० रोहताश तँवर	श्री राम किशन	श्री देवदत्त शर्मा	श्री सूरज भान	
1998	12.07.1997	डा० जयदेव वर्मा	श्री सूरज भान	श्री भगवानदास	डा० रोहताश तँवर	श्री राम किशन	श्री देवदत्त शर्मा	श्री सूरज भान	
1999	13.06.1999	श्री जगमाल सिंह	श्री रामकिशन सिंह श्री चरणसिंह ठेकेदार	श्री भगवानदास	श्री ओमप्रकाश प्रेमी मा० बालकिशन	श्री राजपाल सिंह	डा० रोहताश तँवर	श्री देवदत्त शर्मा	
2000	16.04.2000	श्री जगमाल सिंह	श्री भगवानदास	डा० जयदेव वर्मा		श्री राजपाल सिंह		श्री ओम प्रकाश प्रेमी	
2001	15.04.2001	श्री सूरजभान गुप्ता		डा० जयदेव वर्मा		श्री प्रतिपाल सिंह		डा० अजय आर्य	
2002	24.04.2002	श्री जगमाल सिंह	श्री राजेश प्रसाद शर्मा श्री रामकिशन सिंह	श्री भगवान दास	डा० जयदेव वर्मा	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री देवदत्त शर्मा	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2003	27.04.2003	श्री रामकिशन सिंह	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	डा० जयदेव वर्मा	श्री भगवान दास	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री देवदत्त शर्मा	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2004	25.04.2004	डा० जयदेव वर्मा	श्री रामकिशन सिंह श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री भगवानदास	श्री मनोज आर्य	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री देवदत्त शर्मा	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2005	01.05.2005	डा० जयदेव वर्मा	श्री भगवानदास	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री मनोज आर्य	श्री प्रतिपाल सिंह	डा० देवानन्द	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2006	23.04.2006	डा० जयदेव वर्मा	श्री भगवानदास	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री मनोज आर्य	श्री प्रतिपाल सिंह	डा० देवानन्द	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2007	29.04.2007	श्री भगवानदास	डा० जयदेव वर्मा	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री संदीपकुमार	श्री प्रदीप	डा० अनूप पांडेय	श्री ओमप्रकाश प्रेमी	
2008	11.05.2008	श्री जगमाल सिंह	मा० ईश्वर सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री देवदत्त	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री सत्यपाल सिंह	श्री मनोज आर्य	
2009	03.05.2009	श्री भगवानदास	मा० ईश्वर सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री सत्यपाल सिंह	श्री देवदत्त शर्मा	
2010	09.05.2010	श्री भगवानदास	मा० ईश्वर सिंह श्री राजपाल सिंह	डा० जयदेव वर्मा	श्री राजेश प्रसाद शर्मा	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री सत्यपाल सिंह		
2011	01.05.2011	डा० जयदेव वर्मा	श्री देवदत्त शर्मा	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री राजेश प्रसाद शर्मा श्री ओम प्रकाश प्रेमी	श्री राजपाल सिंह	श्री सत्यपाल सिंह		
2012		डा० जयदेव वर्मा	श्री देवदत्त शर्मा	श्री प्रतिपाल सिंह	श्री राजेश प्रसाद शर्मा श्री ओम प्रकाश प्रेमी	श्री राजपाल सिंह	श्री सत्यपाल सिंह		

श्री अविनाश तँवर
सपुत्र श्री राजपाल सिंह
पौत्र स्व० श्री हरीश चन्द्र जी

उपनयन संस्कार

ओ३म्

आर्यसमाज नांगलराया

भवन निर्माण 18-8-1996

दानदाताओं की सूची

श्री महेन्द्र सिंह वर्मा	प्रीति विहार	3,50,000 रु
उमाशंकर	नांगलराया	63,100 "
राजेन्द्र कुमार तँवर —	"	57207 "
डा. वीरेंद्र वर्मा + मेधावी तँवर		
श्रीमती अनिता चौहान	रवामपुर	52106 "
श्री सुभाष कपूर	A-3/28 जनकपुरी	51,000 "
महाशय धर्मपाल	M.D.H किर्ती नगर	42000 "
हर्षिता आर्गेनिक्स लि. भीकाजीकामाजी प्लेस		31,000 "
श्री गणपतराय सिंघल	मायापुरी	26,000 "
सूरजभान गुप्ता-रामकुमार	1656 नांगलराया	25453 "
लाला ज्ञानचंद जिंदल	1603 "	25,100 "
श्री राजेन्द्र गुप्ता सुपुत्र श्री शिवचरण गुप्ता	1413 "	25,100 "
अशोक कुमार शर्मा सुपुत्र श्री विष्णु दत्त शर्मा	नांगलराया	25000 "
गिरिराज हास्पिटल	बुढ़ेला गाँव	21100 "
चौ. हरबंश सिंह	इन्द्रपुरी	21,000 "
श्री स्वर्ण कुमार चौधरी	मायापुरी	21,000 "
राजबीर सिंह नेताजी	नांगलराया	20,000 "
श्रीमती लीलादेवी भगवानदास	"	19,001 "
डा. मालती व प्रद्युम्न राजपूत विधायक	"	16,200 "
श्री करण सिंह तँवर विधायक	नारायणा	15,100 "
सूरज भान गुप्ता ज्वूलर्स	नांगलराया	12,400 "
डा. जयदेव वर्मा + कमला वर्मा	"	12,111 "
श्री देवदत्त शर्मा + रविदत्त शर्मा	"	11101 "
प्रितपाल सिंह	"	11,001 "
राजपाल सिंह	"	12501 "
बधवा	मायापुरी	11,000 "
अनिल मित्तर	ब्रारस्क्वेयर	11,000 "
देवराज गुप्ता-प्रदीप गुप्ता	नांगलराया	11,000 "
नरेन्द्र कुमार चिन्टू	नारायणा विहार	11,000 "
लाला चेतन स्वरूप	नांगलराया	10200 "
कर्नल चन्दन	सत्य निकेतन	10000 "
मैसर्स M.S.D. ओवरसीज	जनकपुरी	10,000 "
श्री रामबहादुर सिंह	हस्तिनगर	10,000 "
सत्यपाल-सुरेश कैपीटल इन्सुलेटर	नांगलराया	9,201 "
कुमार टेन्ट हाउस	सागरपुर	8,101 "
श्री सुभाष बधवा	मायापुरी	8,100 रु
रमेश कुमार तँवर	नांगलराया	6,801 "
राकेश कुमार	नारायणा	6,750 "
राजकुमार मयूर ज्वैलर्स	लाजवन्ती	6600 "
चौ. अमर सिंह	नांगलराया	6302 "
श्री लक्ष्मीनारायण (हरियाणा वाले)	बजार	6,201 "
प्रमोद चटकारे	"	6000 "
जगमाल सिंह यादव	नांगलराया	5,111 "
अशोक कुमार गौड़	ब्रह्मपुरी	5,100 "
अमर चन्द गुलाटी	जनकपुरी	5,100 "
लाला बाबू लाल	नांगलराया बजार	5,100 "
श्री बी.डी. जैन	" "	5,100 "
स. देवेन्द्र सिंह	मायापुरी	5,100 "
श्री हरिमोदी	लाजवन्ती	5,100 "
जगदीश	1423 नांगलराया	5100 "
लाला लक्ष्मीनारायण (राजस्थान वाले)	बजार	5100 "
श्री लालचन्द शर्मा	हरिनगर	5,100 "
महाबाला जी टिम्बर मर्चेन्ट	सागरपुर	5,100 "
श्री ओमप्रकाश मिड्ढा	जनकपुरी	5,100 "
प्लास्टोक्राफ्ट इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन	मायापुरी	5,100 "
श्री सूरजभान गुप्ता (राजधानी स्टोर)	नांगलराया	5100 "
श्री सुल्तान सिंह	मायापुरी	5100 "
देवकुमार तवर	1302 नांगलराया	5100 "
विश्वनाथ सेरवरी	मायापुरी	5100 "
विष्णु भगवान (लाहौर डेरी)	नांगलराया	5100 "
वीरसैन	नारायणा	5,100 "
अशोक कुमार तँवर	1303 नांगलराया	5100 "
मैसर्स वर्मा एण्ड कं.	नांगलराया	5100 "
मैसर्स क्वायल कं. प्रा. लि.	नारायणा	5000 "
श्री प्रहलाद सिंह	नांगलराय	5,000 "
निरंजन सिंह	नांगलराया	4101 "
राजकुमार सूर्यवंशी	"	3351 "
रामदास आर्य	मोहन नगर	3303 "
लाला सुरजा रवल वाले	नांगलराया	3202 "
श्री रोहताश तँवर	"	3101 "
सुभाष चौहान	लाजवन्ती	3100 "
पं. शिव कुमार शर्मा	नांगलराया	3100 "
मा. सत्यपाल सिंह	"	3100 "
श्री हरचन्द सिंह सुपुत्र श्री हरकिशन सिंह	"	2606 "
मा. गजराज सिंह	"	2600 "
श्री सुरेन्द्र कुमार	349-B "	2600 "
वीरेन्द्र कुमार वर्मा S/O स्व श्री देवदत्त तहसीलदार		2502 "
डा. विनोद कुमार	नांगलराया	2,501 रु
श्री बाँके लाल	सदर बजार दिल्ली छावनी	2500 "
रणबीर सिंह	1317 नांगलराया	2,450 "
रामकिशन सिंह	1303 "	2,304 "
मा. ईश्वर सिंह	"	2,303 "
श्री चरण सिंह ठेकेदार	नांगलराया	3000 "
डा. प्रमोद कुमार-डा. प्रीतम सिंह	"	2,200 "
श्रीमती सुमेधा गिलानी	पश्चिम विहार	2,200 "
श्री नत्थू	"	2,151 "
युधिष्ठिर वर्मा	नांगलराया	2111 "
अशोक शर्मा	1318 "	2,100 "
देवेन्द्र सिंह	मायापुरी	2,100 "
हरबिन्दर सिंह	मोहन नगर	2,100 "
के. सी. मैटल स्टोर	मायापुरी	2,100 "
श्री के. एल. गोयल	नांगलराया	2,100 "
डा. कुमार डेन्टल सर्जन	" बजार	2,100 "
श्री लक्ष्मण जरीवाला	मायापुरी	2100 "
स. परमजीत सिंह संधू	"	2,100 "
श्री प्रकाश शर्मा जांगिड़	नारायणा	2,100 "
रामकिशन	1492 नांगलराया	2,100 "
रोहताश सिंह	336 A "	2100 "
रमन वायर इण्डस्ट्रीज	वजीरपुर	2100 रु
श्री रामगोपाल जिन्दल	नांगलराया	2100 "
राकेश छाबड़ा	नांगलराया	2100 "
सुरेन्द्र कुमार	"	2100 "
सिंगल वायर इण्डस्ट्रीज	वजीरपुर	2100 "
सत्कार फाइनैंस कार्पो.	करोलबाग	2100 "
श्री सुनील वर्मा (प्रहलाद)	नांगलराया	2100 "
चौ. भगवान दास ग्रेट प्रिंटर्स	मोहन नगर	2100 "
श्री रतन सिंह	नांगलराया	1975 "
अरुण कुमार (पालू)	1056 नांगलराया	1851 "
रामपाल सिंह तँवर	"	1640 "
मा. सत्य नारायण	1657 "	1602 "
चौ. भूप सिंह तँवर	"	1601 "
श्री सुरेन्द्र सिंह	मोहन नगर	1601 "
किशोरीलाल चानणा	नांगलराया	1601 "
श्रीमती ज्योति-नरेश नागपाल	"	1511 "
कर्नल सुरेन्द्र सिंह-नरेन्द्र तँवर	"	1502 "
श्रीमती कमलेश शर्मा	D-2/3 जनकपुरी	1501 "
श्री अशोक कुमार (पुत्र आशु की स्मृति में)	1547 नांगलराया	1500 "
प्रेम सिंह	अशोक विहार	1500 "
ध्रुव सुपुत्र डा. भागमल शर्मा	नांगलराया	1400 "

भानु प्रकाश सुरभ कुमार [illegible]
भूषण चौधरी नागलराया 1350
गुरदयाल ओमप्रकाश 1307
श्रीमती प्रेमकी धर्मपत्नी स्व बालकिशन तँवर सेक्टर 4 गुड़गाँव 1253
श्री हरिचन्द्र श्रीमती सरूपी देवी नागलराया 1212
धर्मेन्द्र सिंह तँवर 1302 1201
श्रीमती राजरानी धर्मपत्नी श्री मानसिंह भूपसिंह बस्ती 1152
श्री भानु प्रताप यादव नागलराया 1151
अशोक गोड 139 1111
श्रीमती कमलेश वर्मा 311 A 1111
मा हरी सिंह टटीरी वाले नागलराया 1102
लाला विरधी चंद 519 1101
श्री जल सिंह खामपुर 1101
जिले सिंह 1591 नागलराया 1101
महिला मण्डल शिव मन्दिर नागलराया 1101
श्री महावीर सिंह चौहान 344 1101
मुन्शी राम नागलराया बजार 1101
ओम प्रकाश सुपुत्र श्री अतर सिंह नागलराया 1101
रतनलाल प्रजापति नसीरपुर 1101
राधाकृष्ण-रमेश चन्द्र लोहे वाले नागलराया बजार 1101
सिंघानिया स्टोर 400 1101
श्री सुरेन्द्र पाल तामर 638 नागलराया 1101
उमाव सिंह विजय कुमार 422 1101
सुरेन्द्र सिंह वशिष्ट पार्क 1101
अतरसिंह - सतीश तँवर नागलराया 1101
चौ अमर सिंह प्रधान टटीरी 1101
श्री अमरसिंह सुपुत्र बाबू रूपचंद जी नागलराया 1100
अशोक नारग 1100
अजीत सिंह यादव 1100
बसन्त कुमार 1266 1100
बब्बल जी 1267 1100
बाब आप्टीकल्स जेलरोड 1100
श्री भँवर सिंह सुपुत्र स्व पलटू सिंह नागलराया 1100
स बलबीर सिंह मायापुरी 1100
श्री ब्रजपाल सिंह 312 नागलराया 1100
बनारसीदास गुप्ता नागलराया 1100
चौ चन्द्रभान विजय होटल 1100
ला छेलूराम 1100
श्री धर्मपाल ठाकुर 1100
धर्मपाल सुपुत्र श्री लच्छू सिंह तँवर 1100
देवानन्द यादव 1100
मैसर्स फैशन हरपोरियम 1100

गगे ब्रदर्स परवा रोड नागलराया 1100
चौ हरी सिंह लक्ष्मी डेरी नागलराया 1100
श्री जयदेव शर्मा 1100
मैसर्स कल्याण बेकरी 1100
श्री कृष्ण कुमार 1247 1100
कुमार दीप नागलराया 1100
श्री कैलाशचंद खण्डेलवाल लाजवंती गार्डन 1100
लक्ष्मी नारायण किरयाना स्टोर नागलराया 1100
लक्ष्मी टिम्बर कीर्तिनगर 1100
ठा करणसिंह तंवर नारायणा 1100
मोगा इन्टरप्राइजिज 1100
श्री मन्नू पाहवा पीरागढी 1100
महावीर सिंह चौहान लाजवती गार्डन 1100
मुकेश कुमार सुपुत्र श्री गोपालसिंह वर्मा नागलराया 1100
मागेराम 1386 1100
मगतराम शर्मा जांगिड पंजाबी बाग 1100
नाहर सिंह विकासपुरी 1100
नेतराम नम्बरदार नागलराया 1100
नरेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह 1291 1100
नरेश तँवर 1595 1100
ओम प्रकाश पँवार 335 लाजवन्ती गार्डन 1100
श्री फूलकुमार 346 नागलराया 1100
प्यारे लाल वर्मा 1261 1100
चौ प्रतापसिंह रिंग रोड नरायणा 1100
श्री प्रेम नारायण सुपुत्र श्री मदन गोपाल नागलराया 1100
प्रकाशचन्द शर्मा रामचंद्र बस्ती नागलराया 1100
प्रेमसिंह सूर्यवंशी नागलराया 1100
ओम प्रकाश 626 1100
प्रदीप तँवर नारायणा 1100
राकेश कुमार सुपुत्र चौ आत्माराम खामपुर 1100
राजाराम पँवार लाजवन्ती गार्डन 1100
राम सरूप यादव नागलराया 1100
राजेश कुमार 10808 1100
राम अवतार 1293 1100
रामकिशन सुपुत्र स्व रामदास तेडा वाले 1100
राजवीर सिंह सूर्यवंशी 58 1100
राजकुमार सुपुत्र चौ राम चन्द्र जी 1294 नागलराया 1100
राजकुमार श्री रामभेहर 1078 1100
रूपचन्द यादव 1100
मैसर्स रूचि इण्डस्ट्रीज 310 1100
श्री रामशरण नम्बरदार 1100
लाला राधे जलेबी वाले नागलराया बाजार 1100

श्री रघुवीर सिंह यादव सागरपुर 1100
सुनील सुपुत्र श्री भंवरसिंह (कन्नू) नागलराया 1100
सुनील कुमार 540 1100
प सत्यदेव शर्मा भूप सिंह बस्ती 1100
श्री सजय कुमार श्रीमती मायादेवी 1273 नागलराया 1100
सत्य प्रकाश तँवर 1255 1100
मेजर जनरल श्रीदत्त शर्मा 02/9 जनकपुरी 1100
स्वदेशी इंजीनियर वर्क्स मायापुरी 1100
श्री सुरेन्द्र तँवर नरायणा 1100
तारा सिंह 1532 नागलराया 1100
विक्रम आटो वर्क्स नागलराया 1100
श्री विजय कुमार 1598 1100
लक्ष्मी चन्द नागलराया 1100
रणसिंह सुपुत्र श्री बनवारी लाल मोहननगर 1100
राजेश प्रसाद शर्मा साधनगर 1100
राम सरूप यादव लाजवन्ती गार्डन 1100

आर्यसमाज के सदस्य बनें तथा भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूक बनाने के लिये अपने बच्चों को भी सदस्य बनायें और आर्यसमाज में भेजें।

आर्यसमाज में होम्योपैथिक औषधालय के उद्घाटन अवसर पर तत्कालीन दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व निगम सदस्या डा० मीना ठाकुर। बीच में बैठी हैं विधायक श्रीमती किरण चौधरी की सुपुत्री कु० श्रुति चौधरी

होम्योपैथिक औषधालय के उद्घाटन समय बोलते हुए डा० मीना ठाकुर, निदेशालय के सह निदेशक डा० वर्मा, श्री भगवानदास व श्री धर्मपाल आर्य

होम्योपैथिक औषधालय के उद्घाटन समय कविता पाठ करते हुए डॉ० रोहतास तँवर। बैठे हुए (बायें से) डा० वर्मा, श्री भगवान दास श्री धर्मपाल आर्य व श्री मदन मोहन सलूजा

उद्घाटन अवसर पर डॉ मीना ठाकुर का सम्मान करते हुए श्री धर्मपाल आर्य। मध्य मे कु० श्रुति चौधरी

1982 में बाल भाषण प्रतियोगिता के समय बैठे हुए (बाँये से) कु० हरभजन कौर साहनी, श्री हरकिशन शास्त्री, श्री ओमवीर शास्त्री व अन्य।

SARASWATI AANCHAL SCHOOL

ADMISSION OPEN FOR PRIMARY & PRE-PRIMARY CLASSES

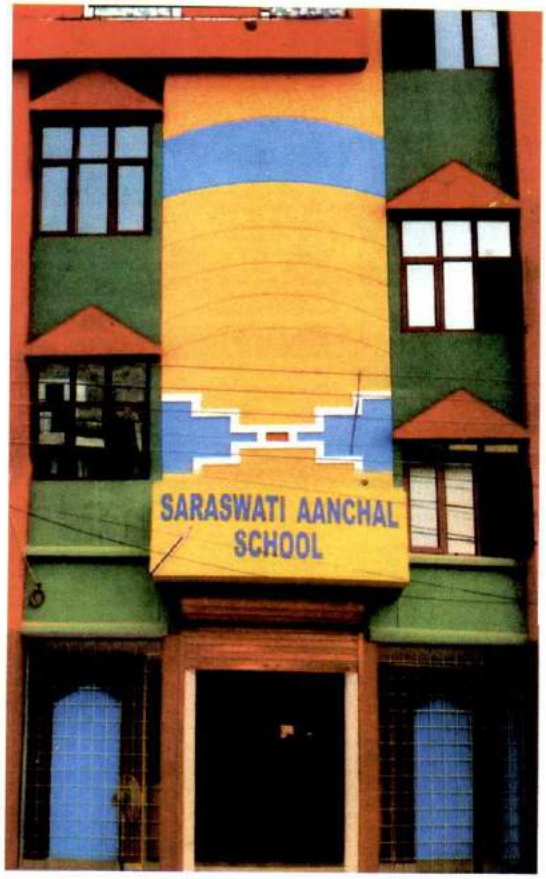

SALIENT FEATURES

- CHILD FRIENDLY CURRICULUM TO ENHANCE JOYFUL LEARNING AND SELF EXPRESSION.
- PRE-SCHOOL AND PRIMARY WITH PLAYWAY TECHNIQUES AND ASSIGNMENT BASED EDUCATION SYSTEM.
- ALL ROUND DEVELOPMENT OF CHILD'S PERSONALITY THROUGH A COMBINATION OF MODERN EDUCATION SYSTEM AND HIGH

SARASWATI AANCHAL SCHOOL (SAGARPUR)

RZ-16B/3, STREET NO.2 MAIN SAGARPUR, N. DELHI-46

Ph. 28526234, 9212326150

SARASWATI AANCHAL SCHOOL (RECOGNIZED)

1586-NANGAL RAYA, N. DELHI-110046 Ph. 28521552, 28520722

MY FIRST SCHOOL

D-1/1, JANAKPURI, N. DELHI-110058 Ph. 28525218, 9212326151

हरीश इलेक्ट्रोनिक्स

की तरफ से सभी क्षेत्रवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएँ

Whirlpool
HCL
SAMSUNG
SANSUI
LG
LUMINOUS
Inverter • UPS • Battery
NOKIA
Connecting People
VIDEOCON
Su-Kam
powered by innovation

टी.वी. फ्रिज, वाशिंग मशीन, डी.वी.डी., होम थियेटर, माईक्रोवेव, कम्प्यूटर, मोबाइल, इनवर्टर, एल.सी.डी

नकद व आसान किस्तों में खरीदें

पुराने टी.वी., फ्रिज, मशीन देकर नए ले जाएँ

हरीश इलेक्ट्रोनिक्स

WZ-1122, नांगल राय (नज़दीक सहयोगी पार्क)
फोन– 28520178, **7503227622**, 921319164

आर्य समाज नांगल राया
स्थापित
1940
VISHWAS
MEMBER: NSE, BSE, MCX
H.O. 310, NANGAL RAYA, DELHI CANT

यह कुआं
दानवीर चौ. खेमनराम जी निवासी
सब्जी मंडी, दिल्ली ने
२५००) रु. दान देकर बनवाया।
संवत् २००० वि.

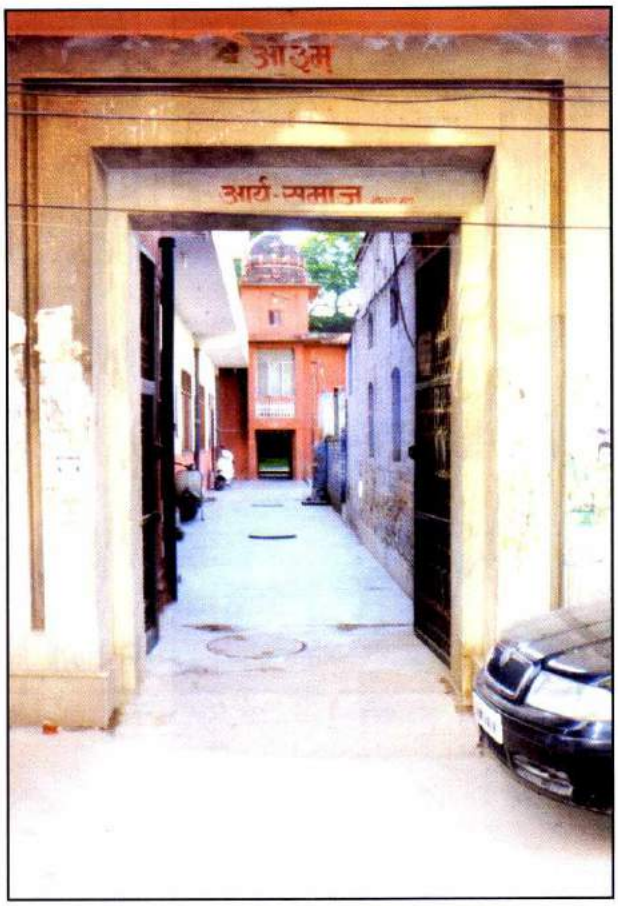

चौ॰ गिरधारी लाल द्वार
यह द्वार श्री भूप सिंह जी तँवर
(सदस्य नगर निगम दिल्ली) श्री भँवर सिंह जी तँवर
श्री अमर सिंह जी तँवर निवासी नाँगलराया दिल्ली
ने अपने स्वर्गीय पिता जी की पुण्य स्मृति में
५५१) रु॰ दान देकर बनवाया।
संवत् २०३०